श्री भक्तामर जी

बीजाक्षर महामण्डल विधान

रचयिता

बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रकाशक

श्री जैनोदय विद्या समूह

कृति	:	श्री भक्तामर जी बीजाक्षर महामण्डल विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम, 2019
प्रसंग	:	गुरु पूर्णिमा के अवसर पर 21वाँ पावन वर्षायोग 2019
लागत मूल्य	:	100/-
प्राप्ति स्थान	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना संपर्क-94251-28817
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

सुव्रतसागर गुरु भक्त परिवार

सकल दिगम्बर जैन समाज

चंदेरी, जिला अशोकनगर (म.प्र.)

अपनी बात

भक्तामर स्तोत्र श्री जिनेन्द्र भक्ति का श्रेष्ठतम काव्य है। द्वादशांग का सार जिसमें भरा है ऐसा सागर जिसमें अवगाहन करने से दिव्य रत्नों की प्राप्ति होती है। एक-एक काव्य में भक्ति एवं अध्यात्म का रस भरा है। प्रत्येक काव्य एक मंत्र काव्य है क्योंकि प्रत्येक काव्य में मंत्र (म्+न्+त्+र्) ये चार अक्षर अवश्य मिलते हैं इसलिए इस स्तोत्र को मंत्र स्तोत्र भी कहा जाता है। जिस प्रकार णमोकार महामंत्र में प्रत्येक बीजाक्षर का अपना विशिष्ट महत्व है उसी प्रकार भक्तामर स्तोत्र में हर एक बीजाक्षर मंत्र हैं। परमपूज्य मानतुंग महाराज ने इन बीजाक्षरों को स्तोत्र माला में इस प्रकार गूँथा है जैसे एक कुशल शिल्पी एक सुन्दर हार में रत्नों का सुन्दरतम उपयोग करता है और वह हार सबको अपनी ओर आकर्षित करता है। इसी भक्ति से आकर्षित होकर मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज ने प्रत्येक बीज मंत्र रूप अक्षरों को अपनी भक्ति के माध्यम से छन्द-बद्ध करके इस महामण्डल विधान की रचना की है जो कि अपने आप में अनूठी भक्तिमय रचना है। विशेष बात यह है कि प्रत्येक अर्घ्य के साथ आदिनाथ भगवान की जाप रूप में भी आराधना की गई है।

भक्त को जन्म-जरा और मरण से मुक्ति दिलाने वाला, लोकप्रिय और प्रभावशाली स्तोत्र है जिसकी प्रभावना पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण चारों ओर है। इस स्तोत्र को बिना किसी भेद-भाव से दिगम्बर और श्वेताम्बर परम्परा में श्रद्धापूर्वक पढ़ा जाता है क्योंकि यह स्तोत्र स्वयं में सिद्ध है और हर कार्य में सिद्धि दिलाने वाला है। श्रद्धा के साथ भक्ति की भावना से 48 मण्डल (माँड़ने) बनाकर अथवा एक मण्डल के साथ इस स्तोत्र की महा-आराधना करने से सभी इष्ट कार्य की सिद्धि होती है। इस स्तोत्र की आराधना में आत्मकल्याण के साथ विश्वशान्ति की भावना निहित होती है और सभी तरह के रोग-शोकादि दूर होते हैं तथा परमार्थ सुख की प्राप्ति होती है। इस आराधना से अभी तक बहुत से लोगों ने अपनी मनोकामना और मनोभावना पूर्ण की है आप भी करें। सभी जीवों के कल्याण की भावना के साथ........

बा.ब्र. संजय, मुरैना

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहन्ताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोये सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥1॥ तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥2॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥3॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥4॥ तेरा...

मंगलाचरण

मंगलं भगवान्नर्हन् मंगलं सुसिद्धेश्वरः,
मंगलं श्रमणाचार्यो मंगलं साधुपाठकौ।
मंगलं जिननामानि मंगलं नवदेवता,
मंगलं शाश्वतमंत्रं मंगलं जिनशासनं॥

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥1॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधु के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥2॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥3॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥4॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग-भूप॥5॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥6॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥7॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल॥8॥

तुम पद-पंकज पूजतैं , विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय ।।9 ।।
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ।।10 ।।
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ।।11 ।।
पतित बहुत पावन किए, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव ।।12 ।।
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव ।।13 ।।
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव ।।14 ।।
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ।।15 ।।
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ।।16 ।।
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार ।।17 ।।
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान ।।18 ।।
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ।।19 ।।

जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार ॥20॥

वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश ॥21॥

चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय ॥22॥

मंगलपाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान् ॥23॥

मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव ॥24॥

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय ॥25॥

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म ॥26॥

या विधि मंगल करन तें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत ॥27॥

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय।

नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्त मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं,

केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्त लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू

लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहन्त सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध

सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,

केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्याएत्पंच-नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते॥

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥

अपराजित-मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु , प्रथमं मंगलं मतः॥

येसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होईमंगलम्॥

अर्हं-मित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥

कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं॥

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनकल्याणक महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिन इष्ट(नाथ) महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिननाम महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्र नामेभ्यो अर्घ्यं...।

तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी विरचित तत्त्वार्थसूत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भक्तामर स्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे मुनिराज महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा-प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद्-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥ 1॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय॥ 2॥
स्वस्त्युच् छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद् गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥ 3॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।

आलम्बनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥ 4॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य यमेक येव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्र मह मेक मना जुहोमि॥ 5॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः॥
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः॥
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः॥
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः॥
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः॥
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः॥

(पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय शुद्ध बोधाः।
दिव्यावधिज्ञान बल प्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 1॥

कोष्ठस्थ धान्योप-ममेक बीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 3॥

प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक बुद्धाः दशसर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग निमित्त विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 4॥

जंघानल श्रेणी फलांबु तंतु, प्रसून बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽगण स्वैर विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 5॥

अणिम्नि दक्षा कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो वपु र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 6॥

सकाम रूपित्व वशित्व मैश्यं, प्राकाम्य मन्तर्द्धि मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 7॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर परा क्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 8॥

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी-र्विषाविषाः दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल विड्जल्ल मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 9॥

क्षीरं स्त्रवंतोऽत्र घृतं स्त्रवंतो, मधु स्त्रवंतो ऽप्य मृतं स्त्रवंतः।
अक्षीण संवास महान साश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 10॥

(इति परमर्षिस्वस्ति मंगल विधानं परि पुष्पांजलिं...)

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आंसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के कांटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, पीछे से चाकू घौंपें॥

बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥3॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानंद हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति ॥4 ॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे ॥5 ॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें ॥6 ॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो ॥7 ॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी ॥8 ॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे ॥9 ॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ्य (सखी)

कर नष्ट अष्ट कर्मों को, तुमने निज नगर वसाया।
तब मुक्तिवधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घ्यार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य (लय-चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।

हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रीआदिनाथ स्वामी अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (मालती)

जब-जब शान्ति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥

जैसे ही शान्ति विधान रचाए, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।

हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य

(शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्‌भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य

(दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य

(शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ हूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सिद्धभक्ति (प्राकृत)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥
मूलोत्तर पयडीणं, बन्धोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडायरा सव्वे॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सदा सव्व सिद्धाणं॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवग्गहणं।
अगुरुलघुमव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बेहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्यः, ओम् नमः सिद्धेभ्यः।-२

(विष्णु)

श्री जिनशासन मोक्षमार्ग में, है अध्यात्म प्रथम।
जिसे प्राप्त करने का साधन, भज लो परमातम॥
परम पूज्य पाँचों परमेष्ठी, नव देवा साँचे।
भक्तामर को करके नमोऽस्तु, श्रद्धालु नाँचें॥1॥ओम्...
कर्मोदय से मानतुंग मुनि, जब बन्धन पाए।
तो शुद्धातम ना ध्याकर के, भक्तामर गाए॥
सो अड़तालीस ताले टूटे, जेल मुक्ति पाए।
तब से अब तक भक्तामर के, भक्त भजन गाए॥2॥ओम्...
सभी-सभी स्तोत्रों में यह, गौरवशाली है।
भव दुख हर्त्ता संकटमोचक, महिमाशाली है॥
छन्द-छन्द के शब्द-शब्द के, अक्षर-अक्षर के।
अतिशयकारी मंत्र देख लो, आदि जिनेश्वर के॥3॥ओम्....
भक्ती श्रद्धा की यह अद्‌भुत, विधा रचाई है।
प्रातिहार्य के वैभव ने तो, ज्योति जलाई है॥
रोग कष्ट भय बन्धन हर्त्ता, हृदय पधारो जी।
नाभि-मरु सुत आदि जिनेश्वर, 'सुव्रत' तारो जी॥4॥ ओम्...
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
भक्तामर को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥5॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

विधान पूजन प्रारम्भ

स्थापना (दोहा)

आदिप्रभु की अर्चना, भक्तामर के साथ।
आज रचाएँ भक्त हम, अतः झुकाएँ माथ॥

(चौपाई)

मानतुंग से भाव नहीं हैं, चक्रि इन्द्र से द्रव्य नहीं हैं।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः पुकारें हाथ जोड़कर, शीश झुकाकर द्वन्द्व छोड़कर।
अंदर बाहर जय-जय गूँजे, हर प्रदेश बस तुमको पूजे॥
आह्वानन कर जोड़ें कड़ियाँ, प्रभु मिलन की आईं घड़ियाँ।
चौक रंगोली पुरा रहा मन, हृदय कमल ने दिया सिंहासन॥
विरह वेदना शीघ्र मिटा दो, या तो अपने पास बुला लो।
या अखियों से आओ भगवन्, साथ रहेंगे फिर तो हम-तुम॥

(सोरठा)

मिले मुक्ति का योग, शुद्ध आत्म उपयोग से।
अतः भक्ति का योग, करें शुद्ध त्रय योग से॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीवृषभनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

मानतुंग सी भक्ति नहीं है, चक्रि इन्द्र सी शक्ति नहीं है।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः भक्ति को बिना छिपाए, प्रासुक जल पूजन को लाए।
चरण चढ़ाएँ करके नमोऽस्तु, भक्ति शक्ति के योग्य बना तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

मानतुंग सी नहीं है समता, चक्रि इन्द्र सा सुख नहीं जमता।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः शक्ति को बिना छिपाए, वन्दन को चंदन हम लाए॥
चरण चढ़ाएँ करके नमोऽस्तु, संकट में समता सिखला तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

मानतुंग सा रूप नहीं है, चक्रि इन्द्र से भूप नहीं हैं।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः शक्ति को बिना छिपाए, उज्ज्वल तंदुल हम भी लाए।
पुंज चढ़ाएँ करके नमोऽस्तु, जिन दीक्षा के योग्य बना तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

मानतुंग सा त्याग नहीं है, चक्रि इन्द्र सा राग नहीं है।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः शक्ति को बिना छिपाए, पुष्प अंजली में हम लाए।
तुम्हें चढ़ाएँ करके नमोऽस्तु, कमलासन के योग्य बना तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

मानतुंग से योग नहीं हैं, चक्रि इन्द्र से भोग नहीं हैं।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः शक्ति को बिना छिपाए, ये नैवेद्य शुद्ध ले आए।
तुम्हें चढ़ाएँ करके नमोऽस्तु, वीतरागता रस से भर तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

मानतुंग सा ध्यान नहीं है, चक्रि इन्द्र का मान नहीं है।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥

अतः शक्ति को बिना छिपाए, पूजन को दीपक हम लाए।
करें आरती करके नमोऽस्तु, समवसरण के योग्य बना तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

मानतुंग सी नहीं साधना, चक्रि इन्द्र सी नहीं कामना।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः शक्ति को बिना छिपाए, धूप सुगंधित हम ले आए।
तुम्हें चढ़ाएँ करके नमोऽस्तु, तीर्थंकर के योग्य बना तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

मानतुंग सा रत्नत्रय ना, चक्रि इन्द्र से रत्न विजय ना।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः शक्ति को बिना छिपाए, प्रासुक श्रीफल हम भी लाए।
तुम्हें चढ़ाएँ करके नमोऽस्तु, मुक्ति वधू के योग्य बना तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

मानतुंग सा नहीं आचरण, चक्रि इन्द्र सा नहीं समर्पण।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः शक्ति को बिना छिपाए, अर्घ्य बनाकर हम भी लाए।
तुम्हें चढ़ाएँ करके नमोऽस्तु, सिद्धालय के योग्य बना तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दोज कृष्ण आषाढ़ को, सर्वारथ सुर त्याग।
गर्भ वसे मरुमात के, 'जिन' से है अनुराग॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नाभिराय के आँगने, जन्म लिए भगवान्।
चैत्र कृष्ण नवमीं हुई, जग में पूज्य महान्॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र श्याम नवमीं दिना, बने दिगम्बर नाथ।
मोह तजा आतम भजा, जिन्हें नमें नत माथ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण में, घातिकर्म सब नाश।
बने केवली लोक ये, नम्र हुआ बन दास॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण चौदस दिना, हरे कर्म का भार।
हिमगिरि से शिवपुर गए, हम पाए त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

मानतुंग सम हम भजें, आदिनाथ भगवान।
करके नमोऽस्तु हम करें, जयमाला गुणगान॥

(चौपाई)

जिनशासन की महिमा न्यारी, कह न सकेंगे हम संसारी।
अतः स्तुति का लिया सहारा, ये ही देगा मोक्ष किनारा॥1॥
जितने जो स्तोत्र भजन हैं, सब में प्रभु की भक्ति सृजन है।
लेकिन भक्तामर की पूजा, स्तोत्र पाठ सम कोई न दूजा॥2॥
छन्द-छन्द में काव्य-काव्य में, धर्म भरा है वाक्य-वाक्य में।

और कहें क्या गद्य-पद्य में, मंत्र भरे हैं शब्द-शब्द में॥3॥
इसीलिए तो भक्तामर का, चमत्कार अक्षर-अक्षर का।
अतिशय पाते हैं श्रद्धालु, निज वैभव पाते धर्मालु॥4॥
रोग-शोक भय बन्ध नशाएँ, ऋद्धि-सिद्धि धन सम्पद पाएँ।
अतः इष्ट है भक्तामर जी, उच्च श्रेष्ठ है भक्तामर जी॥5॥
शान्ति प्रदायक भक्तामर जी, भक्ति विधायक भक्तामर जी।
श्रद्धादायक भक्तामर जी, धर्म सहायक भक्तामर जी॥6॥
पाप विनाशक भक्तामर जी, पुण्य प्रकाशक भक्तामर जी।
आत्म रसिक है भक्तामर जी, स्वर्ग पथिक है भक्तामर जी॥7॥
पूज्य मंत्र है भक्तामर जी, मोक्ष तंत्र है भक्तामर जी।
अतिशयकारी भक्तामर जी, जय हो! जय हो! भक्तामर जी॥8॥

(सोरठा)

भक्तामर को पूज, जिन महिमा चिद्रूप हों।
गूँजें नमोऽस्तु गूँज, 'सुव्रत' शुद्ध स्वरूप हों॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...। (पुष्पांजलिं...)

===

प्रश्नों से परे
अनुत्तर हैं उन्हें
मेरे नमन।

1.

सर्वविघ्नविनाशक - जिनपदवन्दन

(वसन्ततिलका)

भक्तामर - प्रणत - मौलि - मणि -प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित - पाप - तमो - वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिन - पाद - युगं युगादा-
वालम्बनं भव - जले पततां जनानाम्॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'भक्' बीजाक्षर, भव हर ले आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'भक्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, तार रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महा करे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, ऋद्धि भरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, पाप हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'ण' बीजाक्षर, णमो णमो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ण' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तारक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'मौ' बीजाक्षर, मौत हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मौ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'लि' बीजाक्षर, लिखो पढ़ो आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'लि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मोह हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥
भक्तामर का 'णि' बीजाक्षर, निर्ग्रन्थी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥
भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रणम्य है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥
भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, भावो तो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥
भक्तामर का 'णा' बीजाक्षर, नायक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥
भक्तामर का 'मुद्' बीजाक्षर, मुक्त करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मुद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥
भक्तामर का 'यो' बीजाक्षर, योग करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तम हर्ता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥
भक्तामर का 'कं' बीजाक्षर, कम न रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥
भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दया करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥
भक्तामर का 'लि' बीजाक्षर, लिखे संत आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, ताप हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥

भक्तामर का 'पा' बीजाक्षर, पावन है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥

भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पवित्र है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तमस हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥

भक्तामर का 'मो' बीजाक्षर, मोक्ष दातृ आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विराग है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥

भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, ताक रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥

भक्तामर का 'नं' बीजाक्षर, नमन करे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥

भक्तामर का 'सम्' बीजाक्षर, सम्यक् है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥

भक्तामर का 'यक्' बीजाक्षर, यत्न करे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'यक्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥

भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रणीत है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥

भक्तामर का 'णम्' बीजाक्षर, णमोकार आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'णम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यम हर्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥

भक्तामर का 'जि' बीजाक्षर, जिनेन्द्र है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'जि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नामित है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥

भक्तामर का 'पा' बीजाक्षर, पालक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दमक रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥

भक्तामर का 'यु' बीजाक्षर, युग दृष्टा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'यु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥

भक्तामर का 'गं' बीजाक्षर, गम हर्ता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'गं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥

भक्तामर का 'यु' बीजाक्षर, युवा रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'यु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥

भक्तामर का 'गा' बीजाक्षर, गाथा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'गा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥

भक्तामर का 'दा' बीजाक्षर, दाता है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥

भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, वाचक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥

भक्तामर का 'लं' बीजाक्षर, लक्ष्मी दे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'लं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'ब' बीजाक्षर, बल दाता आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ब' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45॥
भक्तामर का 'नं' बीजाक्षर, नंदन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46॥
भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भोग हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वीतराग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जय जिनेन्द्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49॥
भक्तामर का 'ले' बीजाक्षर, लेख हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ले' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पुनीत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तटस्थ है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52॥
भक्तामर का 'तां' बीजाक्षर, थाम रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तां' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जय दाता है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54॥
भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, नारा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55॥
भक्तामर का 'नां' बीजाक्षर, नाम करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नां' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
भक्त सुरों के नत मुकुटों की, मणि चमकाते जो।
जग में फैला पाप-अँधेरा, पूर्ण मिटाते जो॥
भव-जल-पतितों के अवलंबन, बने युगादिक में।
उन जिन-चरण-कमल को सम्यक्, करूँ नमोऽस्तु मैं॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र-ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं।
जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं विश्वविघ्नहारक-क्लीं महाबीजाक्षरसहित श्री-वृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ—जो भक्तिवश झुकते हुए देवों के मुकुटों की रत्न-कान्ति को दीप्तिमान करते हैं, पाप-अन्धकार को दूर करते हैं तथा संसार सागर में डूबने वाले प्राणियों की रक्षा करने वाले जिनेन्द्र देव के चरणों में प्रणाम करके मैं यह स्तुति करता हूँ।

गुरु मार्ग में पीछे की हवा सब हमें चलाते।

2.

<u>सकलरोग नाशक - स्तुति का संकल्प</u>

(वसन्ततिलका)

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय - तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि - पटुभिः सुर - लोक- नाथैः।
स्तोत्रैर्जगत् - त्रितय - चित्त - हरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का यः बीजाक्षर, यश दाता आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'यः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'संस्' बीजाक्षर, संस्कारी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'संस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'तु' बीजाक्षर, तुल न सके आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'तु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'तः' बीजाक्षर, तप न सके आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'तः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, सफल करे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कुन्दन सा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लहराये आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'वाङ्' बीजाक्षर, वाङ्मय है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वाङ्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मंगलमय आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यम विजयी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥
भक्तामर का 'तत्' बीजाक्षर, तत्त्व दातृ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥
भक्तामर का 'त्व' बीजाक्षर, त्वरित करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥
भक्तामर का 'बो' बीजाक्षर, बोधक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥
भक्तामर का 'धा' बीजाक्षर, धर्मात्मा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥
भक्तामर का 'दुद्' बीजाक्षर, दुग्ध धार आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दुद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥
भक्तामर का 'भू' बीजाक्षर, भूख हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तरस हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥
भक्तामर का 'बुद्' बीजाक्षर, बुद्ध करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बुद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥
भक्तामर का 'धि' बीजाक्षर, धैर्य भरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पार करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'टु' बीजाक्षर, टंकार करे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'टु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21 ॥
भक्तामर का 'भिः' बीजाक्षर, भुक्ति दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भिः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22 ॥
भक्तामर का 'सु' बीजाक्षर, सुयोग्य है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रक्षक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24 ॥
भक्तामर का 'लो' बीजाक्षर, लोक पूज्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25 ॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कंचन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26 ॥
भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, नाथ रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27 ॥
भक्तामर का 'थैः' बीजाक्षर, थिरता दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'थैः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28 ॥
भक्तामर का 'स्तो' बीजाक्षर, स्तोक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्तो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29 ॥
भक्तामर का 'त्रैर्' बीजाक्षर, त्राता है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्रैर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30 ॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जग रक्षक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31 ॥
भक्तामर का 'गत्' बीजाक्षर, गत्-मिथ्या आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32 ॥

भक्तामर का 'त्रि' बीजाक्षर, त्राता है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तुल्य नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, याचक ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'चित्' बीजाक्षर, चित्-चेतन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'चित्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तत्त्व-ज्ञान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हर्ष भरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'रै' बीजाक्षर, रेचक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'रु' बीजाक्षर, रुदन हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'दा' बीजाक्षर, दास नही आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'रैः' बीजाक्षर, रैः सम्पद आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रैः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'स्तोष' बीजाक्षर, स्तोक नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्तोष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'ये' बीजाक्षर, यान रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ये' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'कि' बीजाक्षर, किशोर है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'कि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'ला' बीजाक्षर, लाभ करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ला' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हाय हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मुखर रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, पीड़ा हर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, तरण रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रथम पूज्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'थ' बीजाक्षर, थके नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'थ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'मम्' बीजाक्षर, मनहर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'जि' बीजाक्षर, जिज्ञासु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'नेन्' बीजाक्षर, नेत्र रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नेन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'द्रम्' बीजाक्षर, द्वार रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द्रम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
सकल जिनागम तत्त्वज्ञान से, बुद्धि कला पाके।
त्रय जग का चित हरने वाले, गीत रचा गा के॥
सुर पतियों ने जिन जिनवर का, जग में यश गाया।
उन ही प्रथम जिनेश्वर की मैं, स्तुति करने आया॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं नानामर संस्तुत–सकलरोगहारक–क्लीं–महाबीजाक्षरसहित श्री–वृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–सम्पूर्ण द्वादशांग का ज्ञान होने से प्रखर बुद्धियुक्त इन्द्रों ने तीनों लोकों के चित्त को लुभाने वाले प्रशस्त स्तोत्रों से जिन आदिनाथ भगवान की स्तुति की थी, उन आदिनाथ भगवान् की स्तुति करने के लिए मैं अल्पज्ञ उद्यत होता हूँ, यह आश्चर्य की बात है।

जुड़ो ना जोड़ो
जोड़ा छोड़ो जोड़ो तो
बेजोड़ जोड़ो।

3.

सर्वसिद्धिदायक - लघुता अभिव्यक्ति

(वसन्ततिलका)

बुद्धया विनापि विबुधार्चित - पाद - पीठ!
स्तोतुं समुद्यत - मतिर्विगत - त्रपोऽहम्
बालं विहाय जल -संस्थित-मिन्दु-बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'बुद्' बीजाक्षर, बुद्ध करे आहा।
ओम् ह्रीं श्री क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'बुद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1 ॥

भक्तामर का 'ध्या' बीजाक्षर, ध्यान योग्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ध्या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2 ॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विख्यात है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3 ॥

भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, नामांकित आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4 ॥

भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, पिता तुल्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5 ॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विरागमय आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6 ॥

भक्तामर का 'बु' बीजाक्षर, बुरा नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'बु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7 ॥

भक्तामर का 'धार्' बीजाक्षर, धारक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'धार्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8 ॥

भक्तामर का 'चि' बीजाक्षर, चिदानन्द आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'चि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तपसी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का 'पा' बीजाक्षर, पास रहे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दमन हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का 'पी' बीजाक्षर, पीयूष है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का 'ठ' बीजाक्षर, ठगे नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ठ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का 'स्तो' बीजाक्षर, स्तोत्र रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्तो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का 'तुम्' बीजाक्षर, तुम जप लो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तुम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, सरल करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का 'मुद्' बीजाक्षर, मुदित करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मुद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यशस्वी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तुष्ट करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, ममतामय आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'तिर्' बीजाक्षर, तिरवाता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तिर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विनयवान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गुरु समान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तारण है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'त्र' बीजाक्षर, त्रस्त नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'पो' बीजाक्षर, पोषक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'हम्' बीजाक्षर, हमें इष्ट आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'हम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'बा' बीजाक्षर, बाल नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'लम्' बीजाक्षर, लम्पट ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विशोक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'हा' बीजाक्षर, हास्य नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'हा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यशोगान आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जयकारा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लक्ष्य रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥
भक्तामर का 'सं' बीजाक्षर, सन्मति है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥
भक्तामर का 'स्थि' बीजाक्षर, स्थित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्थि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तात् समान आहा। ओम्..
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥
भक्तामर का 'मिन्' बीजाक्षर, मण्डित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मिन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥
भक्तामर का 'दु' बीजाक्षर, दुःख हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥
भक्तामर का 'बिम्' बीजाक्षर, बिलम्ब हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बिम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥
भक्तामर का 'ब' बीजाक्षर, बलदायक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ब' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मनहर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥
भक्तामर का 'न्यः' बीजाक्षर, न्यायवान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न्यः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कमल तल्य आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'इच्' बीजाक्षर, इच्छित फल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'इच्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'छ' बीजाक्षर, छत्र-छाँव आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'छ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तियक्त नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जयोऽस्तु है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'नः' बीजाक्षर, न्याय करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, सहयोग करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हर्षालु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'सा' बीजाक्षर, सावधान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'ग्र' बीजाक्षर, ग्रहण करो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'ही' बीजाक्षर, हीरा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ही' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'तुम्' बीजाक्षर, तुच्छ नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तुम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
जिनके चरण कमल देवों से, नित अर्चित माने।
मैं निर्लज्ज बुद्धि बिन उनके, उद्यत गुण गाने॥
जैसे जल में चन्द्र बिम्ब जो, लगे ठहरने को।
तो बच्चे बिन कौन? अन्य वह, चले पकड़ने को॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि–जिणाणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि–जिणाणं मत्यादि सुज्ञानप्रकाशक–क्लीं–महा–बीजाक्षरसहित–श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ—हे विद्वानों द्वारा पूज्य–चरण भगवन्! मैं आपकी स्तुति करने योग्य बुद्धि न रखता हुआ भी लज्जा छोड़कर आपकी स्तुति करने के लिए तत्पर हुआ हूँ। जैसे पानी में प्रतिबिम्बित चन्द्रमा को बच्चे के सिवाय अन्य कौन बुद्धिमान मनुष्य पकड़ना चाहता है? अर्थात् कोई नहीं।

द्वेष से बचो
लवण दूर रहे
दूध न फटे।

4.

जलजन्तु-मोचक - अवर्णनीय जिनवर गुण

(वसन्ततिलका)

वक्तुं गुणान्गुण -समुद्र ! शशाङ्क-कान्तान्,
कस्ते क्षमः सुर - गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त -काल - पवनोद्धत - नक्र- चक्रम्,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'वक्' बीजाक्षर, वक्ता है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'वक्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1 ॥

भक्तामर का 'तुम्' बीजाक्षर, तुम थामो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'तुम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2 ॥

भक्तामर का 'गु' बीजाक्षर, गुण दाता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'गु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3 ॥

भक्तामर का 'णान्' बीजाक्षर, उड़ान भरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'णान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4 ॥

भक्तामर का 'गु' बीजाक्षर, गुरु करे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'गु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5 ॥

भक्तामर का 'ण' बीजाक्षर, नन्दन है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ण' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6 ॥

भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, सबका है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7 ॥

भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मुक्त करे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8 ॥

भक्तामर का 'द्र' बीजाक्षर, द्रव्य-दातृ आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'द्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥

भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, शोभित है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥

भक्तामर का 'शां' बीजाक्षर, शाश्वत है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शां' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कुन्दन है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥

भक्तामर का 'कान्' बीजाक्षर, कामधेनु आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'कान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥

भक्तामर का 'तान्' बीजाक्षर, तंत्र रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'तान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥

भक्तामर का 'कस्' बीजाक्षर, कठोर न आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'कस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥

भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तेजस है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥

भक्तामर का 'क्ष' बीजाक्षर, क्षमावान आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'क्ष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥

भक्तामर का 'मः' बीजाक्षर, महिमामय आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥

भक्तामर का 'सु' बीजाक्षर, सुखदाता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रत्न रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'गु' बीजाक्षर, गुंजित है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'गु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'रु' बीजाक्षर, रूपवान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रज्ञामय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तीक्ष्ण नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'मो' बीजाक्षर, मोक्ष वरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, पिशाच हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'बुद्' बीजाक्षर, बुद्धिमान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बुद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'ध्या' बीजाक्षर, ध्यान करो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ध्या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'कल्' बीजाक्षर, कल्पित नाआहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कल्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'पान्' बीजाक्षर, पाण्डु[1] नहींआहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तरकस है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'का' बीजाक्षर, कार्य करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'का' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

1. पीलिया

भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लहराये आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पथ दाता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वैरागी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'नोद' बीजाक्षर, नौका है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नोद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, धन्य करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तेजस्वी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नयन ज्योति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'क्र' बीजाक्षर, क्रन्दन हर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'च' बीजाक्षर, चमकदार आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'च' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'क्रम्' बीजाक्षर, क्रमबद्ध है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्रम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'को' बीजाक्षर, कोमल है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'को' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, वादक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तपन हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'री' बीजाक्षर, रिपु नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'री' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'तु' बीजाक्षर, तुले नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, माँ समान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लक्ष्य दातृ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'मम्' बीजाक्षर, मंगलकर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'बु' बीजाक्षर, बुलन्द है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, नियोग है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'धिम्' बीजाक्षर, धैर्यवान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धिम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'भु' बीजाक्षर, भुक्ति मुक्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'जा' बीजाक्षर, जागृत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'भ्याम्' बीजाक्षर, भाषक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ्याम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
चारु चन्द्र सम गुण-समुद्र के, गुण-गण कौन कहे?
सुरपति जैसा भी निजमति से, कैसे उन्हें कहें?॥
मच्छ समूहों के सागर में, जब तूफाँ उठता।
तो वह अपने बाहुबलों से, कौन तैर सकता?॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र-ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि-जिणाणं।
जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि-जिणाणं नानादुःखसमुद्रतारक क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ—हे गुणसागर प्रभो! आपके चन्द्र समान उज्ज्वल गुणों को वृहस्पति के समान बुद्धिमान् विद्वान् भी अपनी बुद्धि से नहीं कह सकता। जैसे कि प्रलयकाल की प्रबल वायु से उद्वेलित, मगरमच्छों के भरे हुए समुद्र को अपनी भुजाओं से कौन पार कर सकता है? अर्थात् कोई नहीं।

तेरी दो आँखें
तेरी ओर हजार
सतर्क हो जा।

5.

अक्षिरोग संहारक - उमड़ती हुई भक्ति प्रेरणा

(वसन्ततिलका)

सोऽहं तथापि तव भक्ति - वशान्मुनीश!
कर्तुं स्तवं विगत - शक्ति - रपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्म - वीर्य - मविचार्य मृगी मृगेन्द्रम्
नाभ्येति किं निज-शिशोः परिपालनार्थम्॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'सो' बीजाक्षर, सोहम् है आहा। ओम्...
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'सो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'हम्' बीजाक्षर, हम बोलें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'हम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तट देता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'था' बीजाक्षर, थाम रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'था' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, पीयूष है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तन्मय है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वात्सल्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'भक्' बीजाक्षर, भक्तिल है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भक्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तिलक रहा आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वाहक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥

भक्तामर का 'शान्' बीजाक्षर, शान रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥

भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मुख्य रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥

भक्तामर का 'नी' बीजाक्षर, नीरज है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥

भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, शंकित ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥

भक्तामर का 'कर्' बीजाक्षर, कर्तव्य है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'कर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥

भक्तामर का 'तुम्' बीजाक्षर, तुम्हें इष्ट आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'तुम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥

भक्तामर का 'स्त' बीजाक्षर, स्थिर है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'स्त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥

भक्तामर का 'वम्' बीजाक्षर, वन्दित है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विभववान आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥

भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गणेश है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तात्विक है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'शक्' बीजाक्षर, शक्तिमान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शक्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तृप्त करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रमा तुल्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, प्रीतम है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रेरक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'वृत्' बीजाक्षर, वृत्त नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वृत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'तः' बीजाक्षर, तथास्तु है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'प्रीत्' बीजाक्षर, प्रीत भरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्रीत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'यात्' बीजाक्षर, यज्ञ समान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यात्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मुखर करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'वीर्' बीजाक्षर, वीर रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वीर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यम हरता आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मुद्रित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विकार हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥
भक्तामर का 'चार्' बीजाक्षर, चारू है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'चार्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यक्ष नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥
भक्तामर का 'मृ' बीजाक्षर, मुत्यु हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मृ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥
भक्तामर का 'गी' बीजाक्षर, गीता है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥
भक्तामर का 'मृ' बीजाक्षर, मृतक नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मृ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥
भक्तामर का 'गेन्' बीजाक्षर, गेय रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गेन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥
भक्तामर का 'द्रम्' बीजाक्षर, द्वेष हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द्रम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥
भक्तामर का 'नाभ्' बीजाक्षर, नाभि केंद्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नाभ्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥
भक्तामर का 'ये' बीजाक्षर, यंत्र रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ये' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तिरस्कृत ना आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'किम्' बीजाक्षर, किम् हारी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'किम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निर्मल है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जाप्य मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'शि' बीजाक्षर, शिखर रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'शोः' बीजाक्षर, शोर हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शोः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पथदर्शक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, रिक्त नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'पा' बीजाक्षर, पाश्चात्य न आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लुप्त नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'नार्' बीजाक्षर, नारकी न आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नार्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'थम्' बीजाक्षर, थकान हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'थम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
हे मुनीश! बस भक्ति भावना, से लाचार हुआ।
शक्ति हीन तुमरी थुति करने, मैं तैयार हुआ॥
जैसे निज बल बिना विचारे, हिरणी कैसे भी।
बस प्रीती से शिशु रक्षा को, लड़े शेर से भी॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि-जिणाणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि-जिणाणं सकलकार्य-सिद्धिकारक-क्लीं-महाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे मुनिनाथ! जैसे हिरणी शक्ति न होते हुए भी केवल प्रेमवश अपने बच्चे की रक्षा के लिए सिंह का सामना करती है, उसी प्रकार मैं भी बौद्धिक शक्ति न होने पर भी श्रद्धामात्र से आपका स्तवन करने के लिए प्रवृत्त हुआ हूँ।

आज्ञा का देना
आज्ञा पालन से है
कठिनतम।

6.

सरस्वती-भगवती-विद्या प्रसारक - स्तवन में मात्र भक्ति ही कारण

(वसन्ततिलका)

अल्प- श्रुतं - श्रुतवतां परिहास धाम,
त्वद्-भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र -चारु -कलिका-निकरैक -हेतुः॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'अल्' बीजाक्षर, आलौकित आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'अल्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, परमपिता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'श्रु' बीजाक्षर, श्रुतसाधक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'श्रु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, तम हरता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'श्रु' बीजाक्षर, श्रुतदायक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'श्रु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तरिणी है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वंद्य रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'ताम्' बीजाक्षर, तामसिक न आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ताम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पारदर्शी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, ऋद्धिवान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का 'हा' बीजाक्षर, होम रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'हा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, सम्यक दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का 'धा' बीजाक्षर, ध्याता है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मान रखे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का 'त्वद्' बीजाक्षर, तरस हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्वद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का 'भक्' बीजाक्षर, भ्रम हर्ता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भक्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तीर्थ रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का 'रे' बीजाक्षर, रेखांकित आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विनीत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मुक्तिबधु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'ख' बीजाक्षर, खेद हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ख' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21 ॥
भक्तामर का 'री' बीजाक्षर, रिष्ट हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'री' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22 ॥
भक्तामर का 'कु' बीजाक्षर, कुमति हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23 ॥
भक्तामर का 'रु' बीजाक्षर, रुक्ष नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रु बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24 ॥
भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, त्यागी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विमान सम आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26 ॥
भक्तामर का 'लान्' बीजाक्षर, लोचन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27 ॥
भक्तामर का 'माम्' बीजाक्षर, माध्यम है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'माम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28 ॥
भक्तामर का 'यत्' बीजाक्षर, युगदृष्टा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29 ॥
भक्तामर का 'को' बीजाक्षर, कौतुहल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'को' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30 ॥
भक्तामर का 'कि' बीजाक्षर, किशोर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31 ॥
भक्तामर का 'लः' बीजाक्षर, लहराये आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32 ॥

भक्तामर का 'कि' बीजाक्षर, किरण रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'कि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लज्जा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महान है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥
भक्तामर का 'धौ' बीजाक्षर, ध्वजा रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धौ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मृत्युंजय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥
भक्तामर का 'धु' बीजाक्षर, ध्रौव्य रहे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥
भक्तामर का 'रम्' बीजाक्षर, रौद्र नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विनम्र है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥
भक्तामर का 'रौ' बीजाक्षर, रौद्र हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रौ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तिथि तुल्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥
भक्तामर का 'तच्' बीजाक्षर, तृष्णा हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तच्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥
भक्तामर का 'चा' बीजाक्षर, चमत्कारी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'चा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'म्र' बीजाक्षर, मुखिया है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'म्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45॥
भक्तामर का 'चा' बीजाक्षर,चंदन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'चा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46॥
भक्तामर का 'रु' बीजाक्षर, रुष्ट नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कष्ट हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48॥
भक्तामर का 'लि' बीजाक्षर, लिपिबद्ध आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49॥
भक्तामर का 'का' बीजाक्षर, कोहिनूर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'का' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50॥
भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निर्मद है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, क्रोध हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52॥
भक्तामर का 'रै' बीजाक्षर, राजा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कीर्तिमान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54॥
भक्तामर का 'हे' बीजाक्षर, हितकारी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'हे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55॥
भक्तामर का 'तुः' बीजाक्षर, तुंग रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तुः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
मैं मूरख तो विद्वानों से, हँसी पात्र देखो।
लेकिन जबरन भक्ति आपकी, कहे बोलने को॥
आम मञ्जरी की ज्यों कोयल, देखे फुलबाड़ी।
तो होकर मजबूर बोलती, कुहु कुहु की वाणी॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं याचितार्थ प्रतिपादन-शक्तिसंपन्न-क्लीं-महा-बीजाक्षरसहित-श्रीवृषभ-जिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे जिनेश! जिस तरह अबोध कोयल वसन्त ऋतु में कवेल आम्रमंजरी का निमित्त पाकर मधुर ध्वनि करती है, उसी प्रकार अल्पज्ञ और विद्वानों के हास्यपात्र मुझे आपकी भक्ति ही आपकी स्तुति करने के हेतु जबरन वाचाल कर रही है।

मलाई कहाँ
अशान्त दूध में सो
प्रशान्त बनो।

7.

सर्वदुरित संकट क्षुद्रोपद्रव निवारक-पापक्षयी जिनवर स्तुति

(वसन्ततिलका)

त्वत्संस्तवेन भव - सन्तति-सन्निबद्धम्,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्त-लोक - मलि -नील-मशेष-माशु,
सूर्यांशु- भिन्न-मिव शार्वर-मन्धकारम्॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'त्वत्' बीजाक्षर, त्वरित रहा आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्वत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'संस्' बीजाक्षर, सम्पद दे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'संस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तार्किक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'वे' बीजाक्षर, विचित्र है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नियोग है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भूषित है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विरक्त है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'सन्' बीजाक्षर, सम्राट है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तन्द्रा हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तीरथ है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का 'सन्' बीजाक्षर, सम्पूरण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निर्मद है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का 'बद्' बीजाक्षर, ब्रह्म रमण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का 'धम्' बीजाक्षर, धर्म रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का 'पा' बीजाक्षर, प्रायोगिक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का 'पं' बीजाक्षर, पंक्तिबद्ध आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का 'क्ष' बीजाक्षर, क्षत्रिय है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्ष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का 'णात्' बीजाक्षर, नतमस्तक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णात्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का 'क्ष' बीजाक्षर, क्षय हारी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्ष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, युक्ति पूर्ण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मुक्त रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21 ॥
भक्तामर का 'पै' बीजाक्षर, पैमाना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तिष्ट रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23 ॥
भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, शंका हर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24 ॥
भक्तामर का 'री' बीजाक्षर, रीति है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'री' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, राजत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26 ॥
भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, भाग्यवान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27 ॥
भक्तामर का 'जाम्' बीजाक्षर, जाप्य मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जाम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28 ॥
भक्तामर का 'आ' बीजाक्षर, अखंड है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'आ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29 ॥
भक्तामर का 'क्रान्' बीजाक्षर, क्रांति रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्रान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तरस हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31 ॥
भक्तामर का 'लो' बीजाक्षर, लोक पूज्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32 ॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कंचनमणि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मंत्र रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'लि' बीजाक्षर, लिखित रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'नी' बीजाक्षर, नीरव है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लक्ष्य रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महेश है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'शे' बीजाक्षर, शेखर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'ष' बीजाक्षर, षाठ्य नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, मापक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'शु' बीजाक्षर, शुष्क नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'सूर्' बीजाक्षर, सूर्य तेज आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सूर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'यान्' बीजाक्षर, यांत्रिक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'शु' बीजाक्षर, शूरवीर आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'शु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'भिन्' बीजाक्षर, भिन्न नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भिन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नगीना है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'मि' बीजाक्षर, मोचक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विक्रम है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'शार्' बीजाक्षर, सारभूत आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शार्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, बोलो तो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रट तो लो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'मन्' बीजाक्षर, मंत्र महा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, धन दाता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'का' बीजाक्षर, काम हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'का' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'रम्' बीजाक्षर, रमणीया आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
भौंरे जैसा रात अँधेरा, जो जग को ढाँके।
सूर्य किरण को देख भागकर, दूर कहीं काँपे॥
वैसे भव-भव में जीवों से, जो भी पाप हुए।
हे प्रभु! तेरे संस्तव से वे, क्षण में नाश हुए॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं सकलपापफल कुष्टनिवारक-क्ली-ंमहा-बीजाक्षरसहित-श्रीवृषभ-जिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ—हे प्रभो! जिस तरह सूर्य की किरणों द्वारा रात्रि का समस्त अन्धकार नष्ट हो जाता है, उसी तरह आपके स्तवन से प्राणियों के अनेक जन्म (भव) में संचित पाप नष्ट हो जाते हैं।

पूर्ण पथ लो
पाप को पीठ दे दो
वृत्ति सुखी हो।

8.

<u>सर्वारिष्ट योग निवारक-प्रभु की प्रभुता का प्रभाव</u>

(वसन्ततिलका)

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद -
मारभ्यते तनु- धियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु,
मुक्ता-फल - द्युति-मुपैति ननूद-बिन्दुः॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'मत्' बीजाक्षर, मान हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'मत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'वे' बीजाक्षर, व्यसन हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तीखा ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, निर्दोषी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'थ' बीजाक्षर, थोड़ा न आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'थ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तपन हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विशुद्ध रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'सन्' बीजाक्षर, संत रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'स्त' बीजाक्षर, स्थायी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विस्मय कर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का 'नम्' बीजाक्षर, नमोऽस्तुमय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मांगलिक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का 'ये' बीजाक्षर, युक्ति करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ये' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दाता है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, महत्वमय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का 'रभ्' बीजाक्षर, रम्य रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रभ्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, युवा रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तोषक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, त्रुटि हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का 'नु' बीजाक्षर, नूतन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'धि' बीजाक्षर, धीर वीर आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'धि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'या' बीजाक्षर, युगदृष्टा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, पितामहः आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तोरण है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विरक्त है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रसन्न है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, भानु तुल्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'वात्' बीजाक्षर, वात हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वात्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'चे' बीजाक्षर, चेतन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'चे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'तो' बीजाक्षर, तोष रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, ह्रास नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'रिष्' बीजाक्षर, ऋषि मुनि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रिष्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, युगदर्शक आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तार्किक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, सूचक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'ताम्' बीजाक्षर, तमस हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ताम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नामांकित आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'लि' बीजाक्षर, ललित करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'नी' बीजाक्षर, नियम बद्ध आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दामन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'ले' बीजाक्षर, लेख हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ले' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'शु' बीजाक्षर, षंड नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'मुक्' बीजाक्षर, मोक्ष महल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मुक्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, तारा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'फ' बीजाक्षर, फल दाता आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'फ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'ला' बीजाक्षर, लिप्त नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ला' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'द्यु' बीजाक्षर, द्योत रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द्यु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तपस्या है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मुग्ध करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'पै' बीजाक्षर, पुण्यार्थी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तैराक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, निष्पृह है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'नू' बीजाक्षर, निष्कामी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दमक रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'बिन्' बीजाक्षर, विनायक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बिन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'दुः' बीजाक्षर, दुख हारक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दुः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
अल्प बुद्धि वाले मैंने यह, शुभ आरम्भ किया।
नाथ! आपका संस्तव मानो, छन्दो बद्ध किया॥
सज्जन जन का मन हर लेगा, कृपा आपकी से।
कमल पत्र पर जैसे जल कण, चमकें मोती से॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदानुसारीणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदानुसारीणं अनेकसंकट संसारदुःख–निवारक–क्लीं–महाबीजाक्षरसहित–श्रीवृषभ–जिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे प्रभो! जिस तरह कमलिनी के पत्र पर पड़ी हुई पानी की बूँद उस पत्र के प्रभाव से मोती के समान सुन्दर दिखकर दर्शकों के चित्त को हरती है, उसी प्रकार मुझ मन्दबुद्धि द्वारा की गई आपकी स्तुति भी आपके प्रभाव में सज्जनों के चित्त को हरेगी।

टिमटिमाते
दीपक को भी देख
रात भा जाती।

9.

कथा ही पापनाशक है

(वसन्ततिलका)

आस्तां तव स्तवन - मस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्सङ्कथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'आस्' बीजाक्षर, आस भरे आहा। ओम्...
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'आस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1 ॥

भक्तामर का 'ताम्' बीजाक्षर, तामसिक न आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ताम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2 ॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तगण-मगण आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विरह हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4 ॥

भक्तामर का 'स्त' बीजाक्षर, स्थिर करे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'स्त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वैर हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6 ॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नग्न रूप आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7 ॥

भक्तामर का 'मस्' बीजाक्षर, मस्तक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8 ॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तप दाता आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, सुव्रत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का 'मस्' बीजाक्षर, मस्त रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तम हर्त्ता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का 'दो' बीजाक्षर, दोष हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का 'षं' बीजाक्षर, संग हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'षं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का 'त्वत्' बीजाक्षर, तोषक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्वद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का 'सं' बीजाक्षर, संपन्न है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कथारूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का 'था' बीजाक्षर, थामो तो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'था' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, प्रयत्न करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जग तारक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, ग्रन्थ रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'ताम्' बीजाक्षर, ताम्र नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ताम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'दु' बीजाक्षर, दुष्ट नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, रिझा रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, तपोध्यान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निष्कंप है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'हन्' बीजाक्षर, हंता है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'हन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तिरष्कृत न आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'दू' बीजाक्षर, दुष्कर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'रे' बीजाक्षर, रोचक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, समतामय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हसवाँ दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'स्त्र' बीजाक्षर, श्रमण तीर्थ आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्त्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'कि' बीजाक्षर, किंचिदून आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, राज रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'णः' बीजाक्षर, न्हवन रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'कु' बीजाक्षर, कुशल रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'रु' बीजाक्षर, रूपक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तेजस्व है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रखर रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'भै' बीजाक्षर, भैषज है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, व्याधि हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'पद्' बीजाक्षर, पद दाता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, महा रत्न आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कलंक हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'रे' बीजाक्षर, रोचक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'षु' बीजाक्षर, सुख-शान्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'षु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जिज्ञासु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लायक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'जा' बीजाक्षर, ज्येष्ट रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निष्कलंक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विष हारक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'का' बीजाक्षर, कामधेनु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'का' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, सामायिक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'भान्' बीजाक्षर, भव्य किरण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'जि' बीजाक्षर, जिन-आगम आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
सूरज दूर रहे बस उसकी, किरणें ही मिलते।
पद्म सरोवर के सब पंकज, विकसित हों खिलते॥
हे! प्रभु विमल आपका संस्तव, उसका कहना क्या?
केवल कथा आपकी जग की, हरले व्यथा कथा॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण–सोदाराणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण–सोदाराणं सकल–मनोवांछित फलदायक–क्लीं–महाबीजाक्षरसहित–श्रीवृषभ–जिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे जिनेश! आपके निर्दोष स्तवन में तो अचिन्त्य शक्ति है ही परन्तु आपकी पवित्र कथा सुनना ही प्राणियों के पापों को नष्ट कर देता है, जैसे सूर्य तो दूर ही रहता है परन्तु उसकी उज्ज्वल किरणें ही सरोवरों में कमलों को विकसित कर देती हैं।

परिचित भी
अपरिचित लगे
स्वस्थ्य ध्यान में।

10.

कूकरविषनिवारक-भगवत् पददातृ भक्ति

(वसन्ततिलका)

नात्यद्-भुतं भुवन - भूषण! भूत-नाथ!
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्त - मभिष्टुवन्तः,
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, नयन रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1 ॥

भक्तामर का 'त्यद्' बीजाक्षर, ताम हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्यद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2 ॥

भक्तामर का 'भु' बीजाक्षर, भुवन भाग्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3 ॥

भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, तम-जेता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4 ॥

भक्तामर का 'भु' बीजाक्षर, भुवनेश है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विश्वरूप आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6 ॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, निकस रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7 ॥

भक्तामर का 'भू' बीजाक्षर, भू दाता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8 ॥

भक्तामर का 'ष' बीजाक्षर, ष्लेष है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'ष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥

भक्तामर का 'ण' बीजाक्षर, नमस्कार आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ण' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥

भक्तामर का 'भू' बीजाक्षर, भुवनेश्वर आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, त्याग धर्म आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥

भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, नाड़ी है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥

भक्तामर का 'थ' बीजाक्षर, थिरक रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'थ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥

भक्तामर का 'भू' बीजाक्षर, भक्तिरूप आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥

भक्तामर का 'तैर्' बीजाक्षर, तांत्रिक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'तैर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥

भक्तामर का 'गु' बीजाक्षर, गूँज रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'गु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥

भक्तामर का 'णैर्' बीजाक्षर, नय प्रमाण आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'णैर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥

भक्तामर का 'भु' बीजाक्षर, भुवनत्रय आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, वन्दनीय आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का ‘भ’ बीजाक्षर, भाग्यवान आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं ‘भ’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का ‘वन्’ बीजाक्षर, वरम रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘वन्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का ‘त’ बीजाक्षर, तिरस्कृत ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘त’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का ‘म’ बीजाक्षर, माँझी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘म’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का ‘भिष्’ बीजाक्षर, भीष्म नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘भिष्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का ‘टु’ बीजाक्षर, तुष्टिकरण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘टु’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का ‘वन्’ बीजाक्षर, वंदित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘वन्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का ‘तः’ बीजाक्षर, तप दाता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘तः’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का ‘तुल्’ बीजाक्षर, तुल्य नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘तुल्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का ‘या’ बीजाक्षर, याचक ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘या’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का ‘भ’ बीजाक्षर, भाषक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘भ’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का ‘वन्’ बीजाक्षर, बंधक ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘वन्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तत्त्व न्याय आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भाग्य कमल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, व्याधि नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'तो' बीजाक्षर, तथ्य रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, निर्ग्रन्थी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'नु' बीजाक्षर, नून नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तिष्ठ रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नयन कमल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'किम्' बीजाक्षर, कौस्तुभ है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'किम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, वाह! वाह! आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'भूत्' बीजाक्षर, भूतल मणि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भूत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'या' बीजाक्षर, यान बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'श्रि' बीजाक्षर, श्रेय रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'श्रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, तामस ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यति राजा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'इ' बीजाक्षर, इष्ट रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'इ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हर्ष-खुशी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'नात्' बीजाक्षर, नाथ रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नात्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, ममत्व हर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, सफल मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'मम्' बीजाक्षर, मम् गालक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कषाय हर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'रो' बीजाक्षर, रोग शमक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तिल-तुष ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
भूतनाथ हे! जग आभूषण, इसमें विस्मय ना।
भू पर सद्‌गुण से थुति करता, तुम सम तुल्य बना॥
आखिर उस स्वामी से क्या? जो, अपने आश्रित को।
अपना वैभव दे अपने सम, कभी न करता हो॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं अर्हत्–जिनस्मरण जिनसम्भूत–क्लीं महा–बीजाक्षरसहित–श्रीवृषभ–जिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे भुवनरत्न! यदि सत्यार्थ गुणों द्वारा आपकी स्तुति करने वाले मानव आपके ही सदृश हो जाएँ तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है ; क्योंकि संसार में उस स्वामी से लाभ ही क्या? जो अपने अधीन व्यक्तियों को अपने समान नहीं बना लेवे।

इष्ट–सिद्धि में
अनिष्ट से बचना
दुष्टता नहीं।

11.

अभीप्सित आकर्षक-जिनदर्शन की महिमा

(वसन्ततिलका)

दृष्ट्वा भवन्त मनिमेष - विलोकनीयम्,
नान्यत्र - तोष- मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर-द्युति - दुग्ध-सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधे रसितुं क इच्छेत्?॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'दृष्ट्' बीजाक्षर, दृष्ट रहा आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'दृष्ट्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, व्रत रूपी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भावुक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'वन्' बीजाक्षर, विशेष है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तपोहार आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महारचित आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निश्चय है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'मे' बीजाक्षर, महारत्न आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'ष' बीजाक्षर, समवसरण आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विनत रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का 'लो' बीजाक्षर, लोकमान्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, काम हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का 'नी' बीजाक्षर, निष्पृह है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का 'यम्' बीजाक्षर, यम हर्त्ता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का 'नान्' बीजाक्षर, नाना रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यज्ञ-हवन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का 'त्र' बीजाक्षर, त्रिकाल है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का 'तो' बीजाक्षर, तौलो ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का 'ष' बीजाक्षर, षट्कारक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मुस्कान दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पारदर्शी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'या' बीजाक्षर, यजमान है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तिक्त नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जागृत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'नस्' बीजाक्षर, नश्वर ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यम राजा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'च' बीजाक्षर, चहक रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'च' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'क्षुः' बीजाक्षर, क्षुधा हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्षुः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'पीत्' बीजाक्षर, पीर हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पीत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, बाधक ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, परचम है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'यः' बीजाक्षर, यश-ख्याति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, शंख नाद आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥
भक्तामर का 'शि' बीजाक्षर, शिक्षक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कमलरूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रज हर्ता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥
भक्तामर का 'द्यु' बीजाक्षर, ध्वनि कर्ता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द्यु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तीर रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥
भक्तामर का 'दुग्' बीजाक्षर, दुग्धामृत आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दुग्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥
भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, धाम रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥
भक्तामर का 'सिन्' बीजाक्षर, सिन्धु रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सिन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥
भक्तामर का 'धोः' बीजाक्षर, धोखा ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धोः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥
भक्तामर का 'क्षा' बीजाक्षर, क्षायिक दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्षा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥
भक्तामर का 'रम्' बीजाक्षर, रम्य रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जहाज है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'लम्' बीजाक्षर, लम्पट ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जयोऽस्तु है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लवण नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निज दाता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'धे' बीजाक्षर, ध्येय रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रक्षा सूत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'सि' बीजाक्षर, सिंहनाद आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'तुम्' बीजाक्षर, तुम्बी ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तुम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कवच मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'इच्' बीजाक्षर, इच्छुक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'इच्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'छेत्' बीजाक्षर, क्षेत्र तीर्थ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'छेत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
चन्द्र किरण सम क्षीर सिन्धु का, पीकर जल मीठा।
क्षारसिन्धु का कौन? चाहता, पीना जल तीखा॥
यों ही बिना पलक झपकाये, दर्शन योग्य तुम्हीं।
तुम्हें देखकर जग की नजरें, टिके न अन्य कहीं॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं सकल तुष्टि-पुष्टिकारक-क्लीं-महा-बीजाक्षर-सहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे लोकोत्तम! जैसे क्षीरसागर के निर्मल और मिष्ट जल का पान करने वाला मनुष्य अन्य समुद्र के खारे पानी को पीने की इच्छा नहीं करता, उसी प्रकार आपकी वीतराग मुद्रा को निरखकर मनुष्यों के नेत्र अन्य देवों की सरागमुद्रा को देखने से तृप्त नहीं होते।

सामायिक में कुछ न करने की स्थिति होती है।

12.

हस्ति-मद विदारक, वांछित रूप प्रदायक-अनुपम सौन्दर्य

(वसन्ततिलका)

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणुभिस्-त्वम्,
निर्मापितस्- त्रि - भुवनैक - ललाम-भूत !
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्,
यत्ते समान- मपरं न हि रूप-मस्ति॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'यैः' बीजाक्षर, यज्ञ पुण्य आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'यैः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'शान्' बीजाक्षर, शासक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तट दाता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'रा' बीजाक्षर, राग हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गम हर्त्ता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'रु' बीजाक्षर, रूपम है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'चि' बीजाक्षर, चिद्रूपी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'चि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'भिः' बीजाक्षर, भोगी ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भिः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, परोपकारी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रमण रूप आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥

भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, माला है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥

भक्तामर का 'णु' बीजाक्षर, नुग्रह है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'णु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥

भक्तामर का 'भिस्' बीजाक्षर, भाजक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भिस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥

भक्तामर का 'त्वम्' बीजाक्षर, तोषक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्वम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥

भक्तामर का 'निर्' बीजाक्षर, निर्मोही आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'निर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥

भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, माता है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥

भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, पिता तुल्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥

भक्तामर का 'तस्' बीजाक्षर, ताल छंद आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'तस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥

भक्तामर का 'त्रि' बीजाक्षर, त्रिजग रत्न आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥

भक्तामर का 'भु' बीजाक्षर, भुवन तिलक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वैरागी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥

भक्तामर का 'नै' बीजाक्षर, नैन रत्न आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कलश रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥

भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लालित्य है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥

भक्तामर का 'ला' बीजाक्षर, लायक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ला' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मन मोहक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥

भक्तामर का 'भू' बीजाक्षर, भोक्ता निज आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तरकीब है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥

भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, भव तारक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥

भक्तामर का 'वन्' बीजाक्षर, वंद्य रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, जिन तीरथ आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥

भक्तामर का 'ये' बीजाक्षर, येनक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ये' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, शिव वाहन आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥
भक्तामर का 'ख' बीजाक्षर, खनक रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ख' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥
भक्तामर का 'लु' बीजाक्षर, लुभा रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥
भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तेज भरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥
भक्तामर का 'प्य' बीजाक्षर, प्यास हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥
भक्तामर का 'ण' बीजाक्षर, नगण्य ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ण' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥
भक्तामर का 'वः' बीजाक्षर, वहम हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥
भक्तामर का 'पृ' बीजाक्षर, पृथक नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पृ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥
भक्तामर का 'थिव्' बीजाक्षर, दिव्य रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'थिव्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥
भक्तामर का 'याम्' बीजाक्षर, याज्ञिक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'याम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥
भक्तामर का 'यत्' बीजाक्षर, यश कारक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥
भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तेजस्वी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, सभ्य रहा आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, मालिक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नकल नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महारत्न आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, परम पर्व आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'रम्' बीजाक्षर, रमणीया आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नाटक हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'हि' बीजाक्षर, हितैषी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'हि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'रू' बीजाक्षर, रूठे ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, परम भक्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'मस्' बीजाक्षर, मस्त करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, धर्म तिलक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
अद्वितीय जो एक त्रिजग में, तन सुन्दर प्यारा।
जिन शान्ति प्रिय अणुओं से वह, निर्मापित न्यारा॥
भू पर वे अणु बस उतने ही, बने जिन्हें पूजा।
अतः आप सम रूप सलौना, दिखे नहीं दूजा॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं वांछितरूपफल प्रदायक-क्लीं-महा-बीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे लोकशिरोमणे! आपके शरीर की रचना जिन पुद्गल परमाणुओं से हुई, वे परमाणु लोक में उतने ही थे। यदि अधिक होते तो आप जैसा रूप औरों का भी होना चाहिए था, किन्तु वास्तव में पृथ्वी पर आपके समान सुन्दर कोई दूसरा नहीं।

कछुवे सम
इन्द्रिय संयम से
आत्म रक्षा हो।

13.

लक्ष्मी-सुख प्रदायक, स्वशरीर रक्षक-सर्व उपमा विजयी मुख

(वसन्ततिलका)

वक्त्रं क्व ते सुर - नरोरग-नेत्र-हारि,
निःशेष - निर्जित - जगत्त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलङ्क - मलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाश-कल्पम्॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'वक्' बीजाक्षर, वक्ता है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'वक्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'त्रम्' बीजाक्षर, तैराक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्रम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'क्व' बीजाक्षर, कवच रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'क्व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तक तो लो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'सु' बीजाक्षर, सुरक्षक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रमण योग्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नष्ट न हो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'रो' बीजाक्षर, रोहण है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रटना है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गगन तुल्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का 'ने' बीजाक्षर, नेक रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ने' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का 'त्र' बीजाक्षर, त्रास हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का 'हा' बीजाक्षर, हरे कर्म आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'हा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, रीति है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का 'निश' बीजाक्षर, निष्कंटक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'निश' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का 'शे' बीजाक्षर, निश्शेष है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का 'ष' बीजाक्षर, सुख मारग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का 'निर्' बीजाक्षर, निर्मल जप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'निर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का 'जि' बीजाक्षर, जिन भक्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तम हारी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जय घोषक आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'गत्' बीजाक्षर, गत्-मिथ्या आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'त्रि' बीजाक्षर, रत्नत्रय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, जगतारक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'यो' बीजाक्षर, जिन योगी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पाठक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, मानक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'नम्' बीजाक्षर, नमस्कार आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'बिम्' बीजाक्षर, बिम्ब तुल्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बिम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'बं' बीजाक्षर, बँध न सके आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कटुक नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'लं' बीजाक्षर, शुद्ध लग्न आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कम न हो आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मृत ना हो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'लि' बीजाक्षर, लिपिक न हो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'नम्' बीजाक्षर, नमन करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'क्व ' बीजाक्षर, कहाँ मिले आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्व ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निकट वसे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'शा' बीजाक्षर, शास्ता है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कट न सके आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'रस्' बीजाक्षर, रस्ता है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यज्ञ मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'यद्' बीजाक्षर, यश गाथा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, विनाशी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, सुख-कर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45॥

भक्तामर का 'रे' बीजाक्षर, रे ज्ञानी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46॥

भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भव्य रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, व्याख्या है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तिक्काला आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49॥

भक्तामर का 'पाण' बीजाक्षर, पानक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पाण' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50॥

भक्तामर का 'डु' बीजाक्षर, डूबे ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'डु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51॥

भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पढ़ तो लो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52॥

भक्तामर का 'ला' बीजाक्षर, लुप्त न हो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ला' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53॥

भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, शंका हर आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54॥

भक्तामर का 'कल्' बीजाक्षर, कल्याणी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'कल्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55॥

भक्तामर का 'पम्' बीजाक्षर, पद्म तुल्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
कहाँ आपका मुख अति सुन्दर, सबके नेत्र हरे ?
त्रय जग की सब उपमाओं पर, जो जय विजय करे॥
और कहाँ वह मलिन चन्द्र जो, दागी कहलाए ?
दिन में जिसकी सुन्दरता तो, फीकी पड़ जाए॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजु-मदीणं लक्ष्मी-सुखविधायक-क्लीं-महाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे प्रभो! सुन-नर-असुर के नेत्रों को अपनी ओर आकर्षित करने वाले, समस्त जगत में अनुपम, आपके मुख-मण्डल की बराबरी चन्द्रमा कहाँ कर सकता है जिसमें कि काला लांछन लगा हुआ है तथा जो दिन के समय ढाक के पत्ते की तरह कान्तिहीन हो जाता है।

डूबना ध्यान
तैरना स्वाध्याय है
अब तो डूबो।

14.

आधि-व्याधि नाशक-लोकव्यापी गुण

(वसन्ततिलका)

सम्पूर्ण- मण्डल-शशाङ्क - कला-कलाप-
शुभ्रा गुणास् - त्रि-भुवनं तव लङ्घयन्ति।
ये संश्रितास् - त्रि-जगदीश्वर नाथ-मेकम्,
कस्तान् निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम्॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'सम्' बीजाक्षर, समता दे आहा। ओम्
ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'सम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'पूर्' बीजाक्षर, पूर्ण रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पूर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'ण' बीजाक्षर, नगीाना है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ण' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'मं' बीजाक्षर, मंजिल दे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'ड' बीजाक्षर, डगमग ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ड' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लवण नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, शोभ रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'शां' बीजाक्षर, शान्ति करे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शां' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कम न रहा आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कनक तुल्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥
भक्तामर का 'ला' बीजाक्षर, लक्ष्मी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ला' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कट न सके आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥
भक्तामर का 'ला' बीजाक्षर, लाभित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ला' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पीयूष है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥
भक्तामर का 'शु' बीजाक्षर, शुक्ल रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥
भक्तामर का 'भ्रा' बीजाक्षर, भ्रान्ति हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ्रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥ ॥16
भक्तामर का 'गु' बीजाक्षर, गुणकारी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥
भक्तामर का 'णास्' बीजाक्षर, अघ नाशक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णास्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥
भक्तामर का 'त्रि' बीजाक्षर, त्रिलोक तीर्थ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥
भक्तामर का 'भु' बीजाक्षर, भुवन शिखर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वश में ना आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'नम्' बीजाक्षर, नम ना हो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तपसी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, बहुमत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'लं' बीजाक्षर, विलंब हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'घ' बीजाक्षर, घनिष्ठ है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'घ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'यन्' बीजाक्षर, यंत्र रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, धर्म तिलक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'ये' बीजाक्षर, इष्ट रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ये' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'सं' बीजाक्षर, संत रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'स्त्रि' बीजाक्षर, स्त्री नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्त्रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'तास्' बीजाक्षर, त्रास हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तास्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का ‘त्रि’ बीजाक्षर, त्रि-रत्न है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं ‘त्रि’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का ‘ज’ बीजाक्षर, जयवर्धक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ज’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का ‘ग’ बीजाक्षर, गणधर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ग’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का ‘दीश्’ बीजाक्षर, दिशा रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘दीश्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का ‘व’ बीजाक्षर, जिनवाणी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘व’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का ‘र’ बीजाक्षर, निज रक्षा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘र’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का ‘ना’ बीजाक्षर, मूल नायक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ना’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का ‘थ’ बीजाक्षर, थामो तो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘थ’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का ‘मे’ बीजाक्षर, मेटे दुख आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘मे’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का ‘कं’ बीजाक्षर, कमल तरह आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘कं’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का ‘कस्’ बीजाक्षर, कष्ट हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘कस्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का ‘तान्’ बीजाक्षर, तारक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘तान्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निर्वाणी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, संवाहक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, संरक्षक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यातना हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तृषा हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'सन्' बीजाक्षर, संन्यासी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'च' बीजाक्षर, चेतन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'च' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, राही है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'तो' बीजाक्षर, तोषक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यश दाता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'थेष्' बीजाक्षर, थिरता है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'थेष्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'टम्' बीजाक्षर, टंकोत्कीर्ण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'टम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
पूर्ण चन्द्र मण्डल सम उज्ज्वल, गुण समूह तेरे।
तीन लोक को लाँघे जिनके, कण-कण में डेरे॥
मिलती जिनवर देव आपकी, उत्तम शरण जिन्हें।
जग में मनवांछित विचरण से, रोके कौन उन्हें ?॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल-मदीणं भूतप्रेतादि भयनिवारक क्लीं-महाबीजाक्षर-सहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे गुणाकर! पूर्ण चन्द्र समान उज्ज्वल आपके गुण तीन लोकों को भी लाँघ गए हैं। सो ठीक ही है, जो एक त्रिलोकीनाथ के ही आश्रय रहें उनको यथेच्छ विहार करते हुए कौन रोक सकता है? अर्थात् कोई नहीं।

गुरु मार्ग में
पीछे की हवा सम
हमें चलाते।

15.

सम्मान सौभाग्य सम्बर्द्धक-अचल मेरु के समान प्रभुता की दृढ़ता

(वसन्ततिलका)

चित्रं - किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्ग-नाभिर्-
नीतं मनागपि मनो न विकार - मार्गम्।
कल्पान्त - काल - मरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'चि' बीजाक्षर, चिरंजीव आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'चि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'त्रम्' बीजाक्षर, चित्र तुल्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्रम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'कि' बीजाक्षर, धर्म किला आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'कि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महा ध्वजा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'त्र' बीजाक्षर, त्राता है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, याद रखो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'दि' बीजाक्षर, दीपक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तेज भरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'त्रि' बीजाक्षर, त्रिजग नाथ आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥
भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दमक रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥
भक्तामर का 'शां' बीजाक्षर, शान्ति मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शां' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गरिष्ट ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥
भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, जिन-नायक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥
भक्तामर का 'भिर्' बीजाक्षर, भार हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भिर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥
भक्तामर का 'नी' बीजाक्षर, नीरज है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥
भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, अंतरंग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, ममत्व हर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥
भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, नामावली आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गीत भजन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥
भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, प्रेरक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मंगलकर आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥

भक्तामर का 'नो' बीजाक्षर, नौका है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नैन खोले आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विश्वास दे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥

भक्तामर का 'का' बीजाक्षर, कारुण्य है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'का' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रक्षा सूत्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥

भक्तामर का 'मार्' बीजाक्षर, मोक्ष मार्ग आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मार्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥

भक्तामर का 'गम्' बीजाक्षर, मोक्ष गमक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'गम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥

भक्तामर का 'कल्' बीजाक्षर, कल्याणक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'कल्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥

भक्तामर का 'पान्' बीजाक्षर, पाना है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तारण-तरण आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥

भक्तामर का 'का' बीजाक्षर, काम हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'का' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लक्ष्य मंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महक रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'रु' बीजाक्षर, रुक्ष नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, ताकत दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'च' बीजाक्षर, चमत्कारी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'च' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'लि' बीजाक्षर, लिख भी लो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, ताक तो लो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'च' बीजाक्षर, चख तो लो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'च' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'ले' बीजाक्षर, ले तो लो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ले' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नवकार रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'किम्' बीजाक्षर, किरीट है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'किम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'मन्' बीजाक्षर, मानस्तंभ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दखल न दे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'रा' बीजाक्षर, राम राज्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'द्रि' बीजाक्षर, दर्शन दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द्रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'शि' बीजाक्षर, शिखा तुल्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'ख' बीजाक्षर, खास रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ख' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'रं' बीजाक्षर, ऋषभ रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'च' बीजाक्षर, संचालक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'च' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'लि' बीजाक्षर, लोकाग्र दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, अमृत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कुमकुम है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'दा' बीजाक्षर, दान पुण्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'चित्' बीजाक्षर, चिच्च्व देव आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'चित्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
पर्वत कंपित करने वाले, प्रलय काल से भी।
सुमेरु पर्वत क्या हिल सकता, कभी जरा सा भी॥
समद अप्सराओं से ऐसे, थोड़ा भी प्रभु मन।
कभी न विकृत होता इसमें, अचरज क्या? भगवन॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं मेरुवत्–मनोबलकारक–क्लीं–महाबीजाक्षर–सहित–श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे मनोविजयन्! प्रलय की पवन से यद्यपि पर्वत कम्पित हो जाते हैं तथापि सुमेरुपर्वत लेशमात्र भी चलायमान नहीं होता, उसी प्रकार देवांगनाओं ने यद्यपि अनेक महान् देवों का चित्त चलायमान कर दिया परंतु आपका गंभीर चित्त किसी के द्वारा लेशमात्र भी चलायमान नहीं किया जा सका। इसमें आश्चर्य क्या?

संघर्ष में भी
चंदन सम सदा
सुगन्धि बाटूँ।

16.

सर्व विजयदायक-प्रभो! आप अनोखे दीपक हो

(वसन्ततिलका)

निर्धूम - वर्ति - रपवर्जित - तैल-पूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रय - मिदं प्रकटीकरोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानाम्,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'निर्' बीजाक्षर, निष्कषाय आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'निर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'धू' बीजाक्षर, दीप धूप आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'धू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मनोज्ञ है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'वर्' बीजाक्षर, वरदानी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तृप्त करे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रत्नत्रय आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, प्रतिष्ठा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'वर्' बीजाक्षर, वरण करो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'जि' बीजाक्षर, जिन श्रद्धा आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'जि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तप प्रभाव आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥

भक्तामर का 'तै' बीजाक्षर, तेज द्युति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'तै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥

भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, आतम बल आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥

भक्तामर का 'पू' बीजाक्षर, पूर्ण धर्म आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥

भक्तामर का 'रः' बीजाक्षर, ऋषभ वीर आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥

भक्तामर का 'कृत्' बीजाक्षर, कृतज्ञ है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'कृत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥

भक्तामर का 'स्नं' बीजाक्षर, स्नेहिल आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'स्नं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥

भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जात रूप आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥

भक्तामर का 'गत्' बीजाक्षर, गत-दोषः आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'गत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥

भक्तामर का 'त्र' बीजाक्षर, तीर्थंकर आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यतीश है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'मि' बीजाक्षर, मिष्ट ज्ञान आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'मि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'दम्' बीजाक्षर, दमदार है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रचलित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कवच मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'टी' बीजाक्षर, टीका है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'टी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कुंदकुंद आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'रो' बीजाक्षर, रोग हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'षि' बीजाक्षर, शिष्ट रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'षि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'गम्' बीजाक्षर, आगम है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'यो' बीजाक्षर, योद्धा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नवाचार आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'जा' बीजाक्षर, जातक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'तु' बीजाक्षर, तोषक है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'तु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मुमुक्षु है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'रु' बीजाक्षर, रूपल है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'ताम्' बीजाक्षर, तृष्णा हर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ताम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'च' बीजाक्षर, चतुर भजे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'च' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'लि' बीजाक्षर, मुक्तावली आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, ताकत दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'च' बीजाक्षर, चैतन्य है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'च' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'ला' बीजाक्षर, लब्धि है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ला' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'नाम्' बीजाक्षर, नाम करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नाम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'दी' बीजाक्षर, दीप-ज्योति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'पो' बीजाक्षर, पोषक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, परम गुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रक्ष रक्ष आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'स्त्व' बीजाक्षर, स्वस्तिक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्त्व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मस्तक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'सि' बीजाक्षर, शीश धरो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, नमस्कृत्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'थ' बीजाक्षर, स्थापक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'थ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जगत्-नाथ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'गत्' बीजाक्षर, गत्-रोषा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रपूरक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'का' बीजाक्षर, कनिष्ट नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'का' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'शः' बीजाक्षर, शासक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
धूम्र बाति बिन तेल ज्योति बिन, अजब उजाले हो।
फिर भी त्रय जग करो प्रकाशित, जगत उजाले हो॥
जिसे आँधियाँ बुझा न पाएँ, कोई न जान सके।
आप अलौकिक दीपक ऐसे, 'जिन' को शीश झुके॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदस-पुव्वीणं त्रैलोक्य-लोकवशकारक-क्लीं-महा-बीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे त्रिभुवन दीपक! साधारण दीपक तो तेल और बाती से जलता है, धुआँ देता है, थोड़े से स्थान में प्रकाश देता है और वायु के झौंके से बुझ जाता है परन्तु आप ऐसे अनोखे दीपक हैं कि न तो आपको तेल और बाती की आवश्यकता होती है, न आपसे काला धुआँ निकलता है और न पर्वतों को हिला देने वाली वायु आपकी ज्योति बुझा सकती है। आप तीनों लोकों को प्रकाशित करते हैं।

पर पीड़ा से
अपनी करुणा सो
सक्रिय होती।

17.

सर्वरोग निरोधक-सूर्य से भी अधिक महिमावन्त ज्ञान-भानु

(वसन्ततिलका)

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्- जगन्ति।
नाम्भोधरोदर - निरुद्ध - महा- प्रभावः,
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र ! लोके॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'नास्' बीजाक्षर, नासा है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'नास्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'तं' बीजाक्षर, निर्मित है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'तं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, ज्ञायक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'दा' बीजाक्षर, दाह हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'चि' बीजाक्षर, चिराग है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'चि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'दु' बीजाक्षर, दुख हरता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, परोपकारी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'या' बीजाक्षर, विनायक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'सि' बीजाक्षर, शिक्षा-प्रद आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'सि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नमोऽस्तु रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का 'रा' बीजाक्षर, रागी ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का 'हु' बीजाक्षर, बहुमत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'हु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का 'गम्' बीजाक्षर, गौ रक्षक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का 'यः' बीजाक्षर, यज्ञोपवीत आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का 'स्पष्' बीजाक्षर, स्पष्ट है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्पष्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का 'टी' बीजाक्षर, टीस हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'टी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कल्पवृक्ष आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का 'रो' बीजाक्षर, रोमांचित आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का 'षि' बीजाक्षर, शिशु रक्षक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'षि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, सर्वौषध आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हाय हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥

भक्तामर का 'सा' बीजाक्षर, साक्षी है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥

भक्तामर का 'यु' बीजाक्षर, युगाधार आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'यु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥

भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गणनायक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥

भक्तामर का 'पज्' बीजाक्षर, प्रजापाल आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पज्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥

भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जय जय हो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥

भक्तामर का 'गन्' बीजाक्षर, सुगन्ध है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'गन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तिलक मंत्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥

भक्तामर का 'नाम्' बीजाक्षर, नाम चक्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नाम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥

भक्तामर का 'भो' बीजाक्षर, भोगी ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥

भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, धड़क रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥

भक्तामर का 'रो' बीजाक्षर, रोके ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दर्द हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रत्न वृष्टि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥

भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, नित्य नियम आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥

भक्तामर का 'रुद्' बीजाक्षर, रुदन हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रुद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥

भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, धमाल है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मातृका है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥

भक्तामर का 'हा' बीजाक्षर, हस्तकमल आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'हा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥

भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रसन्न है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥

भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, भामाशाह आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥

भक्तामर का 'वः' बीजाक्षर, वशीकरण आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥

भक्तामर का 'सूर्' बीजाक्षर, सूक्ष्म नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सूर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥

भक्तामर का 'या' बीजाक्षर, यागमण्डल आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तिलक दान आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'शा' बीजाक्षर, शास्त्र ज्ञान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'यि' बीजाक्षर, ईश रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥ ॥47
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महायज्ञ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'हि' बीजाक्षर, हितकारक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'हि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, मंजूषा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'सि' बीजाक्षर, सिर शोभा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मुख्य तत्त्व आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'नीन्' बीजाक्षर, नीति है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नीन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'द्र' बीजाक्षर, द्रव्य भाव आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'लो' बीजाक्षर, लोकपाल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'के' बीजाक्षर, केसरिया आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'के' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
अस्त कभी ना होता जिसको, राहू डस न सके।
जिसके महा प्रभावों को भी, बादल ढँक न सके॥
एक साथ त्रय जग दिखलाते, जग में हो कैसे ?
अधिक सूर्य से महिमा वाले, हो मुनीन्द्र! ऐसे॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहानिमित्त-कुसलाणं।
जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंग-महानिमित्त-कुसलाणं पापान्धकार-निवारक-क्लीं-महाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ—हे मुनिनाथ! आपकी महिमा सूर्य से भी अधिक है क्योंकि सूर्य संध्या के समय अस्त हो जाता है परन्तु आप सदा प्रकाशित रहते हैं। सूर्य को राहु ग्रस लेता है परन्तु आज तक वह आपका स्पर्श तक नहीं कर सका। सूर्य सीमित क्षेत्र को प्रकाशित करता है परन्तु आप समस्त लोक को एक साथ प्रकाशित करते हैं और सूर्य के प्रकाश को मेघ ढक लेते हैं परन्तु आपके प्रकाश (ज्ञान) को कोई भी नहीं ढक सकता है।

सिर में चाँद
अच्छा निकल आया
सूर्य न उगा।

18.

<u>शत्रु-सैन्य-स्तम्भक-अद्भुत मुखचन्द्र</u>

(वसन्ततिलका)

नित्योदयं दलित - मोह - महान्धकारम्,
गम्यं न राहु - वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज - मनल्पकान्ति,
विद्योतयज्-जगदपूर्व-शशाङ्क-बिम्बम्॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'नित्' बीजाक्षर, नित्यानंद आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'नित्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'यो' बीजाक्षर, योजक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'यो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दक्ष मंत्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'यम्' बीजाक्षर, यमरोधि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'यम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दामन है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'लि' बीजाक्षर, लिप्सा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'लि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तितिक्षा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'मो' बीजाक्षर, मोचक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हारक है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मालय है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥

भक्तामर का 'हान्' बीजाक्षर, हानक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'हान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥

भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, धाड़क है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥

भक्तामर का 'का' बीजाक्षर, कथक रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'का' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥

भक्तामर का 'रम्' बीजाक्षर, रमण छंद आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥

भक्तामर का 'गम्' बीजाक्षर, गमक रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'गम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥

भक्तामर का 'यम्' बीजाक्षर, यमनी है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'यम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, निकष रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥

भक्तामर का 'रा' बीजाक्षर, राज-पाठ आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥

भक्तामर का 'हु' बीजाक्षर, हुति है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'हु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विदिश रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का ‘द’ बीजाक्षर, दरिद्र हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं ‘द’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का ‘नस्’ बीजाक्षर, नष्ट न हो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘नस्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का ‘य’ बीजाक्षर, यमवत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘य’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का ‘न’ बीजाक्षर, नमसित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘न’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का ‘वा’ बीजाक्षर, वागर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘वा’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का ‘रि’ बीजाक्षर, रिष्ट इष्ट आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘रि’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का ‘दा’ बीजाक्षर, दान रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘दा’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का ‘नाम्’ बीजाक्षर, नामी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘नाम्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का ‘वि’ बीजाक्षर, विश्राम है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘वि’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का ‘भ्रा’ बीजाक्षर, जिन भ्राता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘भ्रा’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का ‘ज’ बीजाक्षर, जग-मग है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ज’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का ‘ते’ बीजाक्षर, तेजस्वी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ते’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तंत्री है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वसंत है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥

भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मुक्ता है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥

भक्तामर का 'खाव्' बीजाक्षर, ख्याति दे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'खाव्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥

भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, ज्ञान ज्योति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मुखर रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥

भक्तामर का 'नल्' बीजाक्षर, नलिन रूप आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नल्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥

भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पंगु नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥

भक्तामर का 'कान्' बीजाक्षर, कान्तिमान आहा।
ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'कान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तीर्थ मंत्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विध्वंस हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥

भक्तामर का 'द्यो' बीजाक्षर, द्योतक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द्यो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, जिन तोयम् आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'यज्' बीजाक्षर, यजमान है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यज्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जटिल नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गगन रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दर्पण है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'पूर्' बीजाक्षर, पूरित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पूर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वास्तविक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, शल्य हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'शां' बीजाक्षर, शाब्दिक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शां' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कांचन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'बिम्' बीजाक्षर, बिम्ब तुल्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बिम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥

भक्तामर का 'बं' बीजाक्षर, बन्धक ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'बं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
महा मोह का अंध विनाशक, रहता उदित सदा।
कर न सके राहू भी कवलित, ढके न मेघ कदा॥
कान्तिमान मुखकमल आपका, जगत प्रकाशक जो।
है अपूर्व वह चन्द्रबिम्ब सा, सदा सुशोभित हो॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, भक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वईड्ढि–पत्ताणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्व–इड्ढि–पत्ताणं चन्द्रवत्–सर्वलोको–द्योतनकारक–क्लीं–महाबीजाक्षरसहित–श्रीवृषभ–जिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ—हे चन्द्रवदन! महाकान्तिमान आपका मुखकमल अपूर्व अद्‌भुत चन्द्रमण्डल की तरह शोभित हो जाता है क्योंकि वह सदा उदीयमान रहता है (कभी अस्त नहीं होता), मोह अन्धकार को नष्ट करता है, राहु और बादलों से कभी छिपता नहीं है और समस्त जगत् को प्रकाशित करता है।

आलोचन से
लोचन खुलते हैं
सो स्वागत है।

19.

उच्चाटनादि रोधक-सूर्य चन्द्र की अनुपयोगिता

(वसन्ततिलका)

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दु- दलितेषु तमः -सु नाथ!
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनी जीव-लोके,
कार्यं कियज्जल - धरै-र्जल - भार-नम्रैः॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'किम्' बीजाक्षर, किसलय है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'किम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'शर्' बीजाक्षर, शरणम् है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विमद रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'री' बीजाक्षर, रीता ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'री' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'षु' बीजाक्षर, शुष्क नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'षु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, शास्वत है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'शि' बीजाक्षर, शिवम् रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'नाह' बीजाक्षर, नाहर है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नाह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निस्वार्थ आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विस्मय है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥

भक्तामर का 'वस्' बीजाक्षर, वसुन्धरा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वाचक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥

भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, ताम्र-पत्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥

भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, वात्सल्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥

भक्तामर का 'युष्' बीजाक्षर, यशोधरा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'युष्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥

भक्तामर का 'मन्' बीजाक्षर, मंत्रणा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥

भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मुख्य रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥

भक्तामर का 'खेन्' बीजाक्षर, खेद नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'खेन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥

भक्तामर का 'दु' बीजाक्षर, दुःख नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दर्द नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'लि' बीजाक्षर, जैन लिंग आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'लि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, धर्म तेज आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'षु' बीजाक्षर, सुस्वर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'षु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तपस्यती आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'मः' बीजाक्षर, मुख्यमार्ग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'सु' बीजाक्षर, सुभाषित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, नामाक्षर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'थ' बीजाक्षर, तीर्थधाम आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'थ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'निष्' बीजाक्षर, निष्कंटक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'निष्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'पन्' बीजाक्षर, पनघट है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नियुक्ति है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'शा' बीजाक्षर, शालि रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'लि' बीजाक्षर, जिन लीला आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'लि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वरद रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नारायण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥
भक्तामर का 'शा' बीजाक्षर, शान्ति रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥
भक्तामर का 'लि' बीजाक्षर, लालन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥
भक्तामर का 'नी' बीजाक्षर, निर्विकार आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥
भक्तामर का 'जी' बीजाक्षर, जीव तत्त्व आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विपुल भक्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥
भक्तामर का 'लो' बीजाक्षर, लौकान्तिक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥
भक्तामर का 'के' बीजाक्षर, कैवल्य है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'के' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥
भक्तामर का 'कार्' बीजाक्षर, कारक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कार्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥
भक्तामर का 'यम्' बीजाक्षर, यम जेता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'कि' बीजाक्षर, किशोर है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'कि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'यज्' बीजाक्षर, यजनम है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यज्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जय-घोष आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लावण्य है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, ध्वजारोहण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'रैर्' बीजाक्षर, रहस्य है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रैर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जग मंगल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लाल कमल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, भाष्यम है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रथ यात्रा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नन्दा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'म्रैः' बीजाक्षर, मनवांछित आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म्रैः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
जैसे भू पर खड़ी फसल का, पूरा काम हुआ।
जल से भरे झुके मेघों का, तब क्या अर्थ हुआ॥
ऐसे ही मुखचन्द्र आपका, जब सब तम नाशे।
तो फिर दिन में सूर्य रात में, क्या हो चन्दा से ?॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं सकलकालुष्य–दोषनिवारक–क्लीं–महा–बीजाक्षरसहित–श्रीवृषभ–जिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे त्रिलोकीनाथ! जिस प्रकार धान्य के पक जाने पर जल से भरे हुए बादलों का बरसना व्यर्थ है, उसी प्रकार आपके मुखचन्द्र द्वारा जब जनता का मोह–अज्ञान–अन्धकार नष्ट हो गया तो दिन के समय सूर्य और रात्रि के समय चन्द्रमा से कुछ प्रयोजन नहीं रहा।

सरोवर का
अन्तरंग छुपा क्यों ?
तरंग वश।

20.

संतान-सम्पत्ति-सौभाग्यप्रसाधक-महामणियों जैसा ज्ञान

(वसन्ततिलका)

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशम्,
नैवं तथा हरि - हरादिषु नायकेषु।
तेजो महा मणिषु याति यथा महत्त्वम्,
नैवं तु काच - शकले किरणाकुलेऽपि॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'ज्ञा' बीजाक्षर, ज्ञान ध्यान आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'ज्ञा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'नम्' बीजाक्षर, ओम् नमः आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यश दायक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'था' बीजाक्षर, भक्ति थाल आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'था' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'त्व' बीजाक्षर, तपोधनी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'यि' बीजाक्षर, इष्ट सिद्धि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'यि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विश्व शान्ति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, भारतीय आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तारणहार आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥

भक्तामर का 'कृ' बीजाक्षर, कृतज्ञ है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'कृ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥

भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, तात्पर्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विश्वरूप आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥

भक्तामर का 'का' बीजाक्षर, कान्तिमान आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'का' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥

भक्तामर का 'शम्' बीजाक्षर, शम् दम् है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥

भक्तामर का 'नै' बीजाक्षर, नैयायिक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥

भक्तामर का 'वम्' बीजाक्षर, वमन हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तनिष्क न आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥

भक्तामर का 'था' बीजाक्षर, थकान हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'था' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥

भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हार्दिक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥

भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, रिष्ट हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हर दम है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'रा' बीजाक्षर, रचित ग्रन्थ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'दि' बीजाक्षर, देहातीत आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'षु' बीजाक्षर, शुद्धातम आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'षु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, निरुपम है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यशस्वी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'के' बीजाक्षर, कर्म हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'के' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'षु' बीजाक्षर, सुव्रत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'षु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तेजोमय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'जो' बीजाक्षर, जयमाला आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मुक्तक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'हा' बीजाक्षर, हितसाधक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'हा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मूलमंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥
भक्तामर का 'णि' बीजाक्षर, क्षमावाणी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥
भक्तामर का 'षु' बीजाक्षर, शुभाशीष आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'षु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥
भक्तामर का 'या' बीजाक्षर, यति राजा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, त्यौहार है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यश ख्याति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥
भक्तामर का 'था' बीजाक्षर, मरुस्थल ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'था' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महा जैन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥
भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, राज हंस आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥
भक्तामर का 'त्वम्' बीजाक्षर, तुंग मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्वम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥
भक्तामर का 'नै' बीजाक्षर, निजरस भर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥
भक्तामर का 'वम्' बीजाक्षर, विद्याधर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'तु' बीजाक्षर, तुष्ट धर्म आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'तु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45॥
भक्तामर का 'का' बीजाक्षर, केवली है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'का' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46॥
भक्तामर का 'च' बीजाक्षर, धर्म चक्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'च' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47॥
भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, सम्यक् पथ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कर्मठ है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49॥
भक्तामर का 'ले' बीजाक्षर, लाभार्थी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ले' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50॥
भक्तामर का 'कि' बीजाक्षर, भक्ति किरण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, राज भोग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52॥
भक्तामर का 'णा' बीजाक्षर, निवारण है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53॥
भक्तामर का 'कु' बीजाक्षर, कुपथ नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54॥
भक्तामर का 'ले' बीजाक्षर, लेख काव्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ले' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55॥
भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, पिष्ट नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
झिलमिल-झिलमिल मणियों में ज्यों, अतिशय चमक रही।
काँच खण्ड की किरणों में त्यों, चमचम दमक नहीं॥
ऐसे अनन्तज्ञान आप में, हे प्रभु! शोभित हो।
वैसे तुम से पर देवों में, कभी न ज्योतित हो॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र-ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं।
जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं केवलज्ञान-प्रकाशक-लोकालोक-स्वरूपी-क्लीं-महाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ-हे सर्वज्ञ! जैसा पूर्ण ज्ञान आप में विद्यमान है वैसा हरि-हर आदि अन्य किसी में नहीं है। जिस तरह की महत्वपूर्ण कान्ति रत्नों में होती है वैसी कान्ति चमकीले काँच के टुकड़े में नहीं मिलती।

जिस बोध में
लोकालोक तैरते
उसे नमन।

21.

<u>सर्वसौख्य-सौभाग्य-साधक-अलंकार पूर्वक स्तुति</u>

(वसन्ततिलका)

मन्ये वरं हरि - हरा - दय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'मन्' बीजाक्षर, मंथन है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'मन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'ये' बीजाक्षर, यशस्वी है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ये' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वसति है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'रम्' बीजाक्षर, रम्य-काव्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हास्य नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, रिक्त नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, प्रातिहार्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'रा' बीजाक्षर, राजा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दातृ है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, एकत्व है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥

भक्तामर का 'ये' बीजाक्षर, ऐश्वर्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ये' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वामा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥

भक्तामर का 'दृष्' बीजाक्षर, दृष्टान्त आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दृष्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥

भक्तामर का 'टा' बीजाक्षर, टंकार है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'टा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥

भक्तामर का 'दृष्' बीजाक्षर, दृष्ट रूप आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दृष्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥

भक्तामर का 'टे' बीजाक्षर, ठेस हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'टे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥

भक्तामर का 'षु' बीजाक्षर, सुमंगल है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'षु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥

भक्तामर का 'ये' बीजाक्षर, योद्धा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ये' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥

भक्तामर का 'षु' बीजाक्षर, सुभिक्ष करे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'षु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥

भक्तामर का 'हृ' बीजाक्षर, हृदय वास आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'हृ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दर्शित है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'यम्' बीजाक्षर, यम अंतक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'त्व' बीजाक्षर, तरणि है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'यि' बीजाक्षर, ईश्वर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'तो' बीजाक्षर, जिन-तोरण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'ष' बीजाक्षर, सरलमंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'मे' बीजाक्षर, मेला है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, त्रिलोक तीर्थ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'किम्' बीजाक्षर, किम्वत ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'किम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'वी' बीजाक्षर, विश्लेषित आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'क्षि' बीजाक्षर, छिद न सके आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्षि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तेजोवत् आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, निर्जित है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भागीरथ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विकासक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, ताली है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'भु' बीजाक्षर, भुक्ति मुक्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विमल करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'ये' बीजाक्षर, युक्ति दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ये' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नम तो लो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'नान्' बीजाक्षर, नाटक ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'यः' बीजाक्षर, यशोगान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'कश्' बीजाक्षर, कशक हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कश्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'चिन्' बीजाक्षर, चिन्मय है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'चिन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मदन हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'नो' बीजाक्षर, नौका है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हर्षण है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रक्षा कवच आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तिरवाता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, नाविक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'थ' बीजाक्षर, स्थान दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'थ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भक्षक ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'वान्' बीजाक्षर, भगवान् है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तर्क हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'रे' बीजाक्षर, रेचक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, पिण्ड हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
पर देवों के दर्शन कर मैं, उनको श्रेष्ठ कहूँ।
जिन्हें देख बस नाथ आप में, मैं संतोष धरूँ॥
प्रभु तेरा दर्शन यह मुझको, क्या-क्या लाभ करे ?
परभव में भी भू पर कोई, मेरा मन न हरे॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र-ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं।
जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्ण-समणाणं सर्वदोषहर-शुभदर्शक-क्लीं-महा-बीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ-हे लोकोत्तम! दूसरे देवों के देखने से तो आप में संतोष होता है यह लाभ है, परन्तु आपके दर्शन कर लेने के बाद अन्य हरि-हर आदि देवों की ओर चित्त नहीं जाता अर्थात् मृत्यु के बाद भी अन्य देवों का दर्शन नहीं करना चाहता।

गुरु ने मुझे
प्रकट कर दिया
दीया दे दिया।

22.

भूत-पिशाचादि-बाधा निरोधक-अपूर्व माता

(वसन्ततिलका)

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिम्,
प्राच्एव दिग् जनयति स्फुरदंशु-जालम् ॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'स्त्री' बीजाक्षर, स्त्री नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'स्त्री' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1 ॥

भक्तामर का 'णाम्' बीजाक्षर, प्रणाम है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'णाम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2 ॥

भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, श्राप हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3 ॥

भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, तारुण्य है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4 ॥

भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निकुंज है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5 ॥

भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, शरण धाम आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6 ॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तुंग करे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7 ॥

भक्तामर का 'शो' बीजाक्षर, भव शोषक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8 ॥

भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, ज्येष्ट मंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, न्याय मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥
भक्तामर का ' यन्' बीजाक्षर, मोक्षयंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, नवोतिलक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥
भक्तामर का 'पु' बीजाक्षर, पुराण है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥
भक्तामर का 'त्रान्' बीजाक्षर, त्राण हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्रान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥
भक्तामर का 'नान्' बीजाक्षर, नाना रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥
भक्तामर का 'या' बीजाक्षर, यशमाला आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥
भक्तामर का 'सु' बीजाक्षर, सुन्दर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥
भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, तम नाशी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥
भक्तामर का 'त्व' बीजाक्षर, तमस हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥
भक्तामर का 'दु' बीजाक्षर, दूर दृष्टि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पंचपरम आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥

भक्तामर का 'मम्' बीजाक्षर, नम्रता है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥

भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जैन तिलक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नवीन है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥

भक्तामर का 'नी' बीजाक्षर, नीति मंत्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥

भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रथम मंत्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥

भक्तामर का 'सू' बीजाक्षर, सुरक्षा दे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥

भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, तंत्र मंत्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥

भक्तामर का 'सर्' बीजाक्षर, सरस करे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥

भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, वर्धमान आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥

भक्तामर का 'दि' बीजाक्षर, दिगम्बर है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥

भक्तामर का 'शो' बीजाक्षर, शोभनीय आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, जिन दर्शन आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥

भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, धर्मायतन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, शुद्ध तीर्थ आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥

भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, जिन-भाषा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥

भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, नियुक्त है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥

भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, समरस है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥

भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हस्ताक्षर आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥

भक्तामर का 'स्र' बीजाक्षर, स्रोत बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'स्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥

भक्तामर का 'रश' बीजाक्षर, रहस्य है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रश' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥

भक्तामर का 'मिम्' बीजाक्षर, मित्र तुल्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मिम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥

भक्तामर का 'प्राच्' बीजाक्षर, प्राचार्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'प्राच्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥

भक्तामर का 'ये' बीजाक्षर, ऐतिहासिक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ये' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, व्यापक आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'दिग्' बीजाक्षर, दिगम्बरी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दिग्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जनक मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, निराकार आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, योग मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तीर्थंकर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'स्फु' बीजाक्षर, स्फूर्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्फु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रौरव न आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'दं' बीजाक्षर, दण्ड हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'शु' बीजाक्षर, शुभ लाभ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'जा' बीजाक्षर, जय रथ है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'लम्' बीजाक्षर, अवलंबन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
जगमग-जगमग तारे गण तो, धारें सभी दिशा।
पर तेजस्वी सूरज तो बस, जन्मे पूर्व दिशा॥
यूँ ही सौ-सौ सुत को जनती, सौ-सौ नारी माँ।
पर प्रभु सम अनुपम सुत जनती, कहीं न एसी माँ॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र-ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं।
जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास-गामीणं अद्‌भुत-गुणसंपन्न-क्लीं-महाबीजाक्षर-सहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे महीतिलक! जिस प्रकार सूर्य को पूर्व दिशा ही उत्पन्न करती है अन्य दिशाएँ नहीं, उसी प्रकार एक आपकी ही माता एसी हैं जो आप जैसे पुत्ररत्न को पैदा कर सकीं, अन्य किसी माता को ऐसे पुत्ररत्न को पैदा करने का सौभाग्य उपलब्ध नहीं होता।

टिमटिमाते
दीप को भी पीठ दे
भागती रात।

23.

<u>प्रेतबाधा निवारक-मोक्षमार्ग दर्शक</u>

(वसन्ततिलका)

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्य - गुपलभ्य जयन्ति मृत्युम्,
नान्यःशिवःशिव-पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'त्वा' बीजाक्षर, त्वरा करे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, मार्तण्ड है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, माधव है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'नन्' बीजाक्षर, ज्ञानवान आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तिष्ठ-तिष्ठ आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मुख्य मार्ग आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, निर्देशक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'यः' बीजाक्षर, यशोमंत्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'यः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पंकज है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रथिक रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का 'मम्' बीजाक्षर, मन्द नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का 'पु' बीजाक्षर, पुलकित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का 'मान्' बीजाक्षर, मानक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, समकित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, मर्मज्ञ है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का 'दित्' बीजाक्षर, दीक्षा दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दित्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यशोगीत आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का 'वर्' बीजाक्षर, वरदाता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का 'ण' बीजाक्षर, जैन निगम आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ण' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मार्मिक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का ‘म’ बीजाक्षर, मंजूषा आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं ‘म’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥

भक्तामर का ‘लम्’ बीजाक्षर, लघु नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘लम्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥

भक्तामर का ‘त’ बीजाक्षर, तरकीब है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘त’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥

भक्तामर का ‘म’ बीजाक्षर, मोक्ष रूप आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘म’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥

भक्तामर का ‘सः’ बीजाक्षर, सहभागी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘सः’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥

भक्तामर का ‘पु’ बीजाक्षर, पुष्कर है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘पु’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥

भक्तामर का ‘रस्’ बीजाक्षर, रस-राजा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘रस्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥

भक्तामर का ‘तात्’ बीजाक्षर, ताण्डव हर आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘तात्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥

भक्तामर का ‘त्वा’ बीजाक्षर, तन्मय है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘त्वा’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥

भक्तामर का ‘मे’ बीजाक्षर, मेघनाद आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘मे’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥

भक्तामर का ‘व’ बीजाक्षर, वक्र नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘व’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥

भक्तामर का ‘सम्’ बीजाक्षर, सम्मुख है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘सम्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यतिराजा आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'गु' बीजाक्षर, गुमे नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, जैन पंथ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'लभ्' बीजाक्षर, उपलब्धि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लभ्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यशोमार्ग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, यथाजात आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'यन्' बीजाक्षर, मुक्तियान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, धर्म तिलक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'मृत्' बीजाक्षर, मृत्युंजय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मृत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'युम्' बीजाक्षर, युगल मार्ग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'युम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'नान्' बीजाक्षर, नामित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'यः' बीजाक्षर, विरचित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'शि' बीजाक्षर, धर्म-शिविर आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'शि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45॥
भक्तामर का 'वः' बीजाक्षर, जिनवाणी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46॥
भक्तामर का 'शि' बीजाक्षर, जिन शिक्षा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, अशोक वृक्ष आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पवित्र दशा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49॥
भक्तामर का 'दस्' बीजाक्षर, दस धर्म आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यथोचित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51॥
भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मुक्ति-मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52॥
भक्तामर का 'नीन्' बीजाक्षर, नूतन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नीन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53॥
भक्तामर का 'द्र' बीजाक्षर, द्रवित रहे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54॥
भक्तामर का 'पन्' बीजाक्षर, पंचमगति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55॥
भक्तामर का 'थाः' बीजाक्षर, थावर ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'थाः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
परम पुरुष तुमको मुनि मानें, निर्मल नेता हो।
सूरज जैसे आप सुनहरे, तिमिर विजेता हो॥
बस तुमको ही सम्यक् पाकर, मृत्यु पर जय हो।
हे मुनीन्द्र! शिव मोक्ष मोक्षपथ, तुमसे अन्य न हो॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसी-विसाणं सहस्र-नामाधीश्वर-क्लीं-महाबीजाक्षर-सहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे योगीन्द्र! मुनिजन आपको परमपुरुष, कर्ममल रहित होने से निर्मल, मोहान्धकार का नाशक होने से सूर्य के समान तेजस्वी, आपकी प्राप्ति से मृत्यु न होने के कारण मृत्युञ्जय तथा आपके अतिरिक्त कोई दूसरा निरुपद्रव मोक्ष का मार्ग नहीं होने से आपको ही मोक्ष का मार्ग मानते हैं।

पक्षी कभी भी दूसरों के नीड़ों में घुसते नहीं।

24.

<u>शिरोरोग शामक-प्रभु के पर्यायवाची नाम</u>

(वसन्ततिलका)

त्वा-मव्ययं विभु-मचिन्त्य-मसंख्य-माद्यम्,
ब्रह्माणमीश्वर - मनन्त - मनङ्ग - केतुम्।
योगीश्वरं विदित - योग-मनेक-मेकम्,
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'त्वा' बीजाक्षर, वाशक है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥
भक्तामर का 'मव्' बीजाक्षर, मिष्ट मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मव्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यशस्य है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥
भक्तामर का 'यम्' बीजाक्षर, यमविजयी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, वरमाला आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥
भक्तामर का 'भु' बीजाक्षर, भू-देवाः आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मूल मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥
भक्तामर का 'चिन्त्' बीजाक्षर, चिन्तामणि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'चिन्त्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यथारूप आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मदमर्दक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥

भक्तामर का 'संख्' बीजाक्षर, संख्यातीत आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'संख्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यतिधर्मः आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥

भक्तामर का 'माद्' बीजाक्षर, मधुरयम् आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'माद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥

भक्तामर का 'यम्' बीजाक्षर, यमराजा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'यम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥

भक्तामर का 'ब्रह' बीजाक्षर, ब्रह्मा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ब्रह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥

भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, महेश है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥

भक्तामर का 'ण' बीजाक्षर, निरमूलन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ण' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥

भक्तामर का 'मीश्' बीजाक्षर, मीमांशा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मीश्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विज्ञप्ति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, आत्मरमण आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महाकुलीन् आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'नन्' बीजाक्षर, न्यायसूत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तीर्थधाम आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महाभक्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'नं' बीजाक्षर, नंदन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गुणनायक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'के' बीजाक्षर, केवल है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'के' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'तुम्' बीजाक्षर, अतुल्य है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तुम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'यो' बीजाक्षर, उपयोगी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'गीश्' बीजाक्षर, जिन-गीता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गीश्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वन्दारु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'रम्' बीजाक्षर, तत्त्व-रमण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विजयी है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'दि' बीजाक्षर, दिशा-बोध आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तनुल छंद आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'यो' बीजाक्षर, युवराजा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गुणमाला आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मनमयूर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'ने' बीजाक्षर, दिव्यनाद आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ने' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, काव्य-छन्द आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'मे' बीजाक्षर, मूल्यवान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'कम्' बीजाक्षर, कल्मष हर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'ज्ञा' बीजाक्षर, ज्ञान गंगा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज्ञा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, निरास्रव आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'स्व' बीजाक्षर, स्वाहा है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'रू' बीजाक्षर, रुचिकर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, प्रयोजन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मौन मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, अमोघ है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'लम्' बीजाक्षर, लब्धि मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रत्याख्यान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विज्ञान है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'दन्' बीजाक्षर, दीर्घ मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तरंग है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'सन्' बीजाक्षर, संक्रांति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'तः' बीजाक्षर, तपन हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
अव्यय अचिन्त्य असंख्य विभु हो, आदिम ईश्वर हो।
अनन्त ब्रह्मा काम-केतु हो, तुम योगीश्वर हो॥
विदित योग शुचि ज्ञान स्वरूपी, एक अनेक तुम्हीं।
संत जनों ने यथा आपकी, नामावली कहीं॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठि-विसाणं मनोवांछित-फलदायक-क्लीं-महा-बीजाक्षर-सहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे गुणार्णव! गणधराधिक आपको आत्मा का कभी नाश न होने से **अव्यय** (अविनाशी), ज्ञान द्वारा सर्वव्यापक **विभु**, पूर्णरूप से न जान सकने रूप **अचिन्त्य**, जिसके गुण न गिने जा सकने से **असंख्य**, समस्त पूज्य देवों में प्रथम **आद्य**, मोक्षमार्ग के बनाने वाला **ब्रह्मा**, समस्त आत्मविभूति के स्वामी या तीन लोक के नाथ **ईश्वर**, जिसका अंत न हो ऐसे **अनन्त**, अनुपम सुन्दर **अनङ्गकेतु**, आत्मशुद्धि की विधि जानने वाले **योगीश्वर**, गुणों की अपेक्षा **अनेक**, आत्मा की अपेक्षा **एक**, **ज्ञानरूप** और **पूर्ण निर्मल** कहते हैं।

देखा ध्यान में
कोलाहल मन का
नींद ले रहा।

25.

<u>**दृष्टिदोष निरोधक-बुद्ध शिव शंकर आप ही हो**</u>

(वसन्ततिलका)

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित - बुद्धि-बोधात्,
त्वं शङ्करोऽसि भुवन-त्रय- शङ्करत्वात्।
धातासि धीर! शिव-मार्ग विधेर्विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'बुद्' बीजाक्षर, स्वयं बुद्ध आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'बुद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'धस्' बीजाक्षर, धृष्टा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'धस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'त्व' बीजाक्षर, त्वर कर लो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'मे' बीजाक्षर, मृदुल है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वर तो लो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विकसित है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'बु' बीजाक्षर, बुद्धिमान आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'बु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'धार्' बीजाक्षर, धवल करे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'धार्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'चि' बीजाक्षर, चित्सिक है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'चि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तक्षक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥

भक्तामर का 'बुद्' बीजाक्षर, बुभुक्षु न आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'बुद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥

भक्तामर का 'धि' बीजाक्षर, बोधिज्ञान आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'धि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥

भक्तामर का 'बो' बीजाक्षर, बोधित है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'बो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥

भक्तामर का 'धात्' बीजाक्षर, विधाता है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'धात्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥

भक्तामर का 'त्वम्' बीजाक्षर, ताढ़ नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्वम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥

भक्तामर का 'शं' बीजाक्षर, शंकित ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कल्पित ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥

भक्तामर का 'रो' बीजाक्षर, रोचक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥

भक्तामर का 'सि' बीजाक्षर, सिद्धि करे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥

भक्तामर का 'भु' बीजाक्षर, भुजंग ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वर्णन है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नंदी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22 ॥
भक्तामर का 'त्र' बीजाक्षर, त्रात मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23 ॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यशगाथा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24 ॥
भक्तामर का 'शं' बीजाक्षर, शंकर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25 ॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कलंक हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26 ॥
भक्तामर का 'रत्' बीजाक्षर, रत्न-महल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27 ॥
भक्तामर का 'वात्' बीजाक्षर, वात् हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वात्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28 ॥
भक्तामर का 'धा' बीजाक्षर, धारणेन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29 ॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, दुख-तारक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30 ॥
भक्तामर का 'सि' बीजाक्षर, सिद्ध करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31 ॥
भक्तामर का 'धी' बीजाक्षर, धीरज दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32 ॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रत्नाकर आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'शि' बीजाक्षर, शिक्षाप्रद आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वास्वतिक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'मार्' बीजाक्षर, मार्जक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मार्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गन्धोदक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विक्रिया है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'धेर्' बीजाक्षर, ध्येय रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धेर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विराट है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'धा' बीजाक्षर, धार्मिक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'नाद्' बीजाक्षर, नामी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नाद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'व्यक्' बीजाक्षर, व्यक्त रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व्यक्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, तमस् हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'त्व' बीजाक्षर, त्यागिन है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45॥
भक्तामर का 'मे' बीजाक्षर, मेधावी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विचित्र है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47॥
भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भजन मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, ग्रन्थ ज्योति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49॥
भक्तामर का 'वन्' बीजाक्षर, वनवासी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50॥
भक्तामर का 'पु' बीजाक्षर, पुष्पित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51॥
भक्तामर का 'रु' बीजाक्षर, रुष्ट नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52॥
भक्तामर का 'षोत्' बीजाक्षर, शोषण ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'षोत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तोषित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54॥
भक्तामर का 'मो' बीजाक्षर, मोक्ष मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55॥
भक्तामर का 'सि' बीजाक्षर, जैन सिन्धु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
सुर अर्चित हो केवलज्ञानी, अतः बुद्ध तुम हो।
त्रय जग को सुख देने वाले, सो शंकर तुम हो॥
मोक्षमार्ग के आदि प्रवर्तक, धीर! विधाता हो।
तुम ही हो भगवन् पुरुषोत्तम, तुमरी जय-जय हो॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र-ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं।
जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्ग-तवाणं षड्दर्शन-पारंगत-क्लीं-महाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ-हे पुरुषोत्तम! आप ही **बुद्ध** है क्योंकि आपकी बुद्धि या ज्ञान गणधर आदि विद्वानों तथा इन्द्र आदि से पूजनीय है। आप ही यथार्थ **शङ्कर** हैं क्योंकि आप अपनी प्रवृत्ति तथा उपदेश से तीनों लोकों में शान्ति कर देते हैं। हे धीर! आप ही सच्चे **विधाता** हैं क्योंकि आपने मुक्तिमार्ग का विधान किया है और आप ही सबसे उत्तम होने से **पुरुषोत्तम** हैं।

मिट्टी तो खोदो
पानी को खोजो नहीं
पानी फूटेगा।

26.

अर्धशिर: पीड़ा विनाशक-अत: आपको नमस्कार हो

(वसन्ततिलका)

तुभ्यं-नमस् - त्रिभुवनार्ति - हराय नाथ!
तुभ्यं-नमः क्षिति - तलामल - भूषणाय।
तुभ्यं - नमस् - त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं-नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'तुभ्' बीजाक्षर, चुभे नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'तुभ्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'यम्' बीजाक्षर, यम संयम आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'यम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नगण्य है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'मस्' बीजाक्षर, मस्ताना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'त्रि' बीजाक्षर, त्राता है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'भु' बीजाक्षर, भूयश है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वाङ्मय है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'नार्' बीजाक्षर, नम्रता दे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नार्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तीक्ष्ण नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हर्षालू आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का 'रा' बीजाक्षर, रमता है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यज्ञीय है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, निर्मापित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का 'थ' बीजाक्षर, थर-थर ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'थ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का 'तुभ्' बीजाक्षर, तुङ्ग काव्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तुभ्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का 'यम्' बीजाक्षर, यम साधक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, निरापदी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का 'मः' बीजाक्षर, महापर्व है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का 'क्षि' बीजाक्षर, क्षीर तुल्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्षि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तीर्थक्षेत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तीर्थेश है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'ला' बीजाक्षर, लाभांसी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ला' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महाभक्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लक्ष्मीपद दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'भू' बीजाक्षर, भू पति है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'ष' बीजाक्षर, शौर्य दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'णा' बीजाक्षर, नव्यमंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, योग्य ध्यान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'तुभ्' बीजाक्षर, तुष्टी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तुभ्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'यम्' बीजाक्षर, यमधारी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, न्यायसूत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'मस्' बीजाक्षर, मुनिमुद्रा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'त्रि' बीजाक्षर, तिरंगित है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, धर्म ज्योति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गुरु शिष्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥
भक्तामर का 'तः' बीजाक्षर, तत्त्व धर्म है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, प्रासुक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, राघव है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥
भक्तामर का 'मेश्' बीजाक्षर, शुभ मुहूर्त आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मेश्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वरद हस्त आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥
भक्तामर का 'रा' बीजाक्षर, राज्यमंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यौवन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥
भक्तामर का 'तुभ्' बीजाक्षर, तुषार हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तुभ्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥
भक्तामर का 'यम्' बीजाक्षर, यमयोगी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, निर्वाण दे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45॥
भक्तामर का 'मो' बीजाक्षर, मर्यादा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46॥
भक्तामर का 'जि' बीजाक्षर, जिनमुद्रा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, जिन नायक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48॥
भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भू-शोभा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49॥
भक्तामर का 'वो' बीजाक्षर, बोधि प्राप्त आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50॥
भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दिशान है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51॥
भक्तामर का 'धि' बीजाक्षर, धी-मान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52॥
भक्तामर का 'शो' बीजाक्षर, शोभन पद आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53॥
भक्तामर का 'ष' बीजाक्षर, सहपाठी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54॥
भक्तामर का 'णा' बीजाक्षर, निखिल मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, योग्य मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
त्रिभुवन के दुख हर्त्ता प्रभु को, सदा नमोऽस्तु हो।
भू पर निर्मल भूषण प्रभु को, सदा नमोऽस्तु हो॥
त्रय जग के परमेश्वर प्रभु को, सदा नमोऽस्तु हो।
भवसागर शोषक जिन प्रभु को, सदा नमोऽस्तु हो॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त-तवाणं नानादुःख-विलीनक-क्लीं-महाबीजाक्षर-सहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे जिनेन्द्रदेव! हे नाथ! तीन लोक के संकटों को दूर करने वाले आपको नमस्कार करता हूँ। जगत के निर्मल अनुपम आभूषण स्वरूप आपको प्रणाम करता हूँ। तीन जगत के स्वामी आपको प्रणाम है और संसार समुद्र के सुखाने वाले आपको नमस्कार है।

उन्हें जिनके
तन-मन-नगन हैं
मेरा नमन।

27.

<u>शत्रु-उन्मूलक-पूर्ण निर्दोष</u>

(वसन्ततिलका)

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै-रशेषैस्-
त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश!
दोषै - रुपात्त - विविधाश्रय-जात-गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिद-पीक्षितोऽसि॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'को' बीजाक्षर, कोमल है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'को' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'विस्' बीजाक्षर, विस्तारक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'विस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मुकुट रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'यो' बीजाक्षर, जिन योद्धा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'यो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'त्र' बीजाक्षर, त्रास नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, अन्तर्याम आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'दि' बीजाक्षर, दिग्दर्शक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, निबन्ध है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मुक्तिधाम आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥

भक्तामर का 'गु' बीजाक्षर, गौ-रक्षक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'गु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥

भक्तामर का 'णै' बीजाक्षर, निराश्रित न आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'णै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, गजरथ है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥

भक्तामर का 'शे' बीजाक्षर, जिन-सेवक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥

भक्तामर का 'षैस्' बीजाक्षर, पुष्पक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'षैस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥

भक्तामर का 'त्वं' बीजाक्षर, सत्यधर्म आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्वं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥

भक्तामर का 'सं' बीजाक्षर, सद्गुरु है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥

भक्तामर का 'श्रि' बीजाक्षर, श्रम दातृ आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'श्रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥

भक्तामर का 'तो' बीजाक्षर, तोषण है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'तो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥

भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निश्चल है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रत्नावली आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वक्ता है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'का' बीजाक्षर, कायाकल्प आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'का' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, शिलान्यास आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तप्त नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'या' बीजाक्षर, धर्मयान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, जिन-मुक्ता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'नी' बीजाक्षर, निकुलंजय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, शक्ति मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'दो' बीजाक्षर, दर्पित ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'षै' बीजाक्षर, सिद्ध साध्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'षै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'रु' बीजाक्षर, राजर्षि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'पात्' बीजाक्षर, पातक ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पात्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, ताम हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विमुख नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विशोक हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥

भक्तामर का 'धा' बीजाक्षर, धर्मायतन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'धा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥

भक्तामर का 'श्र' बीजाक्षर, श्रमण संघ आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'श्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यति आर्ष आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥

भक्तामर का 'जा' बीजाक्षर, जाल हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'जा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तारण है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥

भक्तामर का 'गर्' बीजाक्षर, गर्हित ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'गर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥

भक्तामर का 'वैः' बीजाक्षर, विजात है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वैः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥

भक्तामर का 'स्वप्' बीजाक्षर, पूर्ण स्वप्न आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'स्वप्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥

भक्तामर का 'नान्' बीजाक्षर, संविधान आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तामस ना आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45॥
भक्तामर का 'रे' बीजाक्षर, राज युगी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46॥
भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, प्रयोग है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, निकाय है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कर्म शील आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49॥
भक्तामर का 'दा' बीजाक्षर, दूष्य नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50॥
भक्तामर का 'चि' बीजाक्षर, चिरजीवित आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'चि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51॥
भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दीर्घ आयु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52॥
भक्तामर का 'पी' बीजाक्षर, प्रयत्न है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53॥
भक्तामर का 'क्षि' बीजाक्षर, क्षायक पथ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्षि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54॥
भक्तामर का 'तो' बीजाक्षर, परितोषक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55॥
भक्तामर का 'सि' बीजाक्षर, सिद्ध रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
सभी गुणों को इस जग में जब, आश्रय नहीं मिला।
इसमें क्या आश्चर्य आपका, आश्रय उन्हें मिला॥
किन्तु घमंडी सभी दोष जो, पर में खूब टिकें।
हे मुनीश! वे दोष आपमें, सपने में न दिखें॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं।
जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त-तवाणं सकलदोषनिर्मुक्त-क्लीं-महाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ—हे मुनीश्वर! इसमें कुछ भी आश्चर्य नहीं कि आप समस्त गुणों से परिपूर्ण हैं। राग-द्वेष-काम-क्रोध-मान-माया-लोभ आदि दोष अन्य देवों का आश्रय पाकर गर्वीले (घमण्डी) हो गए हैं। अतः वे दोष आपके पास कभी स्वप्न में भी नहीं आते।

तुम्बी तैरती
औरों को भी तारती
छेद वाली क्या ?

28.

<u>सर्व-मनोरथ प्रपूरक-अशोकवृक्ष प्रातिहार्य</u>

(वसन्ततिलका)

उच्चै - रशोक - तरु - संश्रितमुन्मयूख -
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत् - किरण-मस्त-तमो-वितानम्,
बिम्बं रवेरिव पयोधर - पार्श्ववर्ति॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'उच्' बीजाक्षर, उच्च धाम आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'उच्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'चै' बीजाक्षर, चिरायु है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'चै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, निज रसिया आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'शो' बीजाक्षर, निज शोधक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, निष्कर्मा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, विरागता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'रु' बीजाक्षर, रुचता है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'सन्' बीजाक्षर, संधानी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'श्रि' बीजाक्षर, श्रेयमार्ग आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'श्रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तकरार हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का 'मुन्' बीजाक्षर, मुनि-मार्गी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मुन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मुमुक्षु पथ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का 'यू' बीजाक्षर, युवा रखे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का 'ख' बीजाक्षर, खटके ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ख' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, मार्मिक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, भास रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, त्रय-कालिक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का 'रू' बीजाक्षर, रूपी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, परमात्मा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मनोज्ञ है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का ‘म’ बीजाक्षर, महार्चना आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा।।
ॐ ह्रीं अर्हं ‘म’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का ‘लम्’ बीजाक्षर, झिलमिल है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘लम्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का ‘भ’ बीजाक्षर, भामण्डल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘भ’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का ‘व’ बीजाक्षर, वश में ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘व’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का ‘तो’ बीजाक्षर, जिन स्तूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘तो’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का ‘नि’ बीजाक्षर, निरंकुश है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘नि’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का ‘तान्’ बीजाक्षर, संगीत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘तान्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का ‘तम्’ बीजाक्षर, साधकतम् आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘तम्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का ‘स्पष्’ बीजाक्षर, स्पष्ट मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘स्पष्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का ‘टोल्’ बीजाक्षर, टोली है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘टोल्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का ‘ल’ बीजाक्षर, जिन लालित्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ल’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का ‘सत्’ बीजाक्षर, सत् साहित्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘सत्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'कि' बीजाक्षर, किसे मिले आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'कि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, अविनश्वर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'ण' बीजाक्षर, अनन्त है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ण' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'मस्' बीजाक्षर, मंजिल दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, ताको तो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, ताम्र लिखित आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'मो' बीजाक्षर, मोक्ष मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विराग है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, ताला हर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'नम्' बीजाक्षर, नमन मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'बिम्' बीजाक्षर, विमुख नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बिम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'बं' बीजाक्षर, ब्रह्मज्ञान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, राज महल आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'वे' बीजाक्षर, व्यर्थ नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, रीति रिवाज आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, ब्रह्म तत्व आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, परम गुणी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'यो' बीजाक्षर, योग्य धर्म आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, धनी करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रमण योग्यआहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'पार्' बीजाक्षर, पारखी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पार्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'श्व' बीजाक्षर, शाश्वत पथ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'श्व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'वर् बीजाक्षर, वरदायी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तिष्ठ-तिष्ठ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
जिसकी ऊपर उठती किरणें, अंध विनाशक जो।
बादल दल के निकट विराजित, जैसे सूरज हो॥
निर्विकार हो सबसे सुन्दर, प्रभु तन ज्योतित हो।
उच्च अशोक वृक्ष के नीचे, खूब सुशोभित हो॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महा-तवाणं अशोकतरु-विराजमान-क्लीं-महाबीजाक्षर-सहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे अतिशयरूप! ऊँचे अशोकवृक्ष के नीचे आपका निर्मल कान्तिमान शरीर बहुत शोभा देता है। जैसे कि अन्धकार नष्ट करने वाली किरणों सहित सूर्य-बिम्ब बादलों के पास शोभित होता है।

साधु वृक्ष है
छाया फल-प्रदाता
जो धूप खाता।

29.

नेत्रपीड़ा विनाशक–सिंहासन प्रातिहार्य

(वसन्ततिलका)

सिंहासने मणि – मयूख – शिखा–विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद् – विलस – दंशुलता–वितानम्
तुङ्गोदयाद्रि – शिरसीव सहस्र–रश्मेः॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'सिं' बीजाक्षर, सिंहासन आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'सिं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1 ॥

भक्तामर का 'हा' बीजाक्षर, हार्य मंत्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'हा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2 ॥

भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, गुण संग्रह आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3 ॥

भक्तामर का 'ने' बीजाक्षर, नैसर्गिक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ने' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4 ॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महात्मा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5 ॥

भक्तामर का 'णि' बीजाक्षर, नियोग है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'णि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6 ॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महाव्रती आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7 ॥

भक्तामर का 'यू' बीजाक्षर, युगपथ है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'यू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8 ॥

भक्तामर का 'ख' बीजाक्षर, खंडित ना आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ख' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥
भक्तामर का 'शि' बीजाक्षर, सिद्धार्थ है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥
भक्तामर का 'खा' बीजाक्षर, खार नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'खा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विद्यालय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥
भक्तामर का 'चि' बीजाक्षर, चित्रांश है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'चि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥
भक्तामर का 'त्रे' बीजाक्षर, परितृप्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्रे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विभाव हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥
भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, भटके न आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जैनागम आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥
भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, अतिथि है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तप-स्थल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विराजित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विद्वानी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'पुः' बीजाक्षर, पुष्ट करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पुः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कर्मण्य है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, निरंकुश है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'का' बीजाक्षर, काव्यांजलि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'का' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विनयांजलि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'दा' बीजाक्षर, दयोदयी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, तेजस्तप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'बिम्' बीजाक्षर, विस्तीर्ण है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बिम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'बं' बीजाक्षर, वांछित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, वैज्ञानिक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'यद्' बीजाक्षर, युद्धजयी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विपुल भक्ति आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, उपलब्धि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, सहकारी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'दन्' बीजाक्षर, दंडित ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'शु' बीजाक्षर, सहधर्मी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, निज-लोभी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, तरलायित आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विशिष्ट है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, तात्विक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'नम्' बीजाक्षर, निम्न नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'तुं' बीजाक्षर, तिक्त नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तुं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'गो' बीजाक्षर, गोधन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दिव्यघोषआहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45॥
भक्तामर का 'या' बीजाक्षर, याद रखोआहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46॥
भक्तामर का 'द्रि' बीजाक्षर, दृष्टिकोण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द्रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47॥
भक्तामर का 'शि' बीजाक्षर, शिखर कलश आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, राहगीर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49॥
भक्तामर का 'सी' बीजाक्षर, स्वाभाविक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विधान है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51॥
भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, सुयोग्य है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52॥
भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हसमुख है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53॥
भक्तामर का 'स्र' बीजाक्षर, श्रमण रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54॥
भक्तामर का 'रश्' बीजाक्षर, राजी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रश्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55॥
भक्तामर का 'मेः' बीजाक्षर, मेरु तुल्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मेः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
मणि किरणों से रंग बिरंगा, सुन्दर सिंहासन।
उस पर सोने जैसे चमके, नाथ! आपका तन॥
यों लगता ज्यों उदयाचल की, ऊँची शिखरों से।
नभ में पूरा हुआ प्रकाशित, सूर्य बिम्ब जैसे॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर–तवाणं मणिमुक्ता–खचित–सिंहासन–प्रातिहार्ययुक्त–क्लीं–महाबीजाक्षरसहित–श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे रत्नजड़ित सिंहासनस्थ! हीरा, पन्ना, लाल, नीलम, पुखराज आदि अनेक प्रकार के रत्नों से जड़ित सिंहासन पर आपका स्वर्ण समान शरीर बहुत शोभा पाता है। जैसे उन्नत उदयाचल के शिखर पर फैली हुई अपनी किरणों के साथ सूर्य का बिम्ब शोभित होता है।

मोक्षमार्ग तो भीतर अधिक है बाहर कम।

30.

शत्रु-स्तम्भक-चँवर प्रातिहार्य

(वसन्ततिलका)

कुन्दावदात - चल - चामर-चारु-शोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत - कान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क - शुचिनिर्झर - वारि -धार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'कुन्' बीजाक्षर, कुंदन है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'कुन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'दा' बीजाक्षर, दाग हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विषयातीत आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'दा' बीजाक्षर, दान तीर्थ आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तप त्यागी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'च' बीजाक्षर, चित् चेतन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'च' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लघिमा गुण आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'चा' बीजाक्षर, चारित्र है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'चा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महिमा गुण आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रहस्य है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥
भक्तामर का 'चा' बीजाक्षर, चारुचन्द्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'चा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥
भक्तामर का 'रु' बीजाक्षर, रूपवान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥
भक्तामर का 'शो' बीजाक्षर, शोक हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥
भक्तामर का 'भम्' बीजाक्षर, भ्रमण हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, सुखदायक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥
भक्तामर का 'भ्रा' बीजाक्षर, भ्रान्ति हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ्रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जग रक्षक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥
भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तुष्ट-पुष्ट आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तट रक्षक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वलिष्ट है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वरिष्ट है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'पुः' बीजाक्षर, पुरुषार्थी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पुः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कमलाकार आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लक्ष्यदान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'धौ' बीजाक्षर, ध्रौव्य रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धौ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तन-मन-धन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'कान्' बीजाक्षर, करण्ड है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, तार्किक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'उद्' बीजाक्षर, उद्यम है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'उद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'यच्' बीजाक्षर, याचक ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यच्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'छ' बीजाक्षर, प्रभु छाया आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'छ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'शां' बीजाक्षर, शान्त रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शां' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कष्ट हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥
भक्तामर का 'शु' बीजाक्षर, शुक्ल धर्म आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥
भक्तामर का 'चि' बीजाक्षर, चिंता रहित आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'चि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥
भक्तामर का 'निर्' बीजाक्षर, निरम्बर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'निर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥
भक्तामर का 'झ' बीजाक्षर, झंडा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'झ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, राधा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥
भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, वाचा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥
भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, रिक्ता ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥
भक्तामर का 'धा' बीजाक्षर, जिन धामन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, राष्ट्रीय है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥
भक्तामर का 'मुच्' बीजाक्षर, मुक्तक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मुच्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥
भक्तामर का 'चैस्' बीजाक्षर, चैतन्य है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'चैस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तट रूपी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45॥

भक्तामर का 'टम्' बीजाक्षर, टंकीर्ण है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'टम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46॥

भक्तामर का 'सु' बीजाक्षर, सुव्रती आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, धर्म-रसिक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48॥

भक्तामर का 'गि' बीजाक्षर, गीतांजलि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'गि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49॥

भक्तामर का 'रे' बीजाक्षर, समझो रे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50॥

भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, रिझा रहा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विपत्ति हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52॥

भक्तामर का 'शा' बीजाक्षर, शान बढ़े आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, यथार्थ है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54॥

भक्तामर का 'कौम्' बीजाक्षर, कौशल है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'कौम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55॥

भक्तामर का 'भम्' बीजाक्षर, भयानक न आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
दोनों तरफ कुन्द पुष्पों सम, धवल चँवर ढुरते।
और बीच में स्वर्णिम तन सम, प्रभु शोभित रहते॥
यों लगता जैसे सुरगिरि के, स्वर्णिम तट पर से।
चन्दा सम उज्ज्वल झरनों की, धाराएँ बरसें॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर-गुणाणं चतु:षष्टिचामर-प्रातिहार्ययुक्त-क्लीं-महा-बीजाक्षरसहित-श्रीवृषभ-जिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ—हे चामराधिपते! इन्द्रों द्वारा कुन्दपुष्पों के समान सफेद चामर आप पर ढुरते समय आपका तपे हुए सोने के समान शरीर ऐसा शोभायमान होता है जैसे कि चन्द्र समान निर्मल जल की धारा से स्वर्णमय सुमेरुपर्वत का ऊँचा तट सुशोभित होता है।

गूँगा गुड़ का
स्वाद क्या नहीं लेता ?
वक्ता क्यों बनूँ ?

31.

राज्य-सम्मान दायक-छत्रत्रय प्रातिहार्य

(वसन्ततिलका)

छत्र - त्रयं तव विभाति शशाङ्क- कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु - कर - प्रतापम्।
मुक्ता - फल - प्रकर - जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत् - त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'छ' बीजाक्षर, छत्र छाँव आहा।
ओम् ह्लीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'छ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥
भक्तामर का 'त्र' बीजाक्षर, त्रस्त नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥
भक्तामर का 'त्र' बीजाक्षर, त्रस दुख हर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥
भक्तामर का 'यम्' बीजाक्षर, यम धर्मी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तप फल दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वशीकरण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विराट धर्म आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥
भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, जैन भानु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तीरित है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥

भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, शरण्यु है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥

भक्तामर का 'शां' बीजाक्षर, शालीन है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शां' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, जिन कविता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥

भक्तामर का 'कान्' बीजाक्षर, काव्य भक्ति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'कान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तारल ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥

भक्तामर का 'मुच्' बीजाक्षर, दुख मोचक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मुच्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥

भक्तामर का 'चै' बीजाक्षर, चतुष्टय है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'चै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥

भक्तामर का 'स्थि' बीजाक्षर, स्थित है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'स्थि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥

भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, मोक्षगुणी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥

भक्तामर का 'स्थ' बीजाक्षर, स्थापक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'स्थ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥

भक्तामर का 'गि' बीजाक्षर, गिरीश है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'गि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, जिन-तारा आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥

भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, भाग्यशाली आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥

भक्तामर का 'नु' बीजाक्षर, नूतन है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कृत्रिम है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रुके नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥

भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रतिज्ञा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥

भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर तरालू है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥

भक्तामर का 'पम्' बीजाक्षर, प्रशस्त है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥

भक्तामर का 'मुक्' बीजाक्षर, मुक्तिराज्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मुक्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥

भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, तपोनिधि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥

भक्तामर का 'फ' बीजाक्षर, फलदाता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'फ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥

भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लालिमा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रकाश है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कंटक हर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रत्नमयी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥
भक्तामर का 'जा' बीजाक्षर, जागरूक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लक्ष्मीवत आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विद्वत् वत आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥
भक्तामर का 'वृद्' बीजाक्षर, वृद्ध रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वृद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥
भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, ध्यानात्मा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥
भक्तामर का 'शो' बीजाक्षर, शोभनपद आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥
भक्तामर का 'भम्' बीजाक्षर, भाद्रपदी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥
भक्तामर का 'प्रख्' बीजाक्षर, प्रख्यात है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्रख्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥
भक्तामर का 'या' बीजाक्षर, शिवयात्रा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का ‘प’ बीजाक्षर, परमधर्म आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं ‘प’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45॥
भक्तामर का ‘यत्’ बीजाक्षर, यतीन्द्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘यत्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46॥
भक्तामर का ‘त्रि’ बीजाक्षर, त्रि-नेत्री आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘त्रि’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47॥
भक्तामर का ‘ज’ बीजाक्षर, जेल मुक्त आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ज’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48॥
भक्तामर का ‘ग’ बीजाक्षर, गणेश है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ग’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49॥
भक्तामर का ‘तः’ बीजाक्षर, तपोस्थल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘तः’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50॥
भक्तामर का ‘प’ बीजाक्षर, पुण्यार्जक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘प’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51॥
भक्तामर का ‘र’ बीजाक्षर, रचनात्मक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘र’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52॥
भक्तामर का ‘मेश्’ बीजाक्षर, मुमुक्षा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘मेश्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53॥
भक्तामर का ‘व’ बीजाक्षर, वीरा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘व’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54॥
भक्तामर का ‘रत्’ बीजाक्षर, रत्नसिन्धु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘रत्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55॥
भक्तामर का ‘वम्’ बीजाक्षर, वृथा नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘वम्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
रवि किरणों के ताप रोकने, उच्च अवस्थित हैं।
मुक्ता मणियों की लड़ियों से, सुन्दर निर्मित हैं॥
चन्दा जैसे तीन छत्र जो, सबको भाते हैं।
त्रय जग के तुम परमेश्वर हो, यही बताते हैं॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरक्कमाणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर-परक्कमाणं छत्रत्रय-प्रातिहार्ययुक्त-क्लीं-महा-बीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे छत्रत्रयाधिपते! चन्द्रमा समान कान्तिमान, सूर्य की धूप को रोकने वाले, मोतियों की झालर से शोभायमान, आपके ऊपर ऊँचे लगे हुए तीन छत्र आपकी तीन जगत् की प्रभुता को प्रगट करते हुए आपकी शोभा बढ़ाते हैं।

भूत सपना
वर्तमान अपना
भावी कल्पना।

32.

<u>संग्रहणी-संहारक-दुन्दुभि प्रातिहार्य</u>

(वसन्ततिलका)

गम्भीर - तार - रव - पूरित - दिग्विभागस्-
त्रैलोक्य - लोक -शुभ - सङ्गम -भूति-दक्षः।
सद्धर्म - राज - जय - घोषण - घोषकः सन्,
खे दुन्दुभि - र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'गम्' बीजाक्षर, गमय मंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'गम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1 ॥

भक्तामर का 'भी' बीजाक्षर, भीत नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2 ॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रचना पद आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3 ॥

भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, तिनका ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4 ॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रथ यात्रा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5 ॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रथोत्सव आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विनती आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7 ॥

भक्तामर का 'पू' बीजाक्षर, पूज्य प्रवर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8 ॥

भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, रिक्त पाप आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तपोस्थल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का 'दिग्' बीजाक्षर, दिग्विजयी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दिग्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विश्वविजय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, भाग्यवान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का 'गस्' बीजाक्षर, गृहीत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का 'त्रै' बीजाक्षर, त्रैकालिक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्रै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का 'लोक्' बीजाक्षर, लोकपूज्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लोक्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यति धर्मा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का 'लो' बीजाक्षर, लोकाग्री आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, करुणामय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का 'शु' बीजाक्षर, शुभागमन् आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भक्षक न आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'सं' बीजाक्षर, संयत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गणनायक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महामुनी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'भू' बीजाक्षर, भुवनैक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तीर्थ विहार आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, महादेव आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'क्षः' बीजाक्षर, क्षान्ति रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्षः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'सद्' बीजाक्षर, सदामुक्त आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'धर्' बीजाक्षर, धर्मघोष आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महातपा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'रा' बीजाक्षर, पुण्य राशी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जित साक्षी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥

भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जितेन्द्र है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, योग विद्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥

भक्तामर का 'घो' बीजाक्षर, जय घोषक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'घो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥

भक्तामर का 'ष' बीजाक्षर, सुखद मंत्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥

भक्तामर का 'ण' बीजाक्षर, नैक रूप आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ण' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥

भक्तामर का 'घो' बीजाक्षर, सुघोष है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'घो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥

भक्तामर का 'ष' बीजाक्षर, सदा पुष्ट आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥

भक्तामर का 'कः' बीजाक्षर, कल्याण वर्ग आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'कः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥

भक्तामर का 'सन्' बीजाक्षर, संसिद्ध है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥

भक्तामर का 'खे' बीजाक्षर, खेवटिया आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'खे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥

भक्तामर का 'दुन्' बीजाक्षर, द्वन्द्व हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दुन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'दु' बीजाक्षर, दुःख हरण आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'दु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'भिर्' बीजाक्षर, भव्य भाव आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भिर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'ध्व' बीजाक्षर, दिव्य-ध्वनि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ध्व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नव-लब्धि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, त्रिज्ञानी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तेज राशी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, दिव्याष्ट गुण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, शंकर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'सः' बीजाक्षर, समय मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रवचन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, बाहुबली आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'दी' बीजाक्षर, दीवाली आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
जिसके गहरे उच्च स्वरों से, गुंजित दसों दिशा।
त्रय जग को सत्संग कराने, में जो निपुण रहा॥
दुन्दुभि बाजा यथा आपका, नभ में गूँज रहा।
मृत्युराज पर धर्मराज की, जय को बता रहा॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभयारीणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर–गुणबंभयारीणं त्रैलोक्याज्ञा–विधायक–क्लीं–महा–बीजाक्षरसहित–श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे दुन्दुभिपते! आकाश में अपनी गंभीर, तेज–मधुर ध्वनि द्वारा समस्त दिशाओं को शब्दायमान करके, त्रिलोकवर्ती जीवों को शुभ संगम कराने वाला, समीचीन धर्म के स्वामी आपकी जयध्वनि करता हुआ दुन्दुभि बाजा आपका सुयश प्रकट करता है।

सुनना हो तो
नगाड़े के साथ में
बाँसुरी सुनो।

33.

<u>सर्वज्वर संहारक-पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य</u>

(वसन्ततिलका)

मन्दार – सुन्दर – नमेरु – सुपारिजात–
सन्तानकादि – कुसुमोत्कर – वृष्टि–रुद्धा।
गन्धोद – बिन्दु– शुभ – मन्द – मरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'मन्' बीजाक्षर, मान्य मंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'मन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'दा' बीजाक्षर, दातृ है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रति हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'सुन्' बीजाक्षर, सुन तो लो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सुन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दर्शक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रजसानु आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नाटक ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'मे' बीजाक्षर, म्लेच्छ नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का ‘रु’ बीजाक्षर, रुग्ण नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं ‘रु’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का ‘सु’ बीजाक्षर, सुशोभित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘सु’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का ‘पा’ बीजाक्षर, पारखी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘पा’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का ‘रि’ बीजाक्षर, रिक्त नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘रि’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का ‘जा’ बीजाक्षर, जात्य है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘जा’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का ‘त’ बीजाक्षर, तपोधाम आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘त’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का ‘सन्’ बीजाक्षर, सन्मति है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘सन्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का ‘ता’ बीजाक्षर, तपोभवन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ता’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का ‘न’ बीजाक्षर, नमस्कृति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘न’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का ‘का’ बीजाक्षर, कार्यकाल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘का’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का ‘दि’ बीजाक्षर, दिव्य ज्योति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘दि’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का ‘कु’ बीजाक्षर, कुपथ नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘कु’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'सु' बीजाक्षर, सुभाषणी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'सु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'मोत्' बीजाक्षर, मौत न दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मोत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कल्पकाल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रथ विमान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'वृष्' बीजाक्षर, वृषभ धर्म आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वृष्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'टि' बीजाक्षर, टीकापद आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'टि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'रुद्' बीजाक्षर, रुद्ध नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रुद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'घा' बीजाक्षर, घातक ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'घा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'गन्' बीजाक्षर, गन्धकुटी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'धो' बीजाक्षर, द्योतक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दक्ष मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'बिन्' बीजाक्षर, बिम्बित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बिन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'दु' बीजाक्षर, दुर्लभ है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'दु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥

भक्तामर का 'शु' बीजाक्षर, शुभंकर है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥

भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भाग्योदय आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥

भक्तामर का 'मन्' बीजाक्षर, मनवांछित आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दार्शनिक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मणिमय है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥

भक्तामर का 'रुत्' बीजाक्षर, रुतवा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रुत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥

भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, जिन प्रभाव आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥

भक्तामर का 'पा' बीजाक्षर, प्यारा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥

भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, तपोधनी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥

भक्तामर का 'दिव्' बीजाक्षर, दिव्यधाम आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दिव्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥

भक्तामर का 'या' बीजाक्षर, धर्म यज्ञ आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'दि' बीजाक्षर, दिनकर है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'दि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'वः' बीजाक्षर, श्री वत्स आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पुरातत्व आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, दुख तारक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, अत्र तिष्ठ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तेजस पथ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वेद मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'च' बीजाक्षर, चैत्यालय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'च' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'साम्' बीजाक्षर, साम्यभाव आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'साम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तीरथ सुख आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'तिर्' बीजाक्षर, तीर्थ पंथ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तिर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, वाद्य रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
पारिजात मन्दार नमेरू, संतानक आदि।
सुर पुष्पों के साथ सुगंधित, हों जल कण आदि॥
मिश्रित नभ से मन्द-मन्द हो, दिव्य सुमन वर्षा।
यों लगती ज्यों जिनवर की हो, दिव्य वचन वर्षा॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि- पत्ताणं समस्तजाति-पुष्पवृष्टि-प्रातिहार्ययुक्त-क्लीं-महाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभ-जिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे कुसुमवर्षाधिपते! सुगन्धित जल बिन्दुओं और मन्द पवन के साथ, मंदार, नमेरु, पारिजात आदि कल्पवृक्षों के पुष्पों की ऊर्ध्वमुखी और मनोहर वर्षा आपके ऊपर देवों के द्वारा आकाश में एसी होती है, मानो आपके वचनों की पंक्ति ही है।

फूल खिला पै
गंध न आ रही सो
कागज का है।

34.

गर्भ-संरक्षक-भामण्डल प्रातिहार्य

(वसन्ततिलका)

शुम्भत् - प्रभा- वलय-भूरि-विभा-विभोस्ते,
लोक - त्रये - द्युतिमतां द्युति-माक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्- दिवाकर-निरन्तर - भूरि -संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि-सोम-सौम्याम्॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'शुम्' बीजाक्षर, शुभ मंगल आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'शुम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'भत्' बीजाक्षर, भस्म न हो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रमाण है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, भास्कर है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, धर्म वलय आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, धर्म लग्न आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, आठ याम आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'भू' बीजाक्षर, भू तिलका आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, रिक्त कर्म आहा।

ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विविक्त है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥

भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, भास्वत् है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विश्व विज्ञ आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥

भक्तामर का 'भोस्' बीजाक्षर, भौतिक ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भोस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥

भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तेज धार आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥

भक्तामर का 'लो' बीजाक्षर, लोक तिलक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'लो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कल्याणी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥

भक्तामर का 'त्र' बीजाक्षर, त्रिकाल दर्शी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥

भक्तामर का 'ये' बीजाक्षर, पदम् योनि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ये' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥

भक्तामर का 'द्यु' बीजाक्षर, द्युतिमान आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'द्यु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तपनीया आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महाध्यान आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'ताम्' बीजाक्षर, त्रि-लोचन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ताम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'द्यु' बीजाक्षर, द्युतिमान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द्यु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तीरम है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, महाशील आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'क्षि' बीजाक्षर, क्षान्तिभाक् आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्षि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'पन्' बीजाक्षर, परमानन्द आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तीर्थराज आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'प्रोद्' बीजाक्षर, प्रमोद गुण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्रोद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'यद्' बीजाक्षर, युग ज्येष्ठ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'दि' बीजाक्षर, देवादि देव आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, विमुक्तात्मा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कल्याण वर्ग आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रैवत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥
भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निमग्न है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥
भक्तामर का 'रन्' बीजाक्षर, रणजेता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, अच्युत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रंजित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥
भक्तामर का 'भू' बीजाक्षर, भूतेश आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥
भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, रत्न गर्भ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥
भक्तामर का 'संख्' बीजाक्षर, संख्यातीत आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'संख्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥
भक्तामर का 'या' बीजाक्षर, युगाधार आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥
भक्तामर का 'दीप्' बीजाक्षर, दीपमाल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दीप्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥
भक्तामर का 'त्या' बीजाक्षर, त्याग पंथ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जग भूषण आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'यत्' बीजाक्षर, युगादिकृत आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, सर्वयोगी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, पीठगर्भ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निरास्रवी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'शा' बीजाक्षर, शील सागर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महामैत्री आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, पुराण पुरुष आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'सो' बीजाक्षर, सौस्थित्यम् आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महाउपाय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'सौम्' बीजाक्षर, सौम्य रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सौम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'याम्' बीजाक्षर, परम योग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'याम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
बहुत सूर्य हों उदित निरन्तर, जो उज्ज्वल चमके।
लेकिन चन्दा जैसा शीतल, जो सुन्दर दमके॥
जो जीते त्रय जग के सुन्दर, सभी पदार्थों को।
यों उज्ज्वल भामण्डल तेरा, जीते रातों को॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि–पत्ताणं कोटिभास्कर–प्रभामंडित–भामण्डल–प्रातिहार्ययुक्त–क्लीं–महा–बीजाक्षर–सहित–श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे भामण्डलाधिपते! आपके शरीर से निकली हुई कान्ति का गोलाकार मण्डल यानि भामण्डल जगत् के सभी प्रकाशमान पदार्थों की कान्ति को फीका कर देता है। करोड़ों सूर्यों के प्रकाश से भी अधिक प्रकाशमान भामण्डल की प्रभा से चाँदनी रात भी फीकी हो जाती है।

मन अपना
अपने विषय में
क्यों न सोचना ?

35.

<u>ईति-भीति निवारक-दिव्यध्वनि प्रातिहार्य</u>

(वसन्ततिलका)

स्वर्गापवर्ग - गम - मार्ग - विमार्गणेष्ट:,
सद्धर्म- तत्त्व - कथनैक - पटुस्-त्रिलोक्या:।
दिव्य- ध्वनि - र्भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणै: प्रयोज्य:॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'स्वर्' बीजाक्षर, स्वर साधन आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नम: स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्वर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥
भक्तामर का 'गा' बीजाक्षर, गागर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पञ्चानन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥
भक्तामर का 'वर्' बीजाक्षर, वरदान है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गुंजित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, ग्रसित नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मण्डल है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥
भक्तामर का 'मार्' बीजाक्षर, मार्ग रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मार्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गुरु मंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विख्यात है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥

भक्तामर का 'मार्' बीजाक्षर, मार्गी है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मार्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥

भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गीतिका है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥

भक्तामर का 'णेष्' बीजाक्षर, नित्यम् है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'णेष्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥

भक्तामर का 'टः' बीजाक्षर, टंकीर्ण है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'टः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥

भक्तामर का 'सद्' बीजाक्षर, सदभावना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥

भक्तामर का 'धर्' बीजाक्षर, धरोहर है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'धर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मौलिक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥

भक्तामर का 'तत्त' बीजाक्षर, तात्विक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'तत्त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विवेक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कोशिश है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'थ' बीजाक्षर, थपकी है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'थ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'नै' बीजाक्षर, नैसर्गिक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कलातीत आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, परमोदय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'टुस्' बीजाक्षर, टंकार आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'टुस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'त्रि' बीजाक्षर, त्रियकालवर्ती आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'लोक्' बीजाक्षर, लोकधाता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लोक्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'याः' बीजाक्षर, युगादिथित आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'याः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'दिव्' बीजाक्षर, दिव्यभाव आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दिव्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, युगान्तक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'ध्व' बीजाक्षर, धवस्त न हो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ध्व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'निर्' बीजाक्षर, निरुपद्रव आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'निर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भासमान आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विश्वविभु आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, महातपा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥

भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, महातेजा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विश्वेश है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥

भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, सद्योजात आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥

भक्तामर का 'दार्' बीजाक्षर, दार्शनिक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दार्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥

भक्तामर का 'थ' बीजाक्षर, थापित है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'थ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥

भक्तामर का 'सर्' बीजाक्षर, सरगम है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विश्वसनीय आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥

भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, भास्वत है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥

भक्तामर का 'षा' बीजाक्षर, सत्याशी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'षा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'स्व' बीजाक्षर, स्वभावी है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, ज्ञानगर्भ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विश्वविध आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पराक्रमी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, रिपु नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'णा' बीजाक्षर, नामक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महादान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'गु' बीजाक्षर, गुणधन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'णैः' बीजाक्षर, निराश नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णैः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्राथमिक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'योज्' बीजाक्षर, प्रयोजनीय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'योज्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'यः' बीजाक्षर, गुणयौवन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
स्वर्ग मोक्ष जाने वालों को, जो दे दिग्दर्शन।
सच्चा धर्म तत्त्व कहने में, त्रय जग में सक्षम॥
सब भाषा में परिवर्तित हो, विशद अर्थ वाली।
यथा दिव्य ध्वनि नाथ! आपकी, ओम्-कार वाली॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि-पत्ताणं जलधरपटल-गर्जित-सर्वभाषात्मक-योजनप्रमाण-दिव्यध्वनि-प्रातिहार्य-युक्त-क्लीं-महाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे दिव्यध्वनिपते! हे परमदेव! आपकी दिव्यवाणी स्वर्ग-मोक्ष का मार्ग बताने वाली तथा जगत के लिए हितकर सत्धर्म, सात तत्त्व, नौ पदार्थ आदि का यथार्थ विशद कथन करने वाली एवं श्रोताओं की भाषामयी होती है।

पाषाण भीगे
वर्षा में हमारी भी
यही दशा है।

36.

लक्ष्मीदायक-स्वर्ण कमलों की रचना

(वसन्ततिलका)

उन्निद्र - हेम - नव - पङ्कज - पुञ्ज-कान्ती,
पर्युल् - लसन् - नख - मयूख - शिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'उन्' बीजाक्षर, उत्तुंग है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'उन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥
भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निष्कंप है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥
भक्तामर का 'द्र' बीजाक्षर, द्रव्य संग्रह आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥
भक्तामर का 'हे' बीजाक्षर, हेय नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'हे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मानवता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, आतम निधि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वाक् पटु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥
भक्तामर का 'पं' बीजाक्षर, प्रणव मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कनक-रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, ज्ञानचक्षु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥
भक्तामर का 'पुञ्' बीजाक्षर, पुण्यकान्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पुञ्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, अमित ज्योति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥
भक्तामर का 'कान्' बीजाक्षर, कूटस्थ है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥
भक्तामर का 'ती' बीजाक्षर, अनन्त ज्योति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ती' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥
भक्तामर का 'पर्' बीजाक्षर, पुरातत्व आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥
भक्तामर का 'युल्' बीजाक्षर, न्याय शास्त्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'युल्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, महालाभ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥
भक्तामर का 'सन्' बीजाक्षर, सत्य संधान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नंदन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥
भक्तामर का 'ख' बीजाक्षर, षट्खंडी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ख' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महाबलि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'यू' बीजाक्षर, युगवीरा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'ख' बीजाक्षर, खंडित ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ख' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'शि' बीजाक्षर, सूक्ष्मदर्शी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'खा' बीजाक्षर, चतुर्मुखी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'खा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'भि' बीजाक्षर, भक्ति समय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'रा' बीजाक्षर, निरक्ष है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'मौ' बीजाक्षर, महेशिता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मौ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'पा' बीजाक्षर, प्रक्षीण बंध आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'दौ' बीजाक्षर, दौत्यम् है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दौ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पितामहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'दा' बीजाक्षर, दयायाग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निष्पक्ष है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, धर्मकृति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वाचस्पति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, योगीन्द्र है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'त्र' बीजाक्षर, निरुत्सक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'जि' बीजाक्षर, जिनस्वामी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'नेन्' बीजाक्षर, नाममाला आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नेन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'द्र' बीजाक्षर, सदाविद्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'धत्' बीजाक्षर, धर्माध्यक्ष आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'तः' बीजाक्षर, त्रिकाल विषय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'पद्' बीजाक्षर, पद प्रदाता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, मृत्युराज आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, नाभि-संबुत आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, यतीन्द्र है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'त्र' बीजाक्षर, त्रस त्यागी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विमल स्तोत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'वु' बीजाकर, बोधित बुद्ध आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'धाः' बीजाक्षर, ज्ञान लब्धि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धाः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, प्रमुदित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, जिन सारथी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'कल्' बीजाक्षर, कल्पित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कल्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, परमोत्तम आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'यन्' बीजाक्षर, हतदुर्नय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, रमापति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
नये सुनहरे कमलों जैसे, चमकदार जो हैं।
जिनके नख की किरण शिखाएँ, कान्त मनोहर हैं॥
नाथ! आपके चरण-कमल यों, जहाँ आप धरते।
वहीं देवगण दिव्य कमल की, शुभ रचना करते॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं।
जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि-पत्ताणं पादन्यासे-पद्मश्रीयुक्त-क्लीं-महा-बीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय-पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ—हे पूज्यपाद! विहार करते समय विकसित स्वर्ण कमल की कान्ति को अपने चरणों के नखों की कान्ति से सुन्दर कर देने वाले आपके चरण जहाँ पड़ने हैं वहाँ पर देव पहले ही स्वर्णमय कमल रचते जाते हैं।

चिन्तन न हो
तो चिन्ता मत करो
चित्स्वरूपी हो।

37.

<u>दुष्टता प्रतिरोधक-अद्वितीय विभूति</u>

(वसन्ततिलका)

इत्थं यथा तव विभूति - रभूज् - जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशन - विधौ न तथा परस्य।
यादृक् - प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् - कुतोग्रह - गणस्य विकासिनोऽपि॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'इत्' बीजाक्षर, इतिहास है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'इत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'थम्' बीजाक्षर, थम न सके आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'थम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यथार्थ है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'था' बीजाक्षर, थामता है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'था' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तकरार हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वाचना है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विवेचित है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'भू' बीजाक्षर, सुभग रूप आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, रति रहित आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रञ्जित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का 'भूज्' बीजाक्षर, भदंत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भूज्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का 'जि' बीजाक्षर, जितानन्द आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का 'नेन्' बीजाक्षर, नेत्र रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नेन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का 'द्र' बीजाक्षर, आदिदेव आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का 'धर्' बीजाक्षर, महाधृति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का 'मो' बीजाक्षर, महायशा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पारग है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का 'दे' बीजाक्षर, देव देव आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, सत्याशी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नवोदयी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का ‘वि’ बीजाक्षर, विश्वेश है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं ‘वि’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का ‘धौ’ बीजाक्षर, ध्रौव्यरूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘धौ’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का ‘न’ बीजाक्षर, है नयार्थ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘न’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का ‘त’ बीजाक्षर, परमपूत आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘त’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का ‘था’ बीजाक्षर, दम तीर्थेश आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘था’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का ‘प’ बीजाक्षर, पुण्यधी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘प’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का ‘रस्’ बीजाक्षर, रसानन्द आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘रस्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का ‘य’ बीजाक्षर, यथेष्टफल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘य’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का ‘या’ बीजाक्षर, याद करो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘या’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का ‘दृक्’ बीजाक्षर, देह रहित आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘दृक्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का ‘प्र’ बीजाक्षर, प्रयोजक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘प्र’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का ‘भा’ बीजाक्षर, भाग्य पुण्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘भा’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'दि' बीजाक्षर, दीक्षागुरु आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'दि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, निश्कंचन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥
भक्तामर का 'कृ' बीजाक्षर, कृश कषाय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कृ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥
भक्तामर का 'तः' बीजाक्षर, मोक्ष हेतु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥
भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रतिषेधक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥
भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हत दुर्नय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥
भक्तामर का 'तान्' बीजाक्षर, अनेकान्त आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥
भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, दिव्य गन्ध आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥
भक्तामर का 'का' बीजाक्षर, दिव्य कमल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'का' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥
भक्तामर का 'रा' बीजाक्षर, दिव्य रत्न आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, तादात्म्य है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥
भक्तामर का 'दृक्' बीजाक्षर, देहातीत आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दृक्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'कु' बीजाक्षर, कुपत हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'कु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'तो' बीजाक्षर, तोहफा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'ग्र' बीजाक्षर, गणाधिक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हेम गर्भ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गण ज्येष्ठ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'णस्' बीजाक्षर, नक्षत्र है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, योग बंध आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विश्व बन्धु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'का' बीजाक्षर, महाकान्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'का' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'सि' बीजाक्षर, सुवर्ण वर्ण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'नो' बीजाक्षर, नवज्योति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, पुण्डरीकाक्ष आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
इस विधि दिव्य देशना वाला, अतिशय वैभव जो।
हे जिनवर! ज्यों हुआ आपका, नहीं अन्य का हो॥
जैसे अंध विनाशक कान्ती, सूरज की होती।
वैसी झिलमिल तारेगण की, कैसे हो ज्योति?॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिपत्ताणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि-पत्ताणं धर्मोपदेशसमये-समवसरणादि-लक्ष्मी-विभूति-विराजमान-क्लीं-महाबीजाक्षर-सहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ—हे समवसरणाधिपते! धर्मोपदेश के समय समवसरणादिक जैसी विभूति आपको प्राप्त हुई, वैसी विभूति अन्य किसी देव को प्राप्त नहीं हुई। ठीक ही है कि जैसी कान्ति सूर्य की होती है वैसी कान्ति शुक्र आदि ग्रहों को प्राप्त नहीं हो सकती।

स्थान समय
दिशा आसन इन्हें
भूलते ध्यानी।

38.

वैभववर्धक-हस्ति भय निवारक भक्ति

(वसन्ततिलका)

श्च्यो-तन् - मदाविल- विलोल- कपोल-मूल,
मत्त-भ्रमद् - भ्रमर - नाद - विवृद्ध-कोपम्।
ऐरावताभमिभ - मुद्धत - मापतन्तम्
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'श्च्यो' बीजाक्षर, चोखा है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'श्च्यो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'तन्' बीजाक्षर, शान्त रूप आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'तन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महार्चन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'दा' बीजाक्षर, दयोदयी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, वृषकेतु आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लोकचक्षु आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विकलमष आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'लो' बीजाक्षर, लोकज्ञ है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'लो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लक्ष्मीवान आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कवीश है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥
भक्तामर का 'पो' बीजाक्षर, पुण्यवान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लगनेश है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥
भक्तामर का 'मू' बीजाक्षर, मुख्य व्रत आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, आत्मलब्धि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥
भक्तामर का 'मत्' बीजाक्षर, सम्यक् मत आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तुषार हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥
भक्तामर का 'भ्र' बीजाक्षर, भाक्तिक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥
भक्तामर का 'मद्' बीजाक्षर, मदीय है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥
भक्तामर का 'भ्र' बीजाक्षर, अभीष्ट फल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मत्सर हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रूप्यवान आहा। ओम् ह्रीं
श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥

भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, नास्तिक ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दस्तक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विदेय है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥

भक्तामर का 'वृद्' बीजाक्षर, वृद्ध छाँव आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वृद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥

भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, धर्मवृष्टि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥

भक्तामर का 'को' बीजाक्षर, कोविद है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'को' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥

भक्तामर का 'पम्' बीजाक्षर, अनुपम है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥

भक्तामर का 'ऐ' बीजाक्षर, ऐरावत आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ऐ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥

भक्तामर का 'रा' बीजाक्षर, रासायनिक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वैज्ञानिक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥

भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, जिन तटाक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भय-तारक आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'मि' बीजाक्षर, मित्कारक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भुवितांक्ष आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'मुद्' बीजाक्षर, मुदित करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मुद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, धर्म द्रव्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तरस हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, मान-देय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, परमभक्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'तन्' बीजाक्षर, तन-त्यागी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, तुष्टी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'दृष्ट्' बीजाक्षर, दिव्य दृष्टि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दृष्ट्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, वाधा हर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भगवत है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'यम्' बीजाक्षर, यमदेवा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, आत्मभोग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वरेण्य है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, मोक्ष तिलक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'नो' बीजाक्षर, नृपति है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भुक्त नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विवक्षा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'दा' बीजाक्षर, दयावान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'श्रि' बीजाक्षर, श्री सम्पद आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'श्रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, सर्वज्ञता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'नाम्' बीजाक्षर, नामाक्षर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नाम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
मद से मटमैले गालों से, जब मद है झरता।
जिस पर भ्रमर गूँज से जिसका, क्रोध खूब बढ़ता॥
ऐसा ऐरावत जिद्दी गज, जब आगे दिखता।
तो भी तेरे शरणागत को, कभी न डर लगता॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं हस्त्यादि–सर्वदुर्द्धर–भयनिवारक–क्लीं–महा–बीजाक्षरसहित–श्रीवृषभ–जिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे अभयप्रदाता! जिसके कपोल (गाल) से झर रहे मद पर भौंरे गूँज रहे हैं, अतः भौंरों की गुञ्जार सुनकर जिसको प्रचण्ड क्रोध आ गया है, ऐसे मदोन्मत्त ऐरावत जैसे हाथी को भी देखकर आपके आश्रित भक्तों को जरा भी भय नहीं होता।

आपे में नहीं
तभी तो अस्वस्थ हो
अब तो आओ।

39.

सिंह-शक्ति संहारक-सिंह भय से मुक्त जिनेन्द्र भक्ति

(वसन्ततिलका)

भिन्नेभ-कुम्भ - गल-दुज्ज्वल-शोणिताक्त,
मुक्ता - फल - प्रकरभूषित - भूमि - भागः।
बद्ध - क्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम - युगाचल-संश्रितं ते॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'भिन्' बीजाक्षर, भिन्न नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'भिन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥
भक्तामर का 'ने' बीजाक्षर, नेक मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ने' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥
भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भग्न नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥
भक्तामर का 'कुम्' बीजाक्षर, रत्न कुम्भ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कुम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥
भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भावना है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गौरांवित आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, जिन लांछन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥
भक्तामर का 'दुज्' बीजाक्षर, दूजा ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दुज्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'ज्व' बीजाक्षर, उज्जवल है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज्व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, जिन लाला आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥
भक्तामर का 'शो' बीजाक्षर, शोभा दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥
भक्तामर का 'णि' बीजाक्षर, निष्पन्न है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥
भक्तामर का 'ताक्' बीजाक्षर, परम तत्त्व आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ताक्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तत्त्वज्ञ है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥
भक्तामर का 'मुक्' बीजाक्षर, मुक्त बंध आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मुक्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, स्नातक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥
भक्तामर का 'फ' बीजाक्षर, फल दाता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'फ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लक्ष्मी पति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥
भक्तामर का 'प्र' बीजाक्षर, प्रमुख पात्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कल्याण वर्ग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, निर्लेप है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'भू' बीजाक्षर, भव्य बन्धु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'षि' बीजाक्षर, सिद्ध शासन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'षि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, महा तपा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'भू' बीजाक्षर, भूत भावन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'मि' बीजाक्षर, महर्षि है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, भूतात्मा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'गः' बीजाक्षर, गिराम्पति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'बद्' बीजाक्षर, बद्ध रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, धर्मपति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'क्र' बीजाक्षर, कीर्तिमान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'मः' बीजाक्षर, महागुणी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'क्र' बीजाक्षर, क्रियान्वयी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महादया आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गरिष्ठ है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, पुरुषोत्तम आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हृदयांश आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, निरासंस आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'णा' बीजाक्षर, जिनवाणी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'धि' बीजाक्षर, अनादिनिधन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'पो' बीजाक्षर, पारायण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, प्रवक्ता है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, निर्निमेष आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'क्रा' बीजाक्षर, कृतलक्षण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महाज्ञान आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, अनन्त ओज आहा।
अ ा े म ् . . .
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46॥
भक्तामर का 'क्र' बीजाक्षर, कर्मशत्रु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महा सत्व आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48॥
भक्तामर का 'यु' बीजाक्षर, युगवाणी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49॥
भक्तामर का 'गा' बीजाक्षर, गोचर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50॥
भक्तामर का 'च' बीजाक्षर, चर्चित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'च' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, क्लेश हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52॥
भक्तामर का 'सं' बीजाक्षर, संस्कृति है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53॥
भक्तामर का 'श्रि' बीजाक्षर, श्रीकार आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'श्रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54॥
भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, गूढ़ात्मा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55॥

भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, विराजित है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
जिसने गज के गंडस्थल को, चीर फाड़ डाले।
लाल-लाल गज मुक्ता भू पर, खूब बिछा डाले॥
ऐसा सिंह भी निज पंजों से, उनको क्या मारे ?
जिसने जिनवर के चरणों का, लिया सहारा रे॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र-ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचबलीणं।
जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचबलीणं युगादिदेव-नामप्रसादात् केशरिभय-विनाशक-क्लींमहाबीजाक्षर-सहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ—हे विभो! हाथी के मस्तक को अपने नाखूनों से फाड़कर जिसने रक्त से भीगे गजमुक्ताओं से पृथ्वी सजा दी है, तथा शिकार करने के लिए तैयार, ऐसा विकराल सिंह अपने पंजों में आए हुए आपके चरणों की शरण लेने वाले मनुष्य पर आक्रमण नहीं करता है।

प्रतिशोध में
ज्ञानी भी अन्धा होता
शोध तो दूर।

40.

सर्वाग्नि-शामक-नाम स्मरण से दावानल शमन

(वसन्ततिलका)

कल्पान्त - काल - पवनोद्धत - वह्नि -कल्पं,
दावानलं ज्वलित - मुज्ज्वल - मुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुख - मापतन्तं,
त्वन्नाम -कीर्तन - जलं शमयत्यशेषम्॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'कल्' बीजाक्षर, कषाय पाहुड आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'कल्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1 ॥

भक्तामर का 'पान्' बीजाक्षर, प्रसन्नधी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पान्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2 ॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, अतुलनीय आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3 ॥

भक्तामर का 'का' बीजाक्षर, कामधेनु आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'का' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4 ॥

भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, विपुल ज्योति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5 ॥

भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, परम ज्योति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विश्व मूर्ति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7 ॥

भक्तामर का 'नोद्' बीजाक्षर, निरावाद आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नोद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8 ॥

भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, धर्म तीर्थ आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, ज्ञानात्मा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का 'वह' बीजाक्षर, विश्व विद् आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, नियमित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का 'कल्' बीजाक्षर, विक्रमी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कल्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का 'पम्' बीजाक्षर, परमम् है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का 'दा' बीजाक्षर, दयागर्भ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, विश्व चक्षु आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नमोतुंग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का 'लम्' बीजाक्षर, लोकमंगल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का 'ज्व' बीजाक्षर, अखिल ज्योति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज्व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का 'लि' बीजाक्षर, अखिलेश्वर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का ‘त’ बीजाक्षर, ध्याता है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं ‘त’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का ‘मुज्’ बीजाक्षर, महाधैर्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘मुज्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का ‘ज्व’ बीजाक्षर, जगपूजित आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ज्व’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का ‘ल’ बीजाक्षर, सल्लेखन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ल’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का ‘मुत्स्’ बीजाक्षर, महासत्व आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘मुत्स्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का ‘फु’ बीजाक्षर, पृथक नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘फु’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का ‘लिं’ बीजाक्षर, जैनलिंग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘लिं’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का ‘गम्’ बीजाक्षर, गुणनायक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘गम्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का ‘विश्’ बीजाक्षर, विष हर्त्ता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘विश्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का ‘वम्’ बीजाक्षर, वमन हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘वम्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का ‘जि’ बीजाक्षर, जैनालय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘जि’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का ‘घत्’ बीजाक्षर, घोषयंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘घत्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'सु' बीजाक्षर, समाधितंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'सु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥
भक्तामर का 'मि' बीजाक्षर, मिष्टमंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वंशज है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥
भक्तामर का 'सम्' बीजाक्षर, समयसार आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥
भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मूलाचार आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥
भक्तामर का 'ख' बीजाक्षर, षट्खण्डागम आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ख' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥
भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, महापुराण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पदम् पुराण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥
भक्तामर का 'तन्' बीजाक्षर, तत्वार्थसूत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥
भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, तर्कशास्त्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥
भक्तामर का 'त्वन्' बीजाक्षर, तत्त्वार्थ वृत्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्वन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥
भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, नवदेवा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, आत्म मीमांसा आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥

भक्तामर का 'कीर्' बीजाक्षर, अध्यात्म कलश आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'कीर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तारा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नयचक्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥

भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जैनगीता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥

भक्तामर का 'लम्' बीजाक्षर, लब्धिसार आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'लम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥

भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, क्षपणासार आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मूकमाटी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥

भक्तामर का 'यत्' बीजाक्षर, युक्त-शास्त्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'यत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, योगसार आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥

भक्तामर का 'शे' बीजाक्षर, श्रीपाल-चरित्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥

भक्तामर का 'षम्' बीजाक्षर, सवार्थसिद्धि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'षम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
अंगारों की चिंगारी जो, उज्ज्वल धधक रही।
प्रलयकाल की तेज पवन से, जो तो भड़क रही॥
एसी वह वन आग सभी को, जो खाने आए।
उसे आपका प्रभु-कीर्तन जल, शीघ्र बुझा जाए॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं संसाराग्नि-तापनिवारक-क्लीं-महाबीजाक्षर-सहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे भगवन्! प्रलय-समय जैसी तेज वायु से धधकती हुई वन की अग्नि, जिसमें कि भयानक फुलिंग (चिंगारी) बहुत ऊँची निकल रहीं हों एसी भयानक हों कि मानो सारे संसार को भस्म कर डालेगी, उसके सामने आ जाने पर हृदय में लिया हुआ आपका नाम रूपी जल तत्काल उसको बुझाकर सान्त कर देता है।

निद्रा वासना
दो बहनें है जिन्हें
लज्जा न छूती।

41.

<u>सर्पभय भंजक-भुजंग भयहारी नाम नागदमनी</u>

(वसन्ततिलका)

रक्तेक्षणं समद – कोकिल – कण्ठ–नीलम्,
क्रोधोद्धतं फणिन – मुत्फण – मापतन्तम्।
आक्रामति क्रम – युगेण निरस्त – शङ्कस्–
त्वन्नाम – नाग दमनी हृदि यस्य पुंसः॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'रक्' बीजाक्षर, रसना जय आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'रक्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तट रक्षक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'क्ष' बीजाक्षर, क्षपणक है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'क्ष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'णम्' बीजाक्षर, नासा जय आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'णम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, शिकार हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मनोविजय आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, देखो तो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'को' बीजाक्षर, कुछ तो है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'को' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'कि' बीजाक्षर, कुसंगत ना आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'कि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लंबा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का 'कं' बीजाक्षर, कंठस्थ करो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का 'ठ' बीजाक्षर, ठुमक रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ठ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का 'नी' बीजाक्षर, निर्जरा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का 'लम्' बीजाक्षर, ललाम है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का 'क्रो' बीजाक्षर, कोमल है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्रो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का 'धोद्' बीजाक्षर, गंधोदक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धोद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, धुला हुआ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, तिर्यक् ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का 'फ' बीजाक्षर, फलस्वरूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'फ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का 'णि' बीजाक्षर, निर्वाणक्षेत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नियमसार आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'मुत्' बीजाक्षर, मुख्य स्तोत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मुत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'फ' बीजाक्षर, फलदायी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'फ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'ण' बीजाक्षर, नवाचरण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ण' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, मंद पवन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पुष्पचारण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'तन्' बीजाक्षर, तंतुचारण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, तल-समतल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'आ' बीजाक्षर, अंतर्धान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'आ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'क्रा' बीजाक्षर, कायबली आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महिमागुण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तारवर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'क्र' बीजाक्षर, कुंथलगिरि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'क्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मथुरा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥

भक्तामर का 'यु' बीजाक्षर, युगवाणी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'यु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥

भक्तामर का 'गे' बीजाक्षर, गोपाचल आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'गे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥

भक्तामर का 'ण' बीजाक्षर, नैनागिरी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ण' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥

भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, नवादा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥

भक्तामर का 'रस्' बीजाक्षर, राजग्रही आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तिजारा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥

भक्तामर का 'शं' बीजाक्षर, शौरीपुर आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥

भक्तामर का 'कस्' बीजाक्षर, कंपिल नगर आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'कस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥

भक्तामर का 'त्वन्' बीजाक्षर, तिलवारा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्वन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥

भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, नेमावर आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मिथिलापुर आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥

भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, नवागढ़ है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥

भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गोम्मटगिरि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दयोदय है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मोजमावाद आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥

भक्तामर का 'नी' बीजाक्षर, नौगामा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥

भक्तामर का 'ह्' बीजाक्षर, हनुमानताल आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ह्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥

भक्तामर का 'दि' बीजाक्षर, दिलवाड़ा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥

भक्तामर का 'यस्' बीजाक्षर, अयोध्या है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'यस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, यशवर्धक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥

भक्तामर का 'पुं' बीजाक्षर, पावापुर आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पुं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥

भक्तामर का 'सः' बीजाक्षर, सिद्धोदय आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
मतवाली कोयल के कंठों, जैसा हो काला।
क्रोधित उठे हुए फन वाला, लाल नयन वाला॥
ऐसा नाग लांघ जाते वे, पग से निर्भय हो।
प्रभु की नाम नाग-दमनी को, रखें हृदय में जो॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र-ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं।
जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं त्वन्नामनागदमनी-शक्तिसंपन्न-क्लीं-महा-बीजाक्षरसहित-श्रीवृषभ-जिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ-हे सातिशय नाम वाले देव! आपके शुभ नाम रूपी नागदमनी (जड़ीबूटी) को भक्ति-श्रद्धा पूर्वक अंतःकरण में धारण करने वाले मनुष्य उस भयंकर उद्यत फुँसकारते हुए जहरीले नाग को भी निर्भय होकर पार कर जाते हैं। जिसके नेत्र धधकते हुए अंगारों की तरह आरक्त वर्ण हो रहे हों और जो काली कोयल के कंठ के समान काला हो तथा जो क्रोधित होकर विशाल फण फैलाए डसने के लिए अतिशीघ्र पवनवेग जैसा झपटा चला आता हो।

उजाले में हैं
उजाला करते हैं
गुरु को वंदूँ।

42.

युद्धभय विध्वंसक-संग्रामभय विनाशक जिन-कीर्तन

(वसन्ततिलका)

वल्गत् - तुरङ्ग - गज - गर्जित - भीमनाद,
माजौ बलं बलवता - मपि - भूपतीनाम्।
उद्यद् - दिवाकर - मयूख - शिखापविद्धम्
त्वत्कीर्तनात्तम - इवाशु भिदामुपैति॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'वल्' बीजाक्षर, वृषभगिरि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'वल्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥
भक्तामर का 'गत्' बीजाक्षर, गुणायतन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥
भक्तामर का 'तु' बीजाक्षर, तुंगीगिरि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥
भक्तामर का 'रं' बीजाक्षर, रेवातट आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गिरनार है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गुणावा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जहाजपुर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥
भक्तामर का 'गर्' बीजाक्षर, गोपाचल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का ‘जि’ बीजाक्षर, जयसिंहपुर आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं ‘जि’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का ‘त’ बीजाक्षर, तारंगा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘त’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का ‘भी’ बीजाक्षर, भोजपुर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘भी’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का ‘म’ बीजाक्षर, मंदारगिरि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘म’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का ‘ना’ बीजाक्षर, नारेली आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ना’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का ‘द’ बीजाक्षर, द्रोणागिरि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘द’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का ‘मा’ बीजाक्षर, मुक्तागिरि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘मा’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का ‘जौ’ बीजाक्षर, जूनागढ़ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘मौ’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का ‘ब’ बीजाक्षर, बनारस है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ब’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का ‘लम्’ बीजाक्षर, लखनादौन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘लम्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का ‘ब’ बीजाक्षर, बड़वानी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘व’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का ‘ल’ बीजाक्षर, मल्हारगढ़ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ल’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, बरासो है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, त्रिलोकतीर्थ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मंगलगिरि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'पि' बीजाक्षर, पपौराजी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'भू' बीजाक्षर, भियादाँत आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पवई जी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'ती' बीजाक्षर, तेजगढ़ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ती' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'नाम्' बीजाक्षर, नागफणी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नाम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'उद्' बीजाक्षर, उदयगिरि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'उद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'यद्' बीजाक्षर, यवतमाल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'दि' बीजाक्षर, देवगढ़ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, वावनगजा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कचनेरजी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रत्नागिरि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मांगीगिरि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥
भक्तामर का 'यू' बीजाक्षर, येत्मातपुर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥
भक्तामर का 'ख' बीजाक्षर, खण्डगिरि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ख' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥
भक्तामर का 'शि' बीजाक्षर, शिरपुर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥
भक्तामर का 'खा' बीजाक्षर, खंदारजी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'खा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पंच तीर्थ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥
भक्तामर का 'विद्' बीजाक्षर, विदिशा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'विद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥
भक्तामर का 'धम्' बीजाक्षर, धर्मपुरी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥
भक्तामर का 'त्वत्' बीजाक्षर, तपोवन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्वत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥
भक्तामर का 'कीर्' बीजाक्षर, कुंडलपुर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कीर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, प्रतापगढ़ आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45॥

भक्तामर का 'नात्' बीजाक्षर, नाथद्वार आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नात्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तालनपुर आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महावीरजी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48॥

भक्तामर का 'इ' बीजाक्षर, ईशुरवारा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'इ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49॥

भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, विजौलिया आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50॥

भक्तामर का 'शु' बीजाक्षर, शालेदा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51॥

भक्तामर का 'भि' बीजाक्षर, भीण्डर है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52॥

भक्तामर का 'दा' बीजाक्षर, दोसा जी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53॥

भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मैंडवास आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54॥

भक्तामर का 'पै' बीजाक्षर, प्रयागराज आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तिगौड़ा जी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
जहाँ हिनहिनाहट घोड़ों की, गज की चिंघाड़ें।
यों रणक्षेत्र जहाँ बलशाली, शत्रु ललकारें॥
वहाँ आपके बस कीर्तन से, कष्ट टलें ऐसे।
उगते सूर्य किरण से जल्दी, अंध नशे जैसे॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि-सवीणं संग्राममध्ये-क्षेमङ्कर-क्लीं-महाबीजाक्षर-सहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे विश्व उद्धारक देव! जहाँ घोड़े भयानक हींस रहे हैं, हाथी चिंघाड़ रहे हैं, घमासान लड़ाई से उड़ती हुई धूल ने सूर्य के प्रकाश को भी छिपा दिया है, एसी भयानक युद्ध भूमि में आपका स्मरण करने से बलवान् राजाओं की सेना ऐसे हट जाती है जैसे सूर्य उदय होने से अन्धकार हट जाता है।

शिव पथ के
कथन वचन भी
शिरोधार्य हो।

43.

सर्व शान्तिदायक-शरणागत की युद्ध में विजय

(वसन्ततिलका)

कुन्ताग्र - भिन्न - गज - शोणित - वारिवाह,
वेगावतार - तरणातुर - योध - भीमे।
युद्धे जयं विजित - दुर्जय - जेय - पक्षास्-
त्वत्पाद-पङ्कज-वनाश्रयिणो लभन्ते॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'कुन्' बीजाक्षर, कुंभोज आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'कुन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, तीर्थक्षेत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥
भक्तामर का 'ग्र' बीजाक्षर, गजपंथा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥
भक्तामर का 'भिन्' बीजाक्षर, भातकुली आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भिन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नागौर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गोलाकोट आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जहाजपुर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥
भक्तामर का 'शो' बीजाक्षर, सोनागिर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'णि' बीजाक्षर, नेमगिरि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'णि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तारवर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥
भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, वहसूमा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥
भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, रानीला आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥
भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, बाबानगर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥
भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हुंबुज है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥
भक्तामर का 'वे' बीजाक्षर, वरनावा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥
भक्तामर का 'गा' बीजाक्षर, गोमटेश आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वांसी जी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, तवंदी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रेहली-पटना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तिरुचनापल्ली आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का ‘र’ बीजाक्षर, रामनगर आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं ‘र’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का ‘णा’ बीजाक्षर, नाकौड़ा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘णा’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का ‘तु’ बीजाक्षर, तुमसर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘तु’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का ‘र’ बीजाक्षर, राजगृही आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘र’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का ‘यो’ बीजाक्षर, उज्जैनी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘यो’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का ‘ध’ बीजाक्षर, धर्मपुरी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ध’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का ‘भी’ बीजाक्षर, भातकुली आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘भी’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का ‘मे’ बीजाक्षर, मथुरा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘मे’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का ‘युद्’ बीजाक्षर, ऊन है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘युद्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का ‘धे’ बीजाक्षर, बँधा जी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘धे’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का ‘ज’ बीजाक्षर, जलमंदिर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ज’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का ‘यम्’ बीजाक्षर, साधुजी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘यम्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, वैणूर जी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'जि' बीजाक्षर, जंबूद्वीप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, त्रिलोकपुर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'दुर्' बीजाक्षर, देवारी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'दुर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जठवाड़ा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, येलोरा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'जे' बीजाक्षर, जिंतूर जी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, गयाजी है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, पुष्पगिरि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'क्षास्' बीजाक्षर, क्षेत्रपाल जी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्षास्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'त्वत्' बीजाक्षर, तिरूमलै आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्वत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'पा' बीजाक्षर, पोदनपुर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दहीगाँव आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45॥
भक्तामर का 'पं' बीजाक्षर, पवरगिरि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46॥
भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कचनेर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, अजयगढ़ है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वैलूर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49॥
भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, रत्नगिरि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50॥
भक्तामर का 'श्र' बीजाक्षर, श्रवणबेलगोल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'श्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51॥
भक्तामर का 'यि' बीजाक्षर, अंतरिक्ष आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52॥
भक्तामर का 'णो' बीजाक्षर, नोहटा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, धर्मस्थल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54॥
भक्तामर का 'भन्' बीजाक्षर, भातकुली आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55॥
भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तेर क्षेत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
योद्धाओं ने भालों द्वारा, फाड़ दिए हाथी।
रक्त वेग में आने-जाने, को आतुर साथी॥
ऐसे क्रूर युद्ध में जो जन, तेरा आश्रय लें।
वे अपराजित दुश्मन पर भी, तुरत विजय पा लें॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर-सवीणं वनगजादि-भयनिवारक-क्लीं-महा-बीजाक्षर-सहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे विश्व विजेता! जिस युद्ध में भाले वर्छियों के द्वारा छिन्न-भिन्न हाथियों के शरीर से निकले हुए रुधिर के प्रवाह को पार करने में बड़े-बड़े शूरवीर योद्धा भी व्याकुल हो जाते हैं, ऐसे भयानक विकराल युद्ध में आपके चरणों की शरण लिए भक्त पुरुष दुर्जन शत्रु को भी जीत लेते हैं।

आाशा जीतना
श्रेष्ठ निराशा से तो
सादगी भली।

44.

सर्वापत्ति विनाशक-नाम स्मरण से निर्विघ्न समुद्र यात्रा

(वसन्ततिलका)

अम्भोनिधौ क्षुभित - भीषण - नक्र - चक्र-
पाठीन - पीठ-भय-दोल्वण - वाडवाग्नौ।
रङ्गत्तरङ्ग - शिखर - स्थित - यान-पात्रास्-
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्-व्रजन्ति॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'अम्' बीजाक्षर, अहिंसक है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'अम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'भो' बीजाक्षर, भाषा बल आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निगोद हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'धौ' बीजाक्षर, धर्माचार्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'धौ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'क्षु' बीजाक्षर, क्षुधा हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'क्षु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'भि' बीजाक्षर, भक्तिभरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तपस्या दे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'भी' बीजाक्षर, भगवती है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'ष' बीजाक्षर, श्रुतधाम दे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥
भक्तामर का 'ण' बीजाक्षर, नियमसार आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ण' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नटखट है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥
भक्तामर का 'क्र' बीजाक्षर, केशलोंच दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥
भक्तामर का 'च' बीजाक्षर, चौदहपूर्वत्व आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'च' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥
भक्तामर का 'क्र' बीजाक्षर, कायोत्सर्ग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'क्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥
भक्तामर का 'पा' बीजाक्षर, प्रत्याख्यान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥
भक्तामर का 'ठी' बीजाक्षर, ठीक करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ठी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, निर्जरा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥
भक्तामर का 'पी' बीजाक्षर, प्रत्येक बुद्धि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥
भक्तामर का 'ठ' बीजाक्षर, कठगोला आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ठ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥
भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भू-शयना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, अष्टापद आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥

भक्तामर का 'दोल्' बीजाक्षर, दीप्ततपः आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दोल्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वचनबली आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥

भक्तामर का 'ण' बीजाक्षर, जीवाणी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ण' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥

भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, ब्रह्मचर्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥

भक्तामर का 'ड' बीजाक्षर, दंश हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ड' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥

भक्तामर का 'वाग' बीजाक्षर, विवाद हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वाग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥

भक्तामर का 'नौ' बीजाक्षर, नोकर्म हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नौ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥

भक्तामर का 'रं' बीजाक्षर, ऋद्धि मंत्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥

भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गरिमा गुण आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तप्त ऋद्धि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥

भक्तामर का 'रं' बीजाक्षर, रंगमंच आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गिरार जी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'शि' बीजाक्षर, शिरपुरजी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'ख' बीजाक्षर, खानियाजी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ख' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रूपक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'स्थि' बीजाक्षर, स्थानांग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्थि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तरकस गुण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'या' बीजाक्षर, यशदायी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, निशिभुक ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं...40 ॥ ॥
भक्तामर का 'पा' बीजाक्षर, प्रतिक्रमण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'त्रास्' बीजाक्षर, स्तुति करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्रास्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'त्रा' बीजाक्षर, शत्रुंजय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'सम्' बीजाक्षर, सिद्धि करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, विवाद हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'हा' बीजाक्षर, हाटकापुरा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'हा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, ईर्यापथ आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भावना है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वन्दना है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'तः' बीजाक्षर, समता है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'स्म' बीजाक्षर, स्मरण है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रमण मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'णाद्' बीजाक्षर, नाद करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'णाद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'व्र' बीजाक्षर, वृण हर्ता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'जन्' बीजाक्षर, जंघाचरण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, ज्ञातृकथा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
जहाँ भयंकर बड़वानल हों, मगरमच्छ भी हों।
बहुत बड़ी पाठीन मीन से, सागर कंपित हों॥
जहाँ फँसे जलयान तरंगित, जिनके हो जाते।
वहीं आपके बस सुमरन से, अभय लक्ष्य पाते॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिय–सवीणं संसाराब्धि–तारक–क्लीं–महाबीजाक्षर–सहित–श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ—हे तारण तरण देव! जहाँ भयानक मगर, बड़े मच्छ, आदि जलचर जीवों ने क्षोभ मचा रक्खा है तथा वड़वानल से भयानक समुद्र में विकराल तूफान के समय आपका स्मरण करने से मनुष्य अपने जलयान को उठती हुई तरंगों के ऊपर से बिना किसी कष्ट के ले जाते हैं।

कच्चा घड़ा है
काम में न लो बिना
अग्नि परीक्षा।

45.

जलोदरादिरोग एवं सर्वापत्ति संहारक-व्याधि विनाशक चरणरज

(वसन्ततिलका)

उद्भूत – भीषण – जलोदर – भार – भुग्नाः,
शोच्यां दशा – मुप गताश्–च्युत–जीविताशाः।
त्वत्पाद – पङ्कज – रजो – मृत – दिग्ध – देहाः,
मर्त्या भवन्ति मकर–ध्वज–तुल्यरूपाः॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'उद्' बीजाक्षर, उद्योग दे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'उद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'भू' बीजाक्षर, भूपाल है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तीरथ दे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'भी' बीजाक्षर, भाग्यवाद आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'भी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'ष' बीजाक्षर, संभिन्न गुण आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ष' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'ण' बीजाक्षर, अणिमा गुण आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ण' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जिनधर्मा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'लो' बीजाक्षर, लोभजयी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'लो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, द्वेष हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रत्नपुरी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का 'भा' बीजाक्षर, भक्तियुग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रत्नमाल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का 'भुग' बीजाक्षर, भुगतान हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भुग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का 'नाः' बीजाक्षर, नमोऽस्तु है आहा।
ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नाः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का 'शोच्' बीजाक्षर, शौच धर्म आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शोच्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का 'याम्' बीजाक्षर, युक्त रहा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'याम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, द्योतक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का 'शा' बीजाक्षर, शुभ लक्षण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मुक्तहस्त आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥

भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, प्राप्ति धर्म आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गौरव है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥

भक्तामर का 'ताश्' बीजाक्षर, तारल ना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ताश्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥

भक्तामर का 'च्यु' बीजाक्षर, अच्युत है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'च्यु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तारता है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥

भक्तामर का 'जी' बीजाक्षर, जिनदर्शन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'जी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥

भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, बड़-त्यागी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥

भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, ताजा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥

भक्तामर का 'शाः' बीजाक्षर, शान्तिगिरि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'शाः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥

भक्तामर का 'त्वत्' बीजाक्षर, तीसचौबीसी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्वत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥

भक्तामर का 'पा' बीजाक्षर, पावागिरि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, अदन्तधावन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥

भक्तामर का 'पं' बीजाक्षर, पंपापुर आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32 ॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, कारकल है आहा।

ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥

भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जिनचैत्य है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, राहत दे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥

भक्तामर का 'जो' बीजाक्षर, जय-जयकार आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'जो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥

भक्तामर का 'मृ' बीजाक्षर, मंद पवन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मृ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तपोवन है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥

भक्तामर का 'दिग' बीजाक्षर, द्रव्यानुयोग आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दिग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥

भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, धर्मनिकस आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥

भक्तामर का 'दे' बीजाक्षर, देव तुल्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'दे' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥

भक्तामर का 'हाः' बीजाक्षर, हुमचा है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'हाः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥

भक्तामर का 'मर्त्' बीजाक्षर, मर न सके आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मर्त्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥

भक्तामर का 'या' बीजाक्षर, यश देता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, भावपूर्ण आहा।

ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥

भक्तामर का 'वन्' बीजाक्षर, वन्दित है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥

भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तीर्थ यात्रा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महलका है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥

भक्तामर का 'क' बीजाक्षर, काकंदी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'क' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रक्षामंत्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥

भक्तामर का 'ध्व' बीजाक्षर, धवला है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ध्व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥

भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जरा हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥

भक्तामर का 'तुल्' बीजाक्षर, ताम हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'तुल्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, युक्ति मंत्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥

भक्तामर का 'रू' बीजाक्षर, रुग्न हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रू' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥

भक्तामर का 'पाः' बीजाक्षर, पाहुड़ है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पाः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
हुआ भयंकर रोग जलोदर, जिससे कमर झुकी।
करुण दशा से जीवन आशा, जिनकी बिखर चुकी॥
ऐसे मानव नाथ! आपकी, चरणामृत पाके।
कामदेव सम रोग मुक्त हों, सुन्दर बन जाते॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं।
जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण-महाण-साणं दाह-ताप-जलोदराष्ट-दशकुष्ट-सन्निपातादि-रोगहारक-क्लीं-महाबीजाक्षर-सहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ—हे अजरामर प्रभो! भीषण जलोदर आदि रोगों के कारण जो खेद-

रोगी की नहीं
रोग की चिकित्सा हो
अन्यथा भोगो।

46.

<u>बन्धन विमोचक-नाम जाप से बन्धन मुक्ति</u>

(वसन्ततिलका)

आपाद - कण्ठमुरु - शृङ्खल - वेष्टिताङ्गा,
गाढं-बृहन्-निगड-कोटि निघृष्ट - जङ्घाः।
त्वन् - नाम - मंत्र - मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'आ' बीजाक्षर, आदिगिरि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'आ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'पा' बीजाक्षर, पुष्पवृष्टि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, दूरस्पर्श आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'कं' बीजाक्षर, कमलासन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'कं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'ठ' बीजाक्षर, अष्टापद आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ठ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मुक्तागिरि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'रु' बीजाक्षर, रिक्त नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'श्रं' बीजाक्षर, श्रवणवेल आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'श्रं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'ख' बीजाक्षर, खंदारगिरि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'ख' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9 ॥
भक्तामर का 'ल' बीजाक्षर, लायक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ल' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10 ॥
भक्तामर का 'वेष्' बीजाक्षर, वचनगुप्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वेष्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11 ॥
भक्तामर का 'टि' बीजाक्षर, टिकेतनगर आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'टि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12 ॥
भक्तामर का 'तां' बीजाक्षर, तुंगीगिरि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तां' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13 ॥
भक्तामर का 'गा' बीजाक्षर, गरल नहीं आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14 ॥
भक्तामर का 'गा' बीजाक्षर, गणधर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'गा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15 ॥
भक्तामर का 'ढम्' बीजाक्षर, छहढाला आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ढम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16 ॥
भक्तामर का 'बृ' बीजाक्षर, वचनबली आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बृ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17 ॥
भक्तामर का 'हन्' बीजाक्षर, हवन मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'हन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18 ॥
भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निर्वाणी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19 ॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गुणव्य है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20 ॥

भक्तामर का ‘ड’ बीजाक्षर, डाह हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं ‘ड’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥

भक्तामर का ‘को’ बीजाक्षर, कोनीजी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘को’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥

भक्तामर का ‘टि’ बीजाक्षर, टीस हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘टि’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥

भक्तामर का ‘नि’ बीजाक्षर, नियुक्ति दे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘नि’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥

भक्तामर का ‘घृष्’ बीजाक्षर, घृणा हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘घृष्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥

भक्तामर का ‘ट’ बीजाक्षर, तीर्थराज आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘ट’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥

भक्तामर का ‘जं’ बीजाक्षर, जय मथुरा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘जं’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥

भक्तामर का ‘घाः’ बीजाक्षर, उद्घोष है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘घाः’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥

भक्तामर का ‘त्वन्’ बीजाक्षर, तथात्वम् आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘त्वन्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥

भक्तामर का ‘ना’ बीजाक्षर, निरावरण आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘ना’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥

भक्तामर का ‘म’ बीजाक्षर, मार्दव है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘म’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥

भक्तामर का ‘मन्’ बीजाक्षर, मनमन्दिर आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ‘मन्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'त्र' बीजाक्षर, तीर्थग्रन्थ आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मणिमंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥
भक्तामर का 'नि' बीजाक्षर, निसर्गज आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥
भक्तामर का 'शम्' बीजाक्षर, सम्पूर्ण है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, महाभक्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥
भक्तामर का 'नु' बीजाक्षर, नद्यावर्त आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥
भक्तामर का 'जाः' बीजाक्षर, जातक है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'जाः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥
भक्तामर का 'स्म' बीजाक्षर, स्मृति है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥
भक्तामर का 'रन्' बीजाक्षर, रेखाचित्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'रन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥
भक्तामर का 'तः' बीजाक्षर, तपस्थली आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥
भक्तामर का 'सद्' बीजाक्षर, सदलगा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'सद्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥
भक्तामर का 'यः' बीजाक्षर, युद्धजयी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का ‘स्व’ बीजाक्षर, स्वजन है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं ‘स्व’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का ‘यम्’ बीजाक्षर, युगविजयी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘यम्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का ‘वि’ बीजाक्षर, विच्छेद हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘वि’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का ‘ग’ बीजाक्षर, गगन गमन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ग’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का ‘त’ बीजाक्षर, त्रासन ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘त’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का ‘बन्’ बीजाक्षर, वशीकर है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘बन्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का ‘ध’ बीजाक्षर, धवलसूत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ध’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का ‘भ’ बीजाक्षर, भृष्टता हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘भ’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का ‘या’ बीजाक्षर, याञ्चा है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘या’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का ‘भ’ बीजाक्षर, भावभरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘भ’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का ‘वन्’ बीजाक्षर, वन्दित है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘वन्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का ‘ति’ बीजाक्षर, तथ्यधर्म आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘ति’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
बड़ी-बड़ी सांकल के द्वारा, बाँधा बहुत कड़ा।
पैरों से सम्पूर्ण कंठ तक, तन जिनका जकड़ा॥
महाबेड़ियों से घिर करके, जिनके पाँव छिले।
तेरे नाम मंत्र से उनके, भय के बन्ध टले॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र-ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं।
जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं नानाविध-कठिनबन्धन-दूरकारक-क्लीं-महाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभ-जिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ-हे बन्ध-विमोचन! बन्दीगृह (जेल) में जिनको पैर से कंठ तक भारी जंजीरों से जकड़ दिया है, बेड़ियों की रगड़ से जिनकी जाँघें छिल गई हैं, ऐसे मनुष्य आपके नाम को स्मरण करते हुए तुरन्त स्वयं बन्धन और भय से छूट जाते हैं।

बिना प्रमाद
श्वसन क्रिया सम
पथ पे चलूँ।

47.

<u>अस्त्र शस्त्रादि शक्ति निरोधक-सम्पूर्णभय निवारक जिन स्तवन</u>

(वसन्ततिलका)

मत्त-द्विपेन्द्र - मृग - राज - दवानलाहि-
संग्राम - वारिधि - महो - दर - बन्ध -नोत्थम्।
तस्याशु नाश - मुप - याति भयं-भियेव,
यस्तावकं स्तव-मिमं मतिमान-धीते॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'मत्' बीजाक्षर, महावीर आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'मत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, तिरस है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'द्वि' बीजाक्षर, द्वादशांग आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'द्वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'पेन्' बीजाक्षर, प्रज्ञा मुनि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'पेन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'द्र' बीजाक्षर, दीप्तत्रऋद्धि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'द्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'मृ' बीजाक्षर, मृत्युंजयी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'मृ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, ग्रीष्म हरे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'रा' बीजाक्षर, रक्षा गुण आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जबूद्वीप आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥

भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, द्रव्यभाव आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥

भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, बानपुर है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नमिरूप आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥

भक्तामर का 'ला' बीजाक्षर, कलाक्षेत्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ला' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥

भक्तामर का 'हि' बीजाक्षर, हिमगिरि है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'हि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥

भक्तामर का 'सं' बीजाक्षर, शीतल है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'सं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥

भक्तामर का 'ग्रा' बीजाक्षर, गुणधर है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'ग्रा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मुनिसुव्रत आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥

भक्तामर का 'वा' बीजाक्षर, बँधा जी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'वा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥

भक्तामर का 'रि' बीजाक्षर, रिक्त नहीं आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'रि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥

भक्तामर का 'धि' बीजाक्षर, अध्यात्म कलश आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'धि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मतिज्ञानी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'हो' बीजाक्षर, होम मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'हो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'द' बीजाक्षर, द्रव्य संग्रह आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'द' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, रक्षा कवच आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'बन्' बीजाक्षर, बीज मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'बन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'ध' बीजाक्षर, अंतर्धान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ध' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'नोत्' बीजाक्षर, नवाचरण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नोत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'थम्' बीजाक्षर, थम न सके आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'थम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'तस्' बीजाक्षर, तर्क हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'या' बीजाक्षर, यम जीता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'शु' बीजाक्षर, सुकुमाल है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'ना' बीजाक्षर, निर्वाण दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ना' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'श' बीजाक्षर, सर्वज्ञ जी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा।।
ॐ ह्रीं अर्हं 'श' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33 ॥
भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मुनि रूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34 ॥
भक्तामर का 'प' बीजाक्षर, परीक्षामुख आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'प' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35 ॥
भक्तामर का 'या' बीजाक्षर, यादृक्षा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'या' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तथारूप आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37 ॥
भक्तामर का 'भ' बीजाक्षर, तीर्थभक्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38 ॥
भक्तामर का 'यम्' बीजाक्षर, यशमंगल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39 ॥
भक्तामर का 'भि' बीजाक्षर, भक्तिधार आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'भि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40 ॥
भक्तामर का 'ये' बीजाक्षर, एकस्थिति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ये' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वचनसिद्धि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42 ॥
भक्तामर का 'यस्' बीजाक्षर, यश दायक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'यस्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43 ॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, तृषित ना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44 ॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वीजचारण आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'कम्' बीजाक्षर, कौशांबी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'स्त' बीजाक्षर, स्तुत है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, वचन मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'मि' बीजाक्षर, मंगलधाम आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'मम्' बीजाक्षर, मकार हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, प्रामाणिक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, त्रयकालिक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, महाशरण आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, निर्जरा करे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'धी' बीजाक्षर, धीरज दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धी' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तत्त्व कथन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
जो ज्ञानी जन इस संस्तव को, भक्ति सहित पढ़ता।
उसे शेर पागल हाथी का, कभी न भय रहता॥
युद्ध जलोदर सागर बन्धन, दावानल का भय।
बाल न बाँका उनका करले, उनकी होवे जय॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसिद्धाय-दणाणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसिद्धाय-दणाणं बहुविधविघ्न-विनाशक-क्लीं-महाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे संकट-निवारक प्रभो! जो मनुष्य आपके इस स्तवन को पढ़ता है उसके मदोन्मत्त हाथी, सिंह, दावानल, सर्प, युद्ध, समुद्र, जलोदर आदि रोग तथा बन्दीगृह हथकड़ी बेड़ी आदि के बन्धन का भय स्वयं तत्काल डर कर नष्ट हो जाता है।

शब्द पंगु हैं
जवाब न देना भी
लाजवाब है।

48.

सर्व-सिद्धिदायक-स्तुति का फल

(वसन्ततिलका)

स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धाम्,
भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ - गता-मजस्रम्,
तं मानतुङ्ग-मवशा-समुपैति लक्ष्मीः॥

अर्घ्यावली (विष्णु)

भक्तामर का 'स्तो' बीजाक्षर, स्तवन है आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं 'स्तो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥1॥

भक्तामर का 'त्र' बीजाक्षर, तप्तऋद्धि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥2॥

भक्तामर का 'स्र' बीजाक्षर, सृष्टि है आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'स्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥3॥

भक्तामर का 'जं' बीजाक्षर, जिनभक्ति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'जं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥4॥

भक्तामर का 'त' बीजाक्षर, त्याग धर्म आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'त' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥5॥

भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विजयरस आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥6॥

भक्तामर का 'जि' बीजाक्षर, जितकर्मा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'जि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥7॥

भक्तामर का 'नेन्' बीजाक्षर, नंदीश्वर आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं 'नेन्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥8॥

भक्तामर का ‘द्र’ बीजाक्षर, द्रव्यकर्म हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं ‘द्र’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥9॥
भक्तामर का ‘गु’ बीजाक्षर, गंधोदक वृष्टि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘गु’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥10॥
भक्तामर का ‘णैर्’ बीजाक्षर, निःसहि है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘णैर्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥11॥
भक्तामर का ‘नि’ बीजाक्षर, निर्विषय आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘नि’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥12॥
भक्तामर का ‘बद्’ बीजाक्षर, बिन छाया आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘बद्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥13॥
भक्तामर का ‘धाम्’ बीजाक्षर, धर्मधाम आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘धाम्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥14॥
भक्तामर का ‘भक्’ बीजाक्षर, भक्तिधाम आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘भक्’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥15॥
भक्तामर का ‘त्या’ बीजाक्षर, त्यागधाम आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘त्या’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥16॥
भक्तामर का ‘म’ बीजाक्षर, मधुस्रावी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘म’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥17॥
भक्तामर का ‘या’ बीजाक्षर, आयुष्मान आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘या’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥18॥
भक्तामर का ‘रु’ बीजाक्षर, रुक्ष हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘रु’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥19॥
भक्तामर का ‘चि’ बीजाक्षर, चौर्य हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ‘चि’ बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥20॥

भक्तामर का 'र' बीजाक्षर, राग हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥21॥
भक्तामर का 'वर्' बीजाक्षर, वरदानी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वर्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥22॥
भक्तामर का 'ण' बीजाक्षर, करणानुयोग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ण' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥23॥
भक्तामर का 'वि' बीजाक्षर, वैशाली आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'वि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥24॥
भक्तामर का 'चि' बीजाक्षर, चरणानुयोग आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'चि' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥25॥
भक्तामर का 'त्र' बीजाक्षर, तिरस्कार हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'त्र' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥26॥
भक्तामर का 'पुष्' बीजाक्षर, प्रकीर्णक आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पुष्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥27॥
भक्तामर का 'पाम्' बीजाक्षर, पुष्पवृष्टि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पाम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥28॥
भक्तामर का 'धत्' बीजाक्षर, दिव्यध्वनि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'धत्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥29॥
भक्तामर का 'ते' बीजाक्षर, तल-समतल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ते' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥30॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जानपना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥31॥
भक्तामर का 'नो' बीजाक्षर, नोकर्म हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'नो' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥32॥

भक्तामर का 'य' बीजाक्षर, अयश हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'य' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥33॥
भक्तामर का 'इ' बीजाक्षर, ईर्ष्या हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'इ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥34॥
भक्तामर का 'ह' बीजाक्षर, हमें इष्ट आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ह' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥35॥
भक्तामर का 'कं' बीजाक्षर, कमल रचना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'कं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥36॥
भक्तामर का 'ठ' बीजाक्षर, कठूमर त्यागी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ठ' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥37॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गुप्त मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥38॥
भक्तामर का 'ता' बीजाक्षर, ताम्रपत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ता' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥39॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मैत्रीभाव आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥40॥
भक्तामर का 'ज' बीजाक्षर, जश गालो आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ज' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥41॥
भक्तामर का 'स्त्रं' बीजाक्षर, श्रमण मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स्त्रं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥42॥
भक्तामर का 'तम्' बीजाक्षर, तू तू हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तम्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥43॥
भक्तामर का 'मा' बीजाक्षर, मैं मैं हरे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥44॥

भक्तामर का 'न' बीजाक्षर, नू नुकुर हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वृषभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं अर्हं 'न' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥45 ॥
भक्तामर का 'तुं' बीजाक्षर, तुंग भक्ति आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'तुं' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥46 ॥
भक्तामर का 'ग' बीजाक्षर, गीतांजलि आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ग' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥47 ॥
भक्तामर का 'म' बीजाक्षर, मुक्ति दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'म' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥48 ॥
भक्तामर का 'व' बीजाक्षर, विष हर्त्ता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'व' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥49 ॥
भक्तामर का 'शा' बीजाक्षर, सकल मंत्र आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'शा' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥50 ॥
भक्तामर का 'स' बीजाक्षर, साक्ष देता आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'स' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥51 ॥
भक्तामर का 'मु' बीजाक्षर, मोक्ष गमन आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मु' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥52 ॥
भक्तामर का 'पै' बीजाक्षर, पैगाम है आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'पै' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥53 ॥
भक्तामर का 'ति' बीजाक्षर, तिरवाये आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'ति' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥54 ॥
भक्तामर का 'लक्ष्' बीजाक्षर, लक्ष्मी दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'लक्ष्' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥55 ॥
भक्तामर का 'मीः' बीजाक्षर, महिमा दे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं 'मीः' बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं... ॥56 ॥

(पूर्णार्घ्य)

आदि प्रभु के श्रीचरणों में, पहले शीश धरूँ।
फिर भक्तामर के काव्यों का, मंगल गीत करूँ॥
मैंने यह जो भक्ति भाव से, गुण तेरे चुनके।
बहुरंगी पुष्पों की माला, गूँथी है बुनके॥
इस संस्तव माला को जो नित, अपने कंठ धरे।
हे जिनवर! वह 'मानतुंग' सम, लक्ष्मी अवश वरे॥
आदि प्रभु को करके नमोऽस्तु, भक्ति रचाऊँ मैं।
मानतुंग मुनिवर के जैसी, मुक्ति पाऊँ मैं॥

ऋद्धि मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोये सव्वसाहूणं।
जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोये सव्वसाहूणं सकलकार्य–साधनसमर्थ–क्लीं–महा–बीजाक्षर–सहित–श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

अर्थ–हे जिनेन्द्र! विविध वर्णमय आपके गुणों से गूँथी हुई जो मैंने भक्ति से यह स्तुति रूपी माला बनाई है, जो पुरुष इसको अपने गले में सतत धारण करता है, उस उच्च ज्ञानी/सम्मानी व्यक्ति को मुक्ति लक्ष्मी शीघ्र प्राप्त होती है।

===

गुरु कृपा से
बाँसुरी बना मैं तो
ठेठ बाँस था।

ऋद्धि-मंत्रों के अर्घ्य

(यदि अनुकूलता हो तो ऋद्धि मंत्र के अर्घ्य भी चढ़ा सकते हैं)

1. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
2. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
3. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
4. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
5. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
6. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदानुसारीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
9. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सभिण्णसोदाराणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
10. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
12. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
13. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
14. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
15. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
16. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
17. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहानिमित्तकुसलाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
18. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
19. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
20. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
21. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
23. ॐ ह्रीं अर्हं णमो असीविसाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।

26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
28. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरक्कमाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभचारीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
33. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
36. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
37. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
38. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
40. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
43. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
44. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
45. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
46. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
47. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसिद्धायदणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
48. ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोये सव्वसाहूणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ–जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

मानतुंग सी बेड़ियाँ, आदिनाथ से कर्म।
भक्त तोड़ने को धरें, जयमाला का धर्म॥

(ज्ञानोदय)

हमको पंचमकाल मिला तो, चौबीसी तो मिल न सकी।
लेकिन उनके बिम्ब पूजकर, भक्ति भावना जाग उठी॥
उनमें प्रथम वृषभ तीर्थंकर, जन्म अयोध्या में धारे।
तत्त्वज्ञान दे अष्टापद से, मोक्ष पधारे प्रभु प्यारे॥1॥
अतः भरत भारत में शासन, आदिवीर का चलता है।
तत्त्व विरोधी इंसानों को, सही धर्म यह खलता है॥
तभी धर्म धर्मात्मा-जन को, उपसर्गों के शूल मिलें।
पर उसका हो बाल न बाँका, जिसे आदि की धूल मिले॥2॥
एसी एक घटी दुर्घटना, जो श्रद्धा मजबूत करे।
जिनशासन का मर्म समझने, हर मत को मजबूर करे॥
राजा भोज बड़ा ज्ञानी था, धर्मालू श्रद्धालू था।
किन्तु एक मंत्री था उसका, जो मानी ईर्ष्यालू था॥3॥
जिनशासन का कट्टर दुश्मन, सबको जिसने भड़काया।
तभी धनंजय कवि की रचना, चुरा 'नाममाला' लाया॥
जिसके कारण कालीदास के, विचलन में न हुई देरी।
रचनाओं को जैन चुराते, नाममाला तो है मेरी॥4॥
बुला धनंजय को ये पूछा, ये रचना क्या तेरी है।
कालीदास कहते यह मेरी, कहें धनंजय मेरी है॥
यह रचना सचमुच किसकी है, यह निर्णय तो मुश्किल था।
जिसे याद हो उसकी है यह, राजा का ऐसा हल था॥5॥

कालीदास तो सुना न पाए, कही धनंजय ने पूरी।
सब समझे पर कुछ न बोले, थी राजा की मजबूरी॥
करके याद सुनाने से क्या, उनकी हो जाती रचना।
कालीदास भड़ककर बोले, यह तो मेरी है रचना॥6॥
ऐसे ही जैनों के मुनि भी, रचना खूब चुराते हैं।
अगर परीक्षा करनी तो मुनि, मानतुंग को लाते हैं॥
जिनको लाने पहुँचे तो वो, आने को तैयार न थे।
जिनशासन की शान घटाने, समझौते स्वीकार न थे॥7॥
तब राजा ने क्रोधित होकर, जंजीरों से बँधवाकर।
अड़तालिस दरवाजे वाले, कारागृह में डलवाकर॥
बड़े-बड़े ताले डलवाये, पहरा खूब लगाया था।
मानतुंग मुनिवर को सबने, झुकने को धमकाया था॥8॥
झुके न टूटे न घबराए, ना ही आतम ध्यान किया।
लेकिन आदिनाथ स्वामी का, भक्तामर ये गान किया॥
ज्यों पद बने खुले त्यों ताले, सब जंजीरें टूट चुकीं।
देख जेल के बाहर मुनि को, प्रजा शर्म से झुकी-झुकी॥9॥
क्रमशः तीन बार मुनिवर को, कारागृह में डलवाये।
लेकिन सुबह देखकर बाहर, राज-प्रजा कवि घबराए॥
इस घटना की खबर हुई तो, लगी गूँजने जय-जयकार।
थे शर्मिंदा राज-प्रजा कवि, खूब हुई फिर हाहाकार॥10॥
क्षमा याचना कर राजा ने, खुद को दोषी ठहराया।
क्षमा दान कर सबको मुनि ने, जैन धर्म को चमकाया॥
भक्तामर स्तोत्र की रचना, दुनियाँ में विख्यात हुई।
आदिनाथ से मानतुंग की, जग में नई प्रभात हुई॥11॥

चाहे ब्राह्मी सुन्दरी हो या, सोमा सीता रानी हो।
चाहे भरत बाहुबलि हों या, वादिराज सम ज्ञानी हो॥
जो भी तुम्हें पुकारे उसकी, हरो सभी दुख जंजीरें।
आदिप्रभु सम वो प्रकटा ले, निज में जिन की तस्वीरें॥12॥
अतः बुजुर्गों ने बनवाए, आदिप्रभु के मंदिर हैं।
तभी अयोध्या अष्टापद से, भक्तों के मन मंदिर हैं॥
नजर-नजर में डगर-डगर में, आदिप्रभु के अतिशय हों।
भले जमाना दुश्मन हो पर, जिन भक्तों की ही जय हो॥13॥
पूरव पश्चिम उत्तर दक्षिण, विजय पताका उड़ती है।
कुण्डलपुर के बाबा जैसी, सबमें भक्ति उमड़ती है॥
यदि मुनि 'सुव्रत' मानतुंग सम, भक्तामर का पाठ करें।
मिटें रोग सब हटें उपद्रव, जिनशासन के ठाठ बढ़ें॥14॥

(सोरठा)

भुक्ति मुक्ति की राह, आदिप्रभु की भक्ति है।
सो नमोऽस्तु की चाह, रखते जब तक शक्ति है॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वकर्मविनाशनाय आगतविघ्नभयनिवारणाय श्रीवृषभ-जिनाय समुच्चय-जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

वृषभनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, वृषभनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंच-परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपंचाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पंचमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर-

पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-हाटकापुरा-खंदारजी-चौबीसी-चंदेरी आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि- नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो-जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(जल धारा...)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(चंदन धारा...)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।

मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

===

**आस्था व बोध
संयम की कृपा से
मंजिल पाते।**

भक्तामर महिमा

श्री भक्तामर स्तोत्र, जलाकर ज्योत, पाठ कर ध्याएँ।
भक्तामर महिमा गाएँ॥
कवि उज्जैनी के हार गए, कविराज धनंजय जीत गए।
तब हुए विरोधी जिनशासन झुठलाएँ, शास्त्रों को गलत बताएँ॥1॥
मुनि मानतुंग को झुठलाए, नृप राज्यसभा में बुलवाये।
मुनिराज वहाँ क्यों धर्म नशाने जाएँ, मुनि मूलाचार निभाएँ॥2॥
तब राजा गुस्से में आके, हथकड़ी बेड़ियाँ बँधवाके।
उपसर्ग किया पर मुनिवर ना घबराए, धर समता प्रभु को ध्याए॥3॥
मुनि को बंदीगृह में डाले, लगवाये अड़तालीस ताले।
मुनि भक्तामर रच आदिनाथ को ध्याए, भक्ति की महिमा गाए॥4॥
ज्यों एक छन्द रचता जाता, त्यों इक ताला खुलता जाता।
सम्पूर्ण रचा तो मुनिवर मुक्ति पाए, यह देख सभी घबराए॥5॥
राजा फिर लगवाये ताले, फिर से बंदीगृह में डाले।
यों तीन बार भी बन्धन ना बँध पाए, तब राज-प्रजा पछताये॥6॥
राजा अतिशय लख चकित हुआ, कर क्षमा याचना लजित हुआ।
कर मुनि को नमोऽस्तु निज अपराध नशाए, सब जिनशासन अपनाये॥7॥
तब भक्तामर विख्यात हुआ, मुनि मानतुंग का नाम हुआ।
हर ऋद्धि मंत्र भी अतिशय खूब दिखाए, हम पाठ रचाने आए॥8॥
जो भक्तामर का पाठ करें, जप अनुष्ठान या ध्यान करें।
उनके संकट भय रोग शोक नश जाएँ, मनवांछित फल को पाएँ॥9॥
यह क्रियाकांड है ना केवल, सम्यक्त्व साधना है मंगल।
जो रत्नत्रय दे शुद्धातम प्रकटाए, 'सुव्रत' को मोक्ष घुमाये॥10॥
श्री भक्तामर स्तोत्र, जलाकर ज्योत, पाठ कर ध्याएँ।
भक्तामर महिमा गाएँ॥

===

भक्तामर महिमा -२

(दोहा)

अदिप्रभु को नमोऽस्तु कर, भक्तामर गुण गाएँ।
मांगतुंग आचार्य को, श्रद्धा सुमन चढ़ाएँ॥

(सखी)

श्री मांगतुंग की कृति को, हम मिलकर शीश झुकाएँ।
कर आदिप्रभु को नमोऽस्तु, भक्तामर महिमा गाएँ॥
ईर्ष्यालु मिथ्याज्ञानी, जो उज्जैनी के मानी।
जब भक्त धनंजय कवि से, ज्यों हारे थे अभिमानी॥
सो हुए विरोधी मुनि के, जिनशासन को झुठलाए।
कर आदिप्रभु को नमोऽस्तु, भक्तामर महिमा गाएँ॥1॥
सो भक्त धनंजय कवि पर, राजा की बरसी ज्वाला।
फिर मांगतुंग मुनिवर को, झट काराग्रह में डाला॥
अड़तालीस तालों में भी, क्या जैन संत रुक पाएँ।
कर आदिप्रभु को नमोऽस्तु, भक्तामर महिमा गाएँ॥2॥
फिर बेढ़ी हथकड़ियों से, नख से शिख तक बंधबाये।
पर मुनिवर समता धरके, श्री आदिनाथ को ध्याए॥
कर भक्तामर की रचना, मुनिवर अतिशय दिखलाए।
कर आदिप्रभु को नमोऽस्तु, भक्तामर महिमा गाएँ॥3॥
ज्यों एक छंद रच जाता, त्यों एक ताला खुल जाता।
मुनि मुक्त हुए थे वैसे, ज्यों पूरी हुई यह गाथा॥
ज्यों इसके अतिशय गूँजे, सो राज प्रजा घवराये।
कर आदिप्रभु को नमोऽस्तु, भक्तामर महिमा गाएँ॥4॥

जब तीन बार यह देखा, लज्जित राजा सिर टेका।
फिर क्षमा याचना करके, मिथ्या आडम्बर फेंका॥
ज्यों मुनि को किए नमोऽस्तु, सब जयजयकार लगाए।
कर आदिप्रभु को नमोऽस्तु, भक्तामर महिमा गाएँ॥5॥
तब से भक्तामर महिमा, जग में विख्यात हुई है।
इसके आश्रय से सबकी, एक नयी प्रभात हुई है॥
जो इस पर श्रद्धा लाए, वे मन वांछित फल पाए।
कर आदिप्रभु को नमोऽस्तु, भक्तामर महिमा गाएँ॥6॥
हम भक्तामर के द्वारा, जिनशासन को चमकाये।
भय, रोग, कष्ट, दुख हरके, शुद्धातम को प्रगटाएँ॥
मुनि मांनतुंग सम 'सुव्रत', निज द्रव्य शक्ति पा जाएँ।
कर आदिप्रभु को नमोऽस्तु, भक्तामर महिमा गाएँ॥7॥

(दोहा)

भक्तामर स्त्रोत का, पाठ करें दिन रात।
जैन धर्म महकाय के, बनें आत्म सम्राट॥

(प्रशस्ति)

नगर चन्देरी में रहा, हाटकापुरा मुकाम।
जहाँ चन्द्रप्रभु चरण में, भक्तामर गुणगान॥
ग्यारह फुटी उत्तुंग हैं, महावीर भगवान।
हुए पंचकल्याण जब, तब ये लिखा विधान॥
अक्षय तीजा सात पाँच, दो हजार उन्नीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥इति शुभम्॥

===

आरती

(लय : विद्यासागर की गुणआगर की...)

आदीश्वर की, जगदीश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥
नाभिराय श्री मरुदेवी के, गर्भ विषें प्रभु आए,
नगर अयोध्या जन्म लिया था, सब जन मंगल गाए।
प्रभु जी सब जन मंगल गाए॥
पुरुदेवा की, जिनदेवा की, हो बार-बार गुण गायके,
हम आज उतारें आरतिया॥1॥
आदिकाल में बने स्वयंभू, धर्मध्वजा फहराए,
षट्कर्मों की शिक्षा देकर, मोक्षमार्ग बतलाए।
प्रभु जी मोक्षमार्ग बतलाए॥
ब्रह्मेश्वर की, सर्वेश्वर की, हो जग-मग ज्योति जगाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥2॥
सारे जग से पूजित प्रभुवर, हम दर्शन को आए,
मन-वच-तन से आरती करके, झूम-झूम सिर नाये।
प्रभु जी झूम-झूम सिर नाये॥
जिन स्वामी की, शिवधामी की, हो 'सुव्रत' दर्शन पाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥3॥
आदीश्वर की, जगदीश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय के।
हम आज उतारें आरतिया॥

===